सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

वार्षिक ६) रु०
छः माही ३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य =)
Annas Two per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

एक प्रार्थना
वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' के प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—१६ अक्टूबर, १६३० | संख्या ३, पूर्ण संख्या ३

लाहौर-षड्यन्त्र केस के अभिनेता

श्री० शिव वर्मा
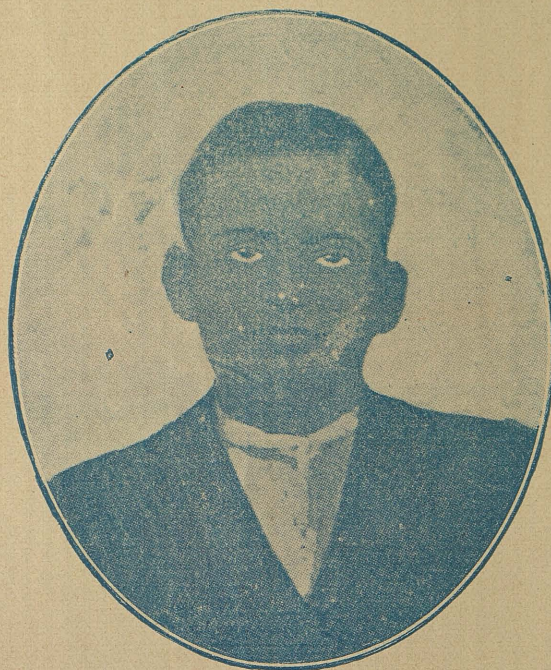
स्वर्गीय यतीन्द्रनाथ दास

श्री० किशोरी लाल

श्री० विजयकुमार सिन्हा

श्री० अजयकुमार घोष

श्री० सुखदेव

सरदार भगतसिंह

श्री० राजगुरु

(शेष चित्र अगले अङ्क में देखिए)

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक महापुरुष ईसा का उज्ज्वल चरित्र स्वर्ग की विभूति है, विश्व का गौरव है और मानव-जाति का पथ-प्रदर्शक है। इस पुस्तक में उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ तथा उनके अमृतमय उपदेशों का वर्णन बहुत ही सुन्दरता-पूर्वक किया गया है। पुस्तक का एक-एक शब्द विश्व-प्रेम, स्वार्थ-त्याग एवं बलिदान के भावों से ओत-प्रोत है। किस प्रकार महात्मा ईसा ने कठिन से कठिन आपत्तियों का मुक़ाबला धैर्य के साथ किया, नाना प्रकार की भयङ्कर यातनाओं को हँसते हुए झेला एवं बलिदान के समय भी अपने शत्रुओं के प्रति उन्होंने कैसा प्रेम प्रदर्शित किया—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में दिव्य-ज्योति उत्पन्न हो जायगी।
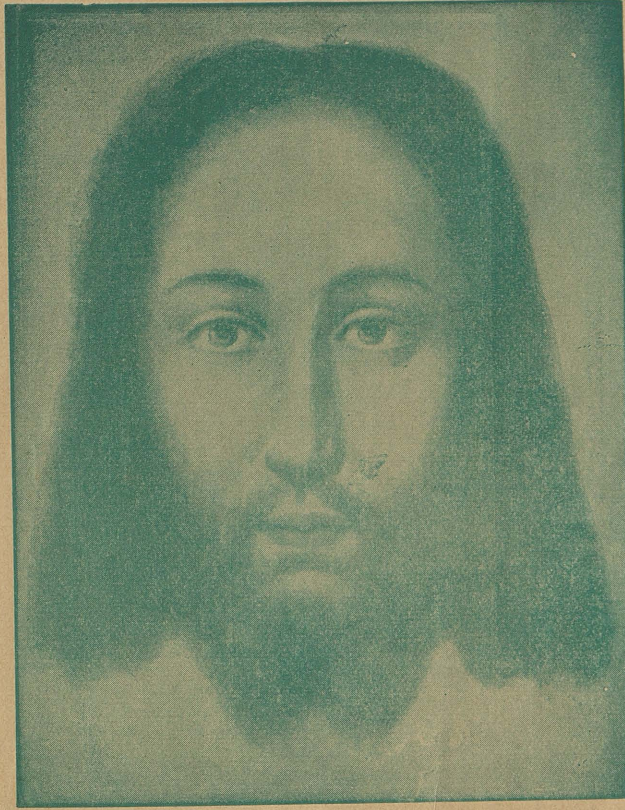
दुर्भाग्यवश आज महापुरुष ईसा का चरित्र साम्प्रदायिकता के सङ्कीर्ण वायु-मण्डल में सीमित हो रहा है। वह जिस रूप में साधारण जनता के सामने चित्रित किया जाता है, वह अलौकिक तो है, परन्तु आकर्षक नहीं। प्रस्तुत पुस्तक में सुयोग्य लेखक ने इन भावनाओं से भी दूर, ईसा के विशुद्ध चरित्र को चित्रण करने का प्रयास किया है।

पुस्तक की भाषा अत्यन्त मधुर, मुहावरेदार एवं ओजस्विनी है। भाव अत्यन्त उच्च कोटि के, सुन्दर और मँजे हुए; शैली अभिनव, आलोचनात्मक और मनोहारिणी; विषय चरम, चित्रण प्रथम श्रेणी का है। छपाई-सफ़ाई नेत्र-रञ्जक, तिरङ्गे एवं सादे चित्रों से सुशोभित, सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत मात्र २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

सफल माता

यदि आपको अपने बच्चे प्यारे हैं, यदि आप उन्हें सर्वदा नीरोग और स्वस्थ रखना चाहते हैं तो आज ही इस पुस्तक की एक प्रति मँगा कर स्वयं पढ़िए और गृह-देवियों को पढ़ाइए। मूल्य केवल २)

अनाथ पत्नी

इस पुस्तक में हिन्दू-समाज की वैवाहिक कुरीतियाँ, उनके कारण अधिकांश दम्पतियों का नारकीय जीवन एवं स्त्री-समाज की करुण दशा का वर्णन बड़े ही मनोहर ढङ्ग से किया गया है। मूल्य केवल २)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—१६ अक्टूबर, १९३० | संख्या ३, पूर्ण संख्या ३

पुलिसवालों की दाल नहीं गली !

'भविष्य' की शानदार विजय !!

पहिला अङ्क डाकख़ाने से छोड़ दिया गया !!!

पं० जवाहरलाल नेहरू का शंखनाद

कॉङ्ग्रेस गुप्त-नीति की पोषक कदापि नहीं है

अब लगान बन्दी का अन्दोलन शुरू होगा

पण्डित जवाहरलाल नेहरू के पास नैनी जेल में ११ ता०को तीन बजे उनके छुटकारे का सन्देश भेजा गया और साढ़े तीन बजे पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० मेज़र्स अपनी मोटर पर उनको आनन्द भवन पहुँचा गए। श्री० कमला नेहरू उस समय आनन्द भवन में नहीं थीं।

अखिल भारतवर्षीय कॉङ्ग्रेस के सेक्रेटरी पण्डित गोविन्दकान्त मालवीय उस समय स्वराज्य भवन में थे। मोटर आती देख कर वे बाहर निकले और पण्डित जवाहरलाल को देख कर उन्होंने उन्हें छाती से लगा लिया। थोड़ी ही देर में यह ख़बर बिजली की तरह शहर भर में फैल गई और अपने हृदय-सम्राट के दर्शन तथा स्वागत के लिए विद्यार्थियों, मित्रों और जनता का आनन्द-भवन में ताँता लग गया। आधे ही घण्टे के उपरान्त वे कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस पहुँचे।

एक प्रेस-प्रतिनिधि के यह पूछने पर कि क्या वे कुछ दिनों आराम करेंगे, उन्होंने उत्तर दिया कि—"इस समय तक मैं करता क्या रहा हूँ ?"

पण्डित जवाहरलाल ने १२ ता० को सवेरे ८ बजे स्वराज्य भवन पर झण्डा फहराया। शहर के सब वालण्टियरों ने झण्डे का अभिनन्दन किया।

सन्ध्या को पाँच बजे राष्ट्रपति के स्वागत के लिए एक विराट जुलूस निकाला गया। जुलूस के आगे राष्ट्रपति और कॉङ्ग्रेस के सेक्रेटरी पं० गोविन्द मालवीय थे। उनके पीछे वानर सेना, महिलाएँ और अन्त में पुरुष थे। जनता राष्ट्रपति के दर्शनों के लिए इतनी उत्सुक थी कि पुरुष और स्त्रियाँ हज़ारों की संख्या में घरों की छतों पर से, इक्कों, ताँगों और गाड़ियों के ऊपर से उनके दर्शन कर रहे थे। कई जगह उन्हें भीड़ ने घेर लिया और वे जुलूस से अलग कर दिए गए; उनका आगे बढ़ना भी मुश्किल हो गया। और वालण्टियरों की सहायता की आवश्यकता पड़ी। जुलूस पुरुषोत्तमदास पार्क में आकर समाप्त हुआ।

विराट सभा

जुलूस के पुरुषोत्तमदास पार्क में पहुँचने के पहले ही सभा के लिए वहाँ हज़ारों आदमी एकत्रित हो गए थे। जुलूस वहाँ पहुँचने के बाद श्रीमती मालवीय के सभापतित्व में विराट सभा हुई। आज की सभा में जैसी भीड़ थी, वैसी बहुत कम अवसरों पर देखने में आई है।

राष्ट्रपति का भाषण

कई पुरुषों और एक स्त्री के बधाई देने के उपरान्त राष्ट्रपति ने अपना भाषण प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में उन हज़ारों स्त्री-पुरुषों को बधाई दी जिन्होंने देश के लिए अपनी आहुति दी, लाठियों के प्रहार सहे और जो अभी जेल के कष्ट भोग रहे हैं।

उन्होंने कहा कि जिस दिन वे जेल से मुक्त हुए वह एक पवित्र दिवस था, क्योंकि उसी दिन वायसराय ने एक नया ऑर्डिनेन्स जारी किया था। हमारे आन्दोलन की सफलता इन्हीं ऑर्डिनेन्सों से मापी जा सकती है, जो शिमला की फ़ैक्टरी से निकलते रहे हैं। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट दिन प्रति दिन इस प्रान्त में कॉङ्ग्रेस कमिटियों को ग़ैरक़ानून क़रार दे रही है। बनारस के बाद शीघ्र ही इलाहाबाद का नम्बर आने वाला है। वास्तव में अब ऐसा समय आ गया है, जब कि हम सब को ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के विरुद्ध बग़ावत कर देना चाहिए

लॉर्ड इर्विन को उत्तर

हाल ही में लॉर्ड इर्विन ने एक भाषण दिया है, जिसमें उन्होंने जयकर और सर सप्रू के सन्धि-प्रस्ताव के सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस की नीति की विवेचना की है। उन्होंने कॉङ्ग्रेस की नीति को 'गुप्त' बतला कर लाञ्छित किया है। परन्तु यदि कोई व्यक्ति किसी ऐसी संस्था पर, जिसका सम्बन्ध महात्मा गाँधी से हो, 'गूढ़' या 'कूटनीति-पूर्ण' होने का लाञ्छन लगावे, तो उसकी उस नीति से आश्चर्यजनक अनभिज्ञता ही प्रतीत होगी। सचमुच लॉर्ड इर्विन एक ऐसे वातावरण से घिरे हैं, जिससे उन्हें देश का सच्चा-सच्चा हाल मालूम नहीं होने पाता। कॉङ्ग्रेस की नीति गुप्त नहीं है, वह तो उसका खुल्लमखुल्ला प्रचार करती है। सन्धि के समय वायसराय महोदय ने गुप्त रूप से कॉङ्ग्रेस के कई प्रस्तावों की मञ्ज़ूरी का विश्वास दिलाया था। परन्तु कॉङ्ग्रेस इस प्रकार के गुप्त समझौते से सन्तुष्ट नहीं हो सकती।

लॉर्ड इर्विन ने यह भी कहा है कि "कॉङ्ग्रेस ने जो शर्तें रक्खी थीं वे केवल ऊपरी दिखावे के लिए थीं और उनके अनुसार हमसे समझौता नहीं हो सकता।" यह आश्चर्य की बात है कि उन्होंने अभी तक इस बात का अनुभव नहीं किया कि यदि यह सब दिखावे के लिए होता तो लोग इस प्रकार बिना समझे-बूझे आग में न कूद पड़ते, गोलियों के शिकार न बनते और न लाठियों

के आघात सहते। वे अपने कुटुम्बों को क्यों चौपट कर रहे और क्यों हज़ारों की संख्या में जेल जा रहे हैं ? आश्चर्य है कि वे आज तक भारतीयों की मनोवृत्ति न जान सके। उन्हें अब यह हमेशा याद रखना चाहिए कि हम लोगों ने अपनी नौकाएँ जला दी हैं और अब पीछे जाने का रास्ता बन्द हो गया है। सबको अब यह समझ लेना चाहिए कि कॉङ्ग्रेस का ध्येय स्वतन्त्रता प्राप्त करना है और वह उस समय तक भयानक युद्ध करेगी जब तक अपने उद्देश्य की प्राप्ति न कर लेगी। जो लोग कॉङ्ग्रेस की नीति को धिक्कारते हैं, उनमें केवल वे ही लोग सम्मिलित हैं, जो पर्दे में रहते हैं और जनता को अपना मुँह दिखाने में भी झेंपते हैं। वे पर्दे की ओट से ही अनाप-शनाप बकते रहते हैं।

(शेष मैटर आठवें पृष्ठ पर देखिए)

पाठक जानते हैं कि 'भविष्य' के पहले अङ्क की २२ हज़ार कापियाँ ३ तारीख़ को स्थानीय डाकख़ाने में रोक ली गई थीं। तब से बार-बार सरकारी अधिकारियों से उसके सम्बन्ध में पूछ-ताछ की गई पर कुछ ठीक पता न लग सका। ग्यारह दिन बीतने पर यकायक १४ तारीख़ को दिन के साढ़े तीन बजे अफ़वाह सुनने में आई कि पुलिस ने उनको छोड़ दिया है और वह भेजी जा रही हैं। पत्र के सञ्चालक श्री० सहगल जी ने पत्र लिख कर डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट से पूछा कि क्या यह अफ़वाह सच है, तो वहाँ से, उत्तर मिला—"हाँ, सच है।"

देश के प्राङ्गण में

—लाहौर के स्त्री-कॉलेज की प्रोफ़ेसर जनककुमारी ज़ुत्शी ने प्रोफ़ेसरी से इस्तीफ़ा दे दिया। उन्होंने इस्तीफ़े में कॉलेज की प्रिन्सिपल को लिखा है कि :—

"मुझे गवर्नमेण्ट की दमन-नीति का अन्त नहीं दिखता। इसके कारण केवल लाठियों के प्रहार और हज़ारों स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों की गिरफ़्तारी ही नहीं हुई; लाहौर में मेरी माँ और सब बहिनों की गिरफ़्तारी भी इसी के कारण हुई है। इसलिए इस परिस्थिति में मेरा गवर्नमेण्ट से सम्बन्ध स्थापित रखना असम्भव है।

—मालूम हुआ है कि भगतसिंह के प्राण-दण्ड के विरुद्ध उनके पिता सरदार किशनसिंह प्रिवी कौन्सिल में अपील करेंगे।

—आगरे ज़िले में शीघ्र ही लगानबन्दी की तैयारी बड़े ज़ोर से हो रही है।

चमार और डोम कौन्सिल के मेम्बर

देहरादून से संयुक्त प्रान्त की कौन्सिल के लिए एक चमार चुना गया है। उसके विपक्ष में वहाँ के एक बैरिस्टर खड़े हुए थे।

बनारस शहर से चौधरी जगन्नाथप्रसाद (डोम) और बनारस ज़िले से चौधरी भरोस (डोम) संयुक्त प्रान्तीय कौन्सिल के लिए चुन कर भेजे गए हैं। राय-साहिब एस० पी० सन्याल को जो उनके विरुद्ध खड़े हुए थे; इतने कम वोट मिले कि उनकी ज़मानत ज़ब्त कर ली गई।

गाँधी जी की मूर्ति की पूजा

राजशाही (बङ्गाल) में ८ वीं अक्टूबर को वहाँ के सैकड़ों किसानों ने गाँधी जी की मूर्ति के आगे जमा होकर उन कीड़ों के नाश करने की प्रार्थना की जो उनकी चावल की खेती को हानि पहुँचा रहे हैं।

—कॉङ्ग्रेस के स्थानापन्न सभापति चौधरी ख़ली-क़ुज़्ज़माँ ने एक विज्ञप्ति हाल ही में प्रकाशित की है जिसमें उन्होंने लिखा है कि श्रीमती कमला नेहरू ने नैनी जेल में जवाहरलाल जी से भेंट की थी। भेंट में श्री० जवाहर-लाल ने कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी की बैठक, जो ७ अक्टूबर को लखनऊ में होने वाली थी, उनके जेल से छूट जाने के उपरान्त होने की इच्छा प्रकट की है। इसी-लिए बैठक अनिश्चित समय के लिए स्थगित कर दी गई।

—बम्बई की कॉङ्ग्रेस कमिटी ने विलायती औषधियों के बहिष्कार को दृढ़ करने का निश्चय कर लिया है। इसी उद्देश्य से 'प्रिन्सेज़ स्ट्रीट' और 'क्राफ़र्ड मार्केट' की दुकानों पर पिकेटिङ्ग ज़ोरों से होने लगी है। मालूम होता है कि विलायती दवाइयों और रासायनिक पदार्थों के दुकानदारों की एसोसियेशन ने भविष्य में विलायती दवाइयाँ न मँगाने की प्रतिज्ञा की है।

—बहिष्कार आन्दोलन के परिणाम स्वरूप पञ्जाब की धारीवाल मिल बिलकुल बन्द हो गई है और उसके २५०० श्रमजीवी बेकार हो गए हैं।

—सक्खर में हिन्दू-मुसलमानों के उपद्रव की जाँच करने के लिए गवर्नमेण्ट की ओर से एक कमिटी, जिसमें सक्खर के सिटी मैजिस्ट्रेट श्री० ऊधाराम, स्पेशल फ़र्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट ख़ान बहादुर पीरबख़्श और पुलिस के डिपुटी सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री० एट्स सम्मिलित थे, बैठी थी। उसने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि पुलिस ने गिरफ़्तार करने में अन्याय और ज़ुल्म किया है। कमिश्नर ने भी इसका समर्थन किया है।

—बनारस के ११५० स्त्री-पुरुषों ने महात्मा गाँधी की वर्षगाँठ के उपलक्ष में उन्हें अपने हाथ का कता हुआ सूत भेंट किया है।

—६वीं अक्टूबर को कानपूर में साइकिल-दिवस मनाया गया था। इस रोज़ कॉङ्ग्रेस के वालण्टियरों ने वहाँ के बहुत से साइकिल के व्यापारियों से भविष्य में ब्रिटिश साइकिलें, मोटर साइकिलें, और उनके पुर्ज़े न मँगाने की प्रतिज्ञाएँ लीं।

—आगरे में लाहौर कॉन्सपिरेसी-केस के फ़ैसले के विरोध में १० तारीख़ को हड़ताल रक्खी गई और काले झण्डों का जुलूस निकाला गया, जिसमें भगतसिंह के चित्र को फूलों की माला पहिना कर ले जा रहे थे। श्री० कृष्णदत्त पालीवाल ने भाषण देते हुए कहा कि भगत-सिंह और दूसरे लोग अवश्य ही वीर हैं, पर उन्होंने देश की आज़ादी के लिए जो रास्ता चुना वह उचित नहीं। वे सच्चे देश-भक्त हैं, पर ग़लत रास्ते पर चलने वाले हैं। सब लोगों को कॉङ्ग्रेस का उसूल मानना चाहिए और अहिंसा का पालन करना चाहिए।

—कानपुर की कॉङ्ग्रेस कमेटी ने डेरापुर गोली-काण्ड की जाँच के लिए ५ व्यक्तियों की एक कमेटी क़ायम की है।

—लाहौर केस के फ़ैसले के प्रतिवाद स्वरूप बनारस में पूर्ण हड़ताल मनाई गई। शाम को एक जुलूस निकाला गया और सभा हुई।

—मथुरा का ७ ता० का समाचार है कि वहाँ की जेल में दो राजनीतिक क़ैदियों को किसी छोटे से अपराध में टिकटी से बाँध कर तीस-तीस बेंत लगाए गए। वे बेहोश हो गए। इस अत्याचार के विरोध में वहाँ के राजनीतिक क़ैदियों ने अनशन व्रत धारण कर लिया है। उनका अपराध केवल इतना ही था कि वे सन्ध्या समय जाकर प्रार्थना करते थे। इस ख़बर से शहर में बड़ी सनसनी फैली है।

—'मिलाप' के अमृतसर स्थित सम्वाददाता का कहना है कि वहाँ की 'युद्ध-समिति' के जेलयात्री प्रधान मन्त्री कॉमरेड शमशुद्दीन को लाहौर सेन्ट्रल जेल में सरदार भगतसिंह से हाथ मिलाने के अपराध में डेढ़ माह तक चक्की पीसने की सज़ा दी गई है।

—लाहौर षड्यन्त्र-केस के फ़ैसले के प्रतिवाद स्वरूप लाहौर जेल में श्रीमती लाडोरानी ज़ुत्शी, पूरनदेवी और अन्य स्त्रियों ने २४ घण्टे उपवास किया।

—लाहौर षड्यन्त्र-केस के अभियुक्तों को दी गई कठोर सज़ा के प्रतिवाद स्वरूप दिल्ली में पूर्ण हड़ताल रही। थियेटर, सिनेमा और ट्राम गाड़ियाँ तक बन्द रहीं।

—दिल्ली की बिड़ला मिल में, लाहौर षड्यन्त्र-केस के फ़ैसले के विरोध में, आधे दिन मौन रक्खा गया।

—गत ६ वीं अक्टूबर को अमृतसर के घण्टा घर में टाइप किया हुआ लाल पर्चा चिपका पाया गया। पुलिस ने उसे देखते ही वहाँ से हटा दिया। पर्चे के कारण वह अब बहुत चौकस रहने लगी है।

—ब्यावर का ६ ता० का समाचार है कि ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर बाबू प्रह्लाद राय और अन्य तीन व्यक्ति, जिन्हें २२ वीं सितम्बर को क्रमशः ३ और ६ माह की सख़्त क़ैद की और प्रत्येक को २०० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई थी, अचानक अजमेर जेल से छोड़ दिए गए। जेल से छूटने के पहिले शरद पूर्णिमा के दिन अजमेर के जेलर ने सब राजनीतिक क़ैदियों को भोज दिया था। प्रकाशचन्द्र और हैरेल्ड दो क़ैदियों ने भोज के बाद भजन गाए। बाद में उपर्युक्त अभियुक्तों को दूसरे जेल के तबादले का हुक्म सुनाया। परन्तु जैसे ही वे जेल से बाहर आए उन्हें घर ले जाने के लिए ताँगे खड़े मिले।

—श्री० राघवेन्द्रराव, जो पहिले सी० पी० के मिनि-स्टर थे, अब श्री० ताम्बे की जगह पर वहाँ के होम-मेम्बर नियुक्त किये गए हैं। उन्होंने ८ वीं अक्टूबर से अपने नए पद का चार्ज ले लिया है।

—विलायती सिगरेट के बहिष्कार के कारण चीन भारत में अपने देश के सिगरेट बना कर भेजने लगा है। अभी हाल में नेशनल फ़्लैग मार्का के सिगरेट भारत में आए हैं।

जेल में बच्चा हुआ

—कलकत्ते का समाचार है कि महिला सत्याग्रह-समिति की प्रेसीडेण्ट श्रीमती चमेलीदेवी ने, जो प्रेज़ी-डेन्सी जेल में ६ मास का कारावास दण्ड भोग रही थीं, एक बच्चा प्रसव किया जो छः दिन का होकर मर गया। बच्चे का मृतक शरीर श्रीमती चमेलीदेवी के पति और कुटुम्बियों को दे दिया गया है। बाद में चमेलीदेवी भी सज़ा की म्याद पूरी होने से पहिले ही जेल से मुक्त कर दी गई।

पुलिस के इस्तीफ़ों की भरमार

अलीबाग़ का ८ ता० का समाचार है कि उस तालुक़े के २० पुलिस के पटेलों ने इस्तीफ़ा दे दिया है। धारवाड़ के समाचारों से विदित होता है कि बेलगाँव ज़िले के सडगाह गाँव की गिरफ़्तारियों के विरोध में वहाँ के एक पटेल और दो कॉन्स्टेबिलों ने इस्तीफ़ा दे दिया है।

—बनारस के वस्त्र-विक्रेताओं का कहना था कि एक माह पहले जिन विदेशी-गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगाई गई थी उन्हें बेचने की अनुमति दी जावे। पर वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमेटी ने निश्चय किया है कि किसी हालत में भी कॉङ्ग्रेस की मुहर नहीं तोड़ी जायगी।

—मिदनापुर ज़िले में खड़गपुर से तीन मील दक्षिण हिजली नामक स्थान में राजनीतिक क़ैदियों को रखने के लिए ज़िला जेल की एक शाखा खोली गई है। उसमें केवल "सी" क्लास के चार हज़ार क़ैदियों के निवास का प्रबन्ध हुआ है।

—नवीन ऑर्डिनेन्स के कारण बम्बई की प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमेटी ने निश्चय किया है कि उसकी 'युद्ध-समिति' में सात के बजाय तीन सदस्य रहें और जो कितनी ही विभिन्न कमेटियाँ, जैसे बॉयकॉट कमेटी, रिलीफ़ कमेटी आदि, बनाई गई हैं, उनको तोड़ दिया जाय। नई 'युद्ध-समिति' के डिक्टेटर श्री० नगीनदास वालण्टियरों का पुनर्सङ्गठन कर रहे हैं और कैम्पों की संख्या घटा रहे हैं। यह भी निश्चय हुआ है कि श्रीमती कस्तूर बाई गाँधी को अपील के अनुसार कार्यकर्ताओं और फ़ण्ड को गुजरात के गाँवों में भेज दिया जाय।

—विलेपारले (बम्बई) की सत्याग्रह छावनी पर पुलिस का क़ब्ज़ा हो जाने से नए कैम्प की स्थापना की गई है और श्रीमती कमला बेन उसकी प्रेज़िडेण्ट नियुक्त की गई हैं। १२ तारीख़ को इसके उपलक्ष में वहाँ बड़ा उत्सव मनाया गया और नमक-सत्याग्रह किया गया।

—बम्बई के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने राष्ट्रीय स्वयंसेवकों को एसप्लेनेड मैदान में ड्रिल करने या दल बना कर चलने से रोकने की आज्ञा दी थी। अब यह आज्ञा दो महीने के लिए और बढ़ा दी गई है।

—कोकोनाडा (मद्रास) का समाचार है कि पुलिस ने ईस्ट गोदावरी काँङ्ग्रेस-कमेटी के दफ़्तर की तलाशी ली। वह कोई ज़ब्त पर्चा ढूँढ़ रही थी। पर उसके न मिलने से ख़ाली हाथ लौट गई।

—दिल्ली काँङ्ग्रेस कमेटी के भूतपूर्व डिक्टेटर मि० आसफ़ अली बैरिस्टर दिल्ली से गुजरात जेल भेज दिए गए हैं। 'सी' क्लास के २१ क़ैदी भी मुलतान जेल भेज दिए गए हैं।

—गोरखपुर के परमहंस राघवदास जेल से छूट गए। उनका स्वागत धूमधाम से किया गया और प्रधान बाज़ारों में होकर उनका जुलूस निकाला गया।

—अमृतसर में फागूमल नामक युवक, जो आत्म-हत्या के अभियोग में पकड़ा गया था, रिहा कर दिया गया। वह इण्डिया, ऑस्ट्रेलिया और चीन के चार्टर्ड बैङ्क की विदेशी कपड़े की भरी हुई लॉरी के सामने, जो बाहर जा रही थी, लेट गया था। प्रतिवादी की युक्ति थी कि वह वहाँ रुपया लेने गया था, परन्तु भीड़ में धक्का लग जाने के कारण वह गिर पड़ा था।

—श्री० सेन गुप्त ने १४ वीं ता० को कराची के व्यापारियों की एक सभा में भाषण देते हुए कहा कि उन व्यापारियों की प्रार्थना का विरोध किया जाय जो विदेशी कपड़े के मौजूदा स्टॉक को बेचने की स्वतन्त्रता चाहते हैं। उन्होंने उनसे महात्मा गाँधी और अन्य ५०,००० भारतीयों के बलिदान की ओर ध्यान देने की प्रार्थना की। उन्होंने यह भी कहा कि गोलमेज़ परिषद् को सफलता नहीं मिल सकती। जब भारत विजय प्राप्त कर लेगा तब एक बार उन्हें फिर कॉन्फ्रेंस करने की आवश्यकता पड़ेगी।

—बम्बई के विदेशी कपड़े के व्यापारियों का एक डेपुटेशन मसूरी में पण्डित मोतीलाल नेहरू के पास गया था कि दिवाली के दिनों में उनको विदेशी कपड़े बेचने की अनुमति मिल जाय। पर उनको इस उद्देश्य में सफलता प्राप्त नहीं हुई। इस पर 'नेटिव पीस गुड्स मरचैण्टस एसोसियेशन' ने अपनी एक बैठक में बाज़ार को फिर से खोलने और तमाम विदेशी कपड़े को, जिसकी क़ीमत ५ करोड़ रुपया है, बेच डालने का निश्चय किया। साथ ही उन्होंने भविष्य में विदेशी कपड़ा न मँगाने की भी प्रतिज्ञा की। १४ तारीख़ को जब कि बाज़ार खुलने वाला था बहुत से कॉङ्ग्रेस के नेता और वालण्टियर वहाँ पहुँचे और उन्होंने व्यापारियों को समझाया कि इस मौक़े पर जब कि समस्त भारत नेतृत्व के लिए बम्बई की तरफ़ देख रहा है, उनका यह कार्य उचित नहीं। इस पर अधिकांश व्यापारियों ने अपनी दुकानें नहीं खोलीं।

—अमृतसर की 'इण्डियन मरचेण्टस एसोसियेशन' ने ऑल इण्डिया कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट के पास तार भेजा है कि अमृतसर की कॉङ्ग्रेस कमिटी के अधिकारी विदेशी कपड़े के बेचने के सम्बन्ध में अपने नातेदारों और दोस्तों का पक्षपात कर रहे हैं और इस प्रकार वे लोग दूसरों की हानि करके हज़ारों रुपए कमा रहे हैं। इसलिए पिकेटिङ्ग और बायकॉट को उठा दिया जाय और सब व्यापारियों के साथ समान बर्ताव किया जाय।

* * *
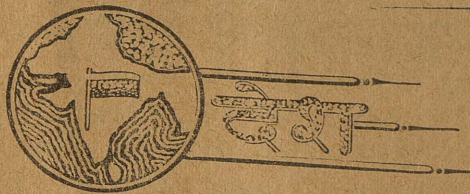
—१० अक्टूबर को रङ्गपुर जेल के सिविल सर्जन और सुपरिण्टेण्डेण्ट डॉक्टर भौमिक के सिर पर किसी अज्ञात व्यक्ति ने दो लट्ठ जमा दिए, जिससे रक्त की धारा बह निकली। आप उठा कर घर लाए गए। अभी तक इस सम्बन्ध में कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई है।

—मैमनसिंह का १०वीं अक्टूबर का समाचार है कि ९ ता० को साढ़े सात बजे रात को तीन सशस्त्र नक़ाब-पोश डाकुओं ने वहाँ के पोस्ट और टेलीग्राफ़ के सुपरिण्टेण्डेण्ट के घर में घुस कर उन पर आक्रमण किया। सुपरिण्टेण्डेण्ट के हल्ला मचाने पर नक़ाब-पोश भाग गए। भागते-भागते उन्होंने चपरासी को गोली मारी, पर किसी को लगी नहीं। पुलिस बड़ी सरगरमी से मामले की जाँच कर रही है।

—९ वीं अक्टूबर को नारायणगञ्ज के सिनेमा घर में तमाशा देखते समय नारायणगञ्ज 'चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स' के सेक्रेटरी श्री० जे० एच० कर्कलैण्ड अचानक गोली से घायल हो गए। मालूम होता है एक यूरोपियन दर्शक भरा हुआ तमञ्चा सिनेमा घर लेता गया था, जिसके गिरने से गोली चल गई और कर्कलैण्ड आहत हो गए। वे अस्पताल में अच्छे हो रहे हैं।

—२९ सितम्बर की रात्रि को एटा की डिस्ट्रिक्ट जेल से डकैती केस के २८ मुलज़िमों ने अपनी बारक के लोहे के सींकचे तोड़ कर भागने का प्रयत्न किया। जैसे ही वे स्त्रियों के वार्ड के ऊपर से फाँदने लगे, राजनीतिक क़ैदी श्रीमती सावित्रीदेवी चिल्ला उठीं जिसके कारण वहाँ के सन्तरी एकत्रित हो गए और उनमें से केवल छः ही भागने पाए। भागे हुए क़ैदियों का कोई पता नहीं है।

वायसराय घोड़े से गिरे

शिमला का ८ वीं अक्टूबर का समाचार है कि आज चाय पार्टी के समय वायसराय की ठुड्डी पर पट्टी बँधी देख कर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। मालूम हुआ है कि उसी दिन सबेरे वे घोड़े से गिर कर घायल हो गए थे।

—गत ९वीं अक्टूबर का समाचार है कि मिदनापूर के डिस्ट्रिक्ट जज के चपरासी राजनरायण सिंह को बङ्गाल नागपुर रेलवे के दो सिक्ख कर्मचारियों को पानी में डूबने से बचाने के कारण 'रॉयल ह्यूमेन सोसाइटी' का मेडल और सर्टिफ़िकेट दिया गया है। राजनरायण ने इनकी रक्षा अपनी जान ख़तरे में डाल कर की थी।

—स्वामी सत्यानन्द सभापति हिन्दू मिशन, कलकत्ता और भगवानप्रसाद अग्रवाल ने प्रचार के लिए सन्थाल परगना (बिहार) में एक लम्बी यात्रा की है।

—यू० पी० गवर्नमेण्ट ने दो साल के लिए रायबरेली के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को बन्द कर दिया है और उसके चेयरमैन तथा मेम्बर को हुक्म दिया है कि अपने पदों को ख़ाली कर दें। कारण यह बतलाया गया है कि बोर्ड बराबर अपने कर्त्तव्य की अवहेलना करता रहा है। बोर्ड की आर्थिक दशा बहुत ख़राब थी और गत तीन वर्षों में बार-बार चेतावनी देने पर भी उसका सुधार नहीं किया गया।

—१२ तारीख़ की रात को देहली के चाँदनी चौक और पहाड़गञ्ज में दो स्थानों में आग लगी। पर फ़ायर ब्रिगेड की मुस्तैदी के कारण अधिक नुक़सान नहीं हुआ।

—हैदराबाद का १३ वीं ता० का समाचार है कि कल सक्खर में एक मोटर-दुर्घटना से उसके सभी यात्री घायल हो गए। वे सब अस्पताल में पहुँचा दिए गए हैं।

—अहमदाबाद की गुजरात जिनिङ्ग मिल के मज़दूरों ने १३ तारीख़ से हड़ताल कर दी है। वे कारख़ाने में गए, पर मशीनों के पास चुपचाप बैठे रहे। उनका कहना है कि उनकी मज़दूरी घटा दी गई है। रामकृष्ण मिल के मज़दूरों ने भी इसी कारण हड़ताल की है।

—रावलपिण्डी का समाचार है कि क्रान्तिकारी दल की खोज लगाने के लिए पुलिस ने बहुत से घरों की तलाशियाँ लीं और किशनलाल, गुरुबख़्शसिंह, सेवाराम, शारदासिंह, चार सुनारों और महाराज किशन को गिरफ़्तार किया। सुजानसिंह की हवेली और अस्तबल की तलाशी लेते समय पुलिस को दो बम ईंधन के कमरे में छिपे हुए मिले। वे भी गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बनारस का समाचार है कि ९ अक्टूबर को रामनगर स्टेट में पुलिस ने एक घर की तलाशी ली जिसमें उसे चार पिस्तौलें और कुछ कारतूस मिले। पुलिस एक आदमी को गिरफ़्तार कर ले गई।

लाहौर में पुलिस सार्जेण्ट पर गोली

१२ ता० की रात को लाहौर पुलिस का सार्जेण्ट स्माइथ बाहर से लौट कर जब अपने घर में घुस रहा था, उस समय दो नवयुवकों ने उस पर गोली चलाई। उनमें से एक को एक यूरोपियन दुकान के चपरासी ने बाईसिकल पर भागते देखा। आक्रमणकारियों ने तीन गोलियाँ चलाईं, पर स० स्माइथ को एक भी नहीं लगी।

—लाहौर में पुलिस जिस दूसरे कॉन्सपिरेसी केस की तैयारी कर रही है, उसके सम्बन्ध में अफ़वाह है कि एक कॉपोनवीस एप्रूवर बन गया है। उसके बतलाने पर पुलिस उसके घर के दरवाज़े को निकाल कर ले गई जिस पर पिस्तौल चलाने का अभ्यास किया जाता था। इस मुक़दमे में अब तक २५ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

—ढाके का ९ वीं अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ ८ ता० की रात्रि को जगदीशचन्द्र नामक एक बङ्गाली युवक पर किसी ने घातक प्रहार किया, जिससे वह थोड़ी देर बाद मर गया। कहा जाता है कि वह पुलिस का भेदिया था और उसे गुप्त ख़बरें दिया करता था। इसके साथ के एक मुसलमान मित्र के सिर पर लोहे की छड़ी से प्रहार किया गया। वह मरा तो नहीं, पर चोट के कारण मिटफ़ोर्ड अस्पताल में पड़ा है। घातक का पता नहीं है और न इस सम्बन्ध में अभी तक कोई गिरफ़्तारी की गई है। श्री० पी० के० बोस, बैरिस्टर, शशङ्क मोहन बोस और अन्य कई व्यक्तियों के घरों की तलाशी ली गई है।

—कलकत्ते का १४ ता० का समाचार है कि जमालपुर में पुलिस के एक सब-इन्स्पेक्टर और एक कॉन्स्टेबिल को जान से मारने का प्रयत्न किया गया था। घातकों का पता नहीं है। मालूम हुआ है ७॥ बजे सवेरे उनकी ओर ५ गोलियाँ दाग़ी गईं। पुलिस ने भी ६ गोलियाँ छोड़ीं। पुलिस वालों में कोई घायल नहीं हुआ। इसका पता नहीं लगा कि घातकों को भी गोली लगी या नहीं।

—बम्बई में १४ ता० को लेमिङ्गटन रोड की दुर्घटना के सम्बन्ध में तलाशी लेते समय दादर के एक अध्यापक के घर में पुलिस को बिना लैसन्स का एक रिवॉल्वर और कुछ कारतूस मिले हैं। इस सम्बन्ध में पुलिस ने तीन आदमियों को और भी गिरफ़्तारी की है। सब पुलिस की हवालात में भेज दिए गए हैं।

* * *

भविष्य

[वर्ष १, खण्ड १, संख्या ३

"हम भगतसिंह से सहानुभूति क्यों दिखाते हैं ?"

बम्बई में श्री० सेनगुप्त की गर्जना

बम्बई में लाहौर षड्यन्त्र केस के फ़ैसले के विरोध में आज़ाद मैदान में जो विराट सभा हुई थी उसमें भाषण देते हुए श्री० सेन गुप्त ने कहा है :—

"इसमें सन्देह नहीं कि भगतसिंह के कार्य कॉङ्ग्रेस के सिद्धान्तों के विरुद्ध थे। परन्तु वह देशभक्ति का जीता-जागता आगार था, जो राष्ट्रीय कॉङ्ग्रेस का उद्देश्य है, यद्यपि हम रक्त बहा कर स्वतन्त्रता प्राप्त करना नहीं चाहते तो भी हम उन सब देशभक्त युवकों के साथ अपनी सहानुभूति दिखाते हैं, जो लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों के रूप में अपना आत्म-बलिदान कर रहे हैं।

"दूसरे देशों के आलोचक यह कहने में कभी न चूकेंगे कि कॉङ्ग्रेस ऐसे षड्यन्त्रों से सम्बन्ध रखती है, परन्तु इसका उत्तर यह है कि कॉङ्ग्रेस अभियुक्तों का पक्ष नहीं लेती। वरन् वह गवर्नमेण्ट की उस अन्यायपूर्ण नीति का विरोध करती है, जिससे उनके मुक़दमे की कार्यवाही की गई है और उन्हें ऐसी सज़ा दी गई। इसके साथ यदि ऐसे युवकों के कार्यों को, जिनके हृदय में एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आग जल उठी है, गवर्नमेण्ट दोषपूर्ण ठहरा कर ऐसी अन्यायपूर्ण सज़ाएँ देगी, उन्हें जेल में ठूँसेगी, तो वे अधिकाधिक तादाद में हिंसात्मक आन्दोलन में सम्मिलित होंगे जैसा कि वे इस समय कर रहे हैं।"

उन्होंने यह भी कहा कि जो युवक हिंसात्मक क्रान्ति से उद्देश्य प्राप्ति करने में विश्वास करते हैं उन्हें भगतसिंह और उसके साथियों के भाग्य-निर्णय से यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि हिंसात्मक उपायों से वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति नहीं कर सकते।

गुजरात में लगान-बन्दी का आन्दोलन

बोरसद में अनेकों गाँव ख़ाली हो रहे हैं

बोरसद ताल्लुक़े ने लगान न देने का दृढ़ निश्चय कर लिया है। किसान अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए तैयार हो गए हैं। वहाँ का मामलातदार नित्य प्रति बीस सशस्त्र कॉन्स्टिबिलों के साथ गाँव-गाँव लगान वसूल करने के लिए घूमता है और पट्टीदार जाति के विरुद्ध, जो इस आन्दोलन का नेतृत्व कर रही है, लोगों को भड़काने का प्रयत्न कर रहा है, पर ताल्लुक़ा अपने निश्चय पर दृढ़ है। बोरसद के मामलातदार ने ५ अक्टूबर के पहिले लगान चुकाने का नोटिस निकाला था। उसके परिणाम स्वरूप, प्रायः सब गाँवों के किसान अपनी चल-सम्पत्ति लेकर उन गाँवों में चले गए हैं, जिनमें लगान-बन्दी का आन्दोलन प्रारम्भ नहीं हुआ है। कुछ गाँवों के लोग कुर्क़ी के कुर्क़ों से बचने के लिए घर छोड़ कर खेतों में झोंपड़ी बना कर रहने लगे हैं। मामलातदार के नोटिसों और हथियारबन्द पुलिस की गश्त से वहाँ के किसानों में सनसनी फैल गई है और वे पहले से ही सावधान हो गए हैं। गत ३ अक्टूबर को वहाँ का कुर्क़ी क्लर्क और हथियारबन्द पुलिस के साथ बोरसद स्टेशन पर पहुँचा उसने बोरसद के पास बसना नामक गाँव के श्री० छगन भाई माथुर भाई पटेल की तम्बाकू की ३१ गाँठे कुर्क़ कर लीं। मालूम हुआ है कि छगन भाई के ऊपर पिछले साल के लगान की कोई बाक़ी नहीं थी, और उनके पिता को जो इस साल का लगान देना है उसकी म्याद बाक़ी है।

१० साल के बच्चे को तीन वर्ष का दण्ड

अमृतसर के एडीशनल ज़िला मैजिस्ट्रेट बाबा नानक सिंह ने हाल ही में १० वर्ष के नानकचन्द को ३ मास के कठिन कारावास का दण्ड दिया था। साथ ही उन्होंने उसे तीन साल के लिए दिल्ली के रिफ़ार्मेटरी स्कूल में भेजने का भी ऑर्डर दिया था। इस ऑर्डर के विरुद्ध सेशन्स जज की अदालत में अपील की गई थी। उस फ़ैसले में आपने लिखा कि अपराधी को कितना ही तुच्छ दण्ड दिया गया हो वह क़ानून के अनुसार रिफ़ार्मेटरी स्कूल भेजा जा सकता है। उन्होंने यह भी लिखा कि यद्यपि अपराधी बहुत कम उमर का है, परन्तु मालूम पड़ता है कि वह बहुत दिनों से गवर्नमेण्ट और पुलिस के विरुद्ध कॉङ्ग्रेस के सिद्धान्तों का प्रचार कर रहा है। अपील रद्द कर दी गई।

२० हज़ार महिलाओं का जुलूस

गाँधी दिवस के दिन बम्बई में २० हज़ार महिलाओं का बड़ा शानदार जुलूस निकला था। जिस-जिस रास्ते पर से जुलूस निकला उस पर पुष्प-वर्षा की गई। इस एक मील लम्बे जुलूस का नेतृत्व श्रीमती पेरीबेन केप्टन; श्रीमती लीलावती मुन्शी और श्रीमती लुक़मानी ने किया। जुलूस आज़ाद मैदान में एक विराट सभा के उपरान्त समाप्त हुआ। मीरा बहिन ने सभा में अपने भाषण में कहा कि "जो अङ्गरेज़ संसार से कहते हैं कि सत्याग्रह आन्दोलन अन्तिम साँसें ले रहा है, उन्हें आकर आज़ाद मैदान की यह सभा देखना चाहिए। मैं बिहार, उड़ीसा और आसाम के दौरे से अभी वापस आई हूँ। वहाँ विदेशी का एक तार दिखाई नहीं देता। बम्बई की बहिनों को उन प्रान्तों का अनुकरण करना चाहिए।"

लाहौर में विराट जुलूस

लाहौर षड्यन्त्र केस के फ़ैसले के विरोध में लाहौर में एक विराट जुलूस निकाला गया। हज़ारों आदमी नङ्गे सिर जुलूस में सम्मिलित हुए। जुलूस परी-महल से उठ कर पापड़-मण्डी, चौक, चकला, लाहौरी गेट, अनारकली होता हुआ मोरी गेट पर रुका, जहाँ एक विराट सभा हुई। रास्ते भर 'इनक़िलाब ज़िन्दाबाद' और 'भगतसिंह ज़िन्दाबाद' के नारे लगाए गए। सभा में भगतसिंह के पिता और तीन छूटे हुए अभियुक्तों को सम्मान-पत्र दिया गया और फ़ैसले के विरोध में एक प्रस्ताव पास करने के बाद सभा समाप्त हुई।

६००० स्त्री-पुरुषों ने क़ानून-भङ्ग किया

कराडी (गुजरात) का समाचार है कि ४थी ता० की रात्रि को २॥ बजे से ही आस-पास के गाँवों के स्त्री-पुरुष नमक-क़ानून भङ्ग करने के लिए कराडी में, जहाँ महात्मा गाँधी का कैम्प था, एकत्रित होने लगे। ३॥ बजे चर्खा और कपास की पूजा के उपरान्त लगभग ६००० के समूह ने जिसमें १५०० स्त्रियाँ सम्मिलित थीं, नमक-क़ानून भङ्ग किया।

बारह को आजन्म कालापानी

गत जून में चेचूहाट (दासपुर) में बलवा हो जाने के कारण पुलिस के चार कॉन्स्टिबिलों और दो सब-इन्स्पेक्टरों को मारने, उनके हथियार छीनने और उनमें से एक सब-इन्स्पेक्टर भोलानाथ घोष को मार डालने के अभियोग में ३३ बङ्गाली युवक गिरफ़्तार हुए थे। स्पेशल ट्रिब्यूनल ने २५ सितम्बर को उनके मुक़दमे का फ़ैसला सुना दिया। फ़ैसले के अनुसार १२ युवकों को आजन्म कालेपानी का और ५ को २-२ वर्ष के कठिन कारावास का दण्ड मिला। नौ निर्दोष कह कर छोड़ दिए गए। सात सबूत न मिलने के कारण पहिले ही छोड़ दिए गए थे।

मुरादाबाद कॉङ्ग्रेस पर धावा

गत ३री ता० को पुलिस के १० कॉन्स्टेबिलों और अफ़सरों ने रात्रि में ४ बजे मुरादाबाद कॉङ्ग्रेस कमिटी पर धावा किया। कॉङ्ग्रेस दफ़्तर का ताला बन्द होने के कारण पुलिस ने ताला तोड़ डाला और डेस्कें—जिनमें रजिस्टर, काग़ज़, दावातें, पेन्सिलें, पत्र, फ़ाइल, कम्बल, चाँदनी, वालण्टियरों के कपड़े, बेल्ट, रूमाल, लोटा और गिलास बन्द थे, उठा ले गई। पुलिस के हाथ में उस समय जो भी चीज़ आई सब ले गई। यहाँ तक कि नौकर की चिलम और तम्बाकू तक नहीं बचने पाया। शहर में १४ दिन के लिए १४४ दफ़ा और भी बढ़ा दी गई है

उसी दिन कॉङ्ग्रेस वालण्टियर-सङ्घ के कप्तान श्री० रामगुलाम, जमाइत-उल-उलेमा के प्रेज़िडेण्ट मौलाना फ़ख़रुद्दीन अहमद और सेक्रेटरी मौलाना मुहम्मद अली गिरफ़्तार किए गए। वारण्ट दिखाते ही वे कोतवाली पहुँच गए। ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी बाबू सन्तसरन अग्रवाल भी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

'भारत अपना सर्वस्व निछावर करके स्वतन्त्र होगा'

वाशिङ्गटन (अमेरिका) का समाचार है कि अमेरिका की "भारतीय नेशनल कॉङ्ग्रेस" के प्रेज़िडेण्ट श्री० शैलेन्द्रनाथ घोष ने, जो अमेरिका का दौरा करने के लिए निकले हैं, अपने भाषण में कहा है कि—"भारत के लोग अपना सर्वस्व निछावर करके भी स्वतन्त्रता लेंगे।"

* * *

—अमृतसर में जलियाँवाला बाग़ पर धावा बोल कर पुलिस वहाँ की 'युद्ध-समिति' के २२वें डिक्टेटर श्री० फ़तह मुहम्मद और दो अन्य सदस्यों को गिरफ़्तार कर ले गई।

—बाल-भारत सभा का उत्साही कार्यकर्ता, विश्वनाथ नामक एक ११ वर्ष का बालक लायलपुर में गिरफ़्तार कर लिया गया। उसे २॥ माह की क़ैद की सज़ा हुई है।

—लायलपुर का समाचार है कि पञ्जाब के युवक कवि श्री० इबरात को छः मास के कठिन कारावास की सज़ा हो गई।

—रोपड़ का समाचार है कि बाल-भारत-सभा अम्बाला का प्रेज़िडेण्ट ओमप्रकाश नामक १२ वर्ष का बालक यहाँ मोरन्द से गिरफ़्तार कर लाया गया था। उसे मोटर पर लाने को कहा गया था, पर उसे १० मील से अधिक पैदल चलाया गया। रास्ते में प्यास लगने पर जब उसने पानी माँगा तब उसे पानी तक नहीं दिया गया।

श्रीमती ज़ुत्शी की चार लड़कियाँ गिरफ़्तार

लाहौर में षड्यन्त्र केस के फ़ैसले के, विशेषकर भगतसिंह और अन्य दो की फाँसी की सज़ा के, विरोध में पूर्ण हड़ताल रही। बहुत सी शिक्षा संस्थाएँ भी बन्द रहीं। जो संस्थाएँ बन्द न थीं उन पर पिकेटिङ्ग की गई। इस पिकेटिङ्ग में ११ स्त्रियाँ और विद्यार्थी गिरफ़्तार हुए। स्त्रियों में प्रोफ़ेसर जनक कुमारी ज़ुत्शी एम० ए०; स्टूडेण्ट्स यूनियन की प्रेज़िडेन्ट कुमारी मनमोहनी ज़ुत्शी; कुमारी श्यामा ज़ुत्शी, कृष्णा कुमारी ज़ुत्शी और स्वदेश कुमारी सम्मिलित हैं। पुरुषों में श्री० वीरेन्द्र, श्री० नरेन्द्र और रोशनलाल गिरफ़्तार हुए। गवर्नमेण्ट कॉलेज पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ३० विद्यार्थी गिरफ़्तार हुए।

—दिल्ली में राष्ट्रीय मुस्लिम यूनीवर्सिटी (जामिया मिल्लिया इस्लामिया) के प्रोफ़ेसर शफ़ीक़ुल रहमान को दफ़ा १२४ ए के अभियोग में एक साल की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—बैङ्कों के गोदामों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण दिल्ली के चार स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कानपुर में युवक-सङ्घ के संयुक्त मन्त्री श्री० रामाश्रय बाजपेयी और कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ता श्री० बी० एन० शर्मा, कौन्सिल पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए। अन्य पाँच वालण्टियर रेलवे के अहातों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण गिरफ़्तार किए गए।

—बलिया में पिकेटिङ्ग के अभियोग में ९ वालण्टियरों को ६-६ मास के कठिन कारावास और ५०-५० रुपए जुर्माने का दण्ड दिया गया।

—आगरे की सुप्रसिद्ध स्त्री कार्यकर्त्री श्रीमती शुकदेवी पालीवाल फ़ीरोज़ाबाद में गिरफ़्तार कर ली गईं।

—पटना का समाचार है कि वहाँ केवल एक दिन में गाँजा भाँग और शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ४० गिरफ़्तारियाँ हुईं।

—नागपुर का समाचार है कि मराठी सी० पी० की 'युद्ध-समिति' के नौवें डिक्टेटर श्रीयुत शेरलेकर को छः मास की सख़्त सज़ा और २०० रुपए जुर्माने का दण्ड मिला है। जुर्माना न देने पर उन्हें १॥ मास की सख़्त क़ैद और भोगनी पड़ेगी। उनका स्थान कौन्सिल की भूतपूर्व सदस्य श्रीमती अनुसूया बाई काले ने ग्रहण किया है।

पुलिस की सङ्गीनों से दो मरे

नागपुर का समाचार है कि भण्डारे ज़िले की गोंदिया तहसील में अतिरिक्त पुलिस ने, उनका व्यक्तिगत कार्य करने से इन्कार करने के कारण, कोहीदी गाँव के तिम्या और जन्याकेवल नामक दो आदमियों को सङ्गीनों से आहत कर दिया। गोंदिया की 'वार-कौन्सिल' ने नागपुर से सहायता माँगी और वहाँ से डॉक्टर सौनक और देशमुख वहाँ पहुँचे। परन्तु उनके वहाँ पहुँचने के पहले ही वे मर चुके थे। कुछ लोगों का कहना है कि पुलिस ने अपनी आत्म-रक्षा के लिए हथियारों का उपयोग किया था। गाँव के ४०० आदमियों ने मृतकों के शरीर का जुलूस निकाल कर गाँव भर में घुमाया।

—मदुरा काँङ्ग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी श्री० सुन्दरम पिलाई को एक साल की सादी क़ैद की सज़ा हो गई।

—कानपुर का १३ ता० का समाचार है कि पण्डित श्रीरत्न शुक्ल एम० ए०, एल्-एल्० बी०, एडवोकेट, जो प्रॉविन्शल कॉङ्ग्रेस कमेटी के मेम्बर थे, १०८ दफ़ा में गिरफ़्तार कर लिए गए। बाबू हीरालाल बर्मा भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कानपुर के एक प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री० वीरभद्र तिवारी गत रविवार को गिरफ़्तार कर लिए गए। लाहौर कॉन्सपिरेसी-केस से रिहा होने वाले अभियुक्त अजयकुमार का तिलक-मैदान में स्वागत किया गया। पिकेटिङ्ग के अभियोग में ८ और ९ वर्ष की आयु के दो बालक भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—आगरे के चूलहाउली गाँव में तीन गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। श्रीमती पालीवाल का मुक़दमा अचानक दस तारीख़ को पेश हुआ और उनको छः महीने की सख़्त सज़ा दी गई। उनको 'ए' क्लास में रक्खा गया है।

—पेशावर में १२ और १३ तारीख़ को आठ लाल कमीज़ वाले वालण्टियर शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करते हुए गिरफ़्तार किए गए हैं।

सिवनी में गोली चली

सिवनी (सी० पी०) के तूरिया नामक गाँव में पुलिस का एक दल जङ्गल सत्याग्रह को रोकने के लिए गया था। उसके समझाने से सत्याग्रहियों ने अपना विचार छोड़ दिया। जब पुलिस वाले लौट रहे थे तो उनको लोगों का एक बड़ा समूह मिला जिसने उन पर लाठियों से हमला किया। पुलिस ने गोली चलाई। एक पुरुष तथा एक स्त्री के मरने तथा १७ लोगों के घायल होने की ख़बर है। ये सब लोग सिवनी के अस्पताल में लाए गए हैं।

—जमाय-तुल-उलेमा के प्रेज़िडेण्ट मौलवी मुफ़्ती क़िफ़ायतुल्ला को दिल्ली के मैजिस्ट्रेट मि० पूल ने छः मास की सज़ा दी है। उनको 'ए' क्लास में रक्खा गया है। १३ तारीख़ को इस सज़ा के विरोध में दिल्ली में पूर्ण हड़ताल मनाई गई और एक जुलूस भी निकाला गया।

सिलसण्डा (क़ायमगञ्ज) के श्रीयुत मेवाराम लोगों को भड़काने के अभियोग में पकड़े गए हैं। जब उनको पता लगा कि उनके नाम वारण्ट है तो वे कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस में पहुँच गए और वहाँ से लोगों ने जुलूस के साथ उनको थाने पहुँचाया।

—लाहौर के फ़ोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में दीवानचन्द और रामप्रकाश नामक दो विद्यार्थी गिरफ़्तार किए गए थे। उनको तीन-तीन महीने की सख़्त सज़ा दी गई।

—लाहौर सिटी कॉङ्ग्रेस कमिटी के चौथे डिक्टेटर मि० सुजानमल और दयालसिंह कॉलेज का विद्यार्थी चुन्नीलाल कोहली क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—दिल्ली में चार्टर्ड बैङ्क के गोदाम में विदेशी कपड़े की गाठों पर पिकेटिङ्ग करते हुए तीन स्वयंसेवक १० वीं अक्टूबर को गिरफ़्तार किए गए। कॉङ्ग्रेस कमिटी के ऑफ़िस में मि० महम्मद इस्माइल भी गिरफ़्तार कर लिए गए।

—दिल्ली की महिला स्वयंसेविकाओं की कप्तान मेमोबाई १२ ता० को गिरफ़्तार कर ली गईं। उसी दिन नौ स्वयंसेवक और चार कप्तान भी गिरफ़्तार किए गए।

—अकोला (बरार) के पारसी-तकली स्थान में श्री० अमृतराव देशमुख गिरफ़्तार किए गए। उनको सत्याग्रह करने के अभियोग में चार मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

हवड़ा में ५३ गिरफ़्तारियाँ

१३ तारीख़ को पुलिस ने हवड़ा के अनेक मकानों पर एक ही समय में धावा किया और ५३ नवयुवकों को गिरफ़्तार किया। ये गिरफ़्तारियाँ एक गाँव में वालण्टियरों द्वारा विलायती कपड़े के जलाए जाने के सम्बन्ध में हुई हैं। सन्तरागाछी कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस में पुलिस ने ताला लगा दिया है। हवड़ा कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस की भी तलाशी ली गई और तीन स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया गया।

—सूरत के नगर मजिस्ट्रेट ने वहाँ की "युद्ध परिषद" के अध्यक्ष श्री० रतनभाई खाँडवाला और मन्त्री श्री० रतिलाल नाथभाई जारूवाला को १२७ ब और १४३ धाराओं के अनुसार क्रमशः १ वर्ष की कड़ी क़ैद और २००) रुपए जुर्माने और ६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है ये लोग कौन्सिल-चुनाव में पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में पकड़े गए हैं।

—मुज़फ़्फ़रपुर का ता० ९ का समाचार है कि 'भोर' थाने में १८ वालण्टियर चौकीदारी टैक्सबन्दी के आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार हुए हैं। वहाँ गाँजा, भाँग और शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में भी १३ वालण्टियर गिरफ़्तार हुए हैं। सगौली थाने के असेसर ने गवर्नमेण्ट की नीति के विरोध में अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

—लाहौर में ९ वीं अक्टूबर को नौजवान भारत-सभा के प्रेज़िडेण्ट श्री० मङ्गलदास को एक वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दे दी गई।

—१० अक्टूबर को मदारीपुर के श्री० अजयकुमार गुप्त बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए।

—पेशावर की एक तहसील चारसका में शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ९ तारीख़ को २० आदमी गिरफ़्तार कर लिए गए।

* * *

—श्री० के० एफ़० नरीमेन ने राष्ट्रीय अदालतों के सम्बन्ध में जो विज्ञप्ति प्रकाशित की है उसके सम्बन्ध में इङ्गलैण्ड के 'डेली हेरल्ड' ने लिखा है कि 'भारतीय कॉङ्ग्रेस सिनफ़ीन आन्दोलन की नक़ल कर रही है।' उसने एक सम्पादकीय लेख में इसे बहुत ख़तरनाक बतलाया है और गवर्नमेण्ट को उसका विरोध करने की चेतावनी दी है।

—जेरूसलम का ६ठी अक्टूबर का समाचार है कि वहाँ के एक ईसाई सम्पादक की हत्या के अभियोग में १० अरब निवासियों पर, जिनमें तीन स्त्रियाँ भी सम्मिलित हैं, मुक़दमा चल रहा है। अरब के मुसलमानों और ईसाइयों के बीच में एक क़ब्रिस्तान के आधिपत्य के सम्बन्ध में झगड़ा हो जाने के कारण ही यह हत्या हुई है।

—कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर अमेरिका पहुँच गए हैं। वे वहाँ तीन माह तक संयुक्त राज्य में भाषण देंगे।

—श्री० रवीन्द्रनाथ टैगोर ने, जो हाल ही में इङ्गलैण्ड की यात्रा की थी, उसके उपलक्ष में वहाँ के लोगों ने शान्ति निकेतन की सहायता के लिए धन इकट्ठा करना आरम्भ किया है। वहाँ के कुछ लोगों के नाम से एक अपील निकाली गई है और लोगों से विश्व-भारती कोष में चन्दा देने के लिए अनुरोध किया गया है।

—ब्रिटिश पार्लामेण्ट से गोलमेज़ परिषद के लिए निम्न-सदस्य चुने गए हैं:—

गवर्नमेण्ट (मज़दूर दल) के प्रतिनिधि :—

(१) प्रधान मन्त्री रेमज़े मेकडॉनल्ड
(२) लॉर्ड सेन्के
(३) मि० वेजवुडबेन
(४) मि० आर्थर हेण्डरसन
(५) मि० जी० एच० टॉमस

जॉनबुल को जान सङ्कट में !
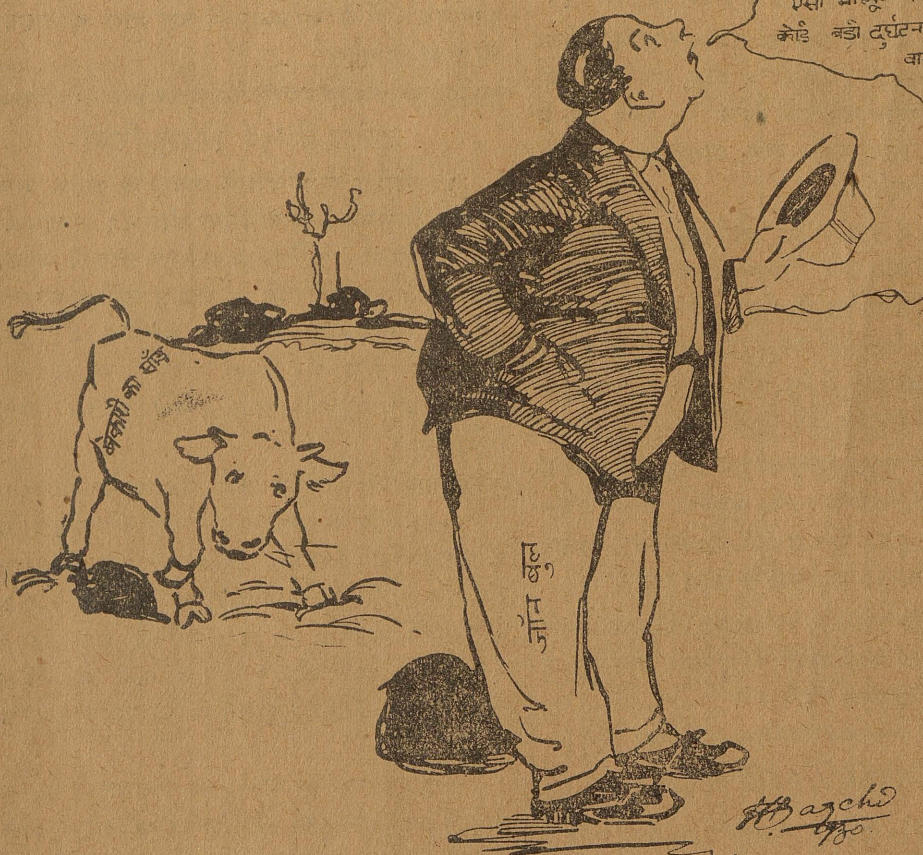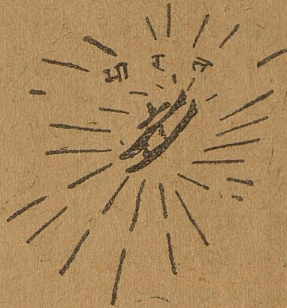
बेचारे भारत की ओर नज़र लगाए हुए हैं, पर अपने घर का पता नहीं रखते !

कन्ज़र्वेटिव दल के प्रतिनिधि :—

(६) लॉर्ड पील
(७) सर एच० होर
(८) मार्किस ऑफ़ ज़ेटलेण्ड
(९) ऑनरेबिल ऑलीवर स्टेनले

लिबरल दल के प्रतिनिधि :—

(१०) लॉर्ड रीडिङ्ग
(११) मार्किस ऑफ़ लोदियन
(१२) सर आर० हेमिल्टन
(१३) मि० आइज़क फ़ूट

निम्न सज्जन सलाह-मशविरे के लिए कॉन्फ़्रेन्स में उपस्थित रहेंगे।

(१४) यू० पी० के गवर्नर सर मॉल्कम हेली
(१५) सर चार्ल्स इन्स
(१६) मि० एच० जी० हेग

—न्यूयार्क (अमेरिका) का समाचार है कि ब्रेज़िल के बलवाइयों की ८९,००० सिपाहियों की एक सेना सावोपालो और रिओडेजेनीरो की ओर बढ़ रही है। ब्रेज़िल के डिपुटी लुज़ारडो का कहना है वह क्रान्ति अरजेन्टाइन की क्रान्ति की तरह है और इसका उद्देश्य स्वत्वाधिकारी शासन का अन्त करना और चुनाव के समय गुप्त बेलट का अधिकार प्राप्त करना है। इस क्रान्ति में वहाँ की रियासतें दिन प्रति दिन अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित हो रही हैं। गवर्नमेण्ट ने अनिश्चित समय के लिए बैङ्क बन्द कर दिए हैं। हवाई मेल बन्द हो गई है और समस्त ब्रेज़िल में ३१ दिसम्बर तक के लिए मार्शल-लॉ जारी हो गया है। बलवाई ज़िलों का मार्ग रोकने के लिए लड़ाई के जहाज़ भी रवाना हो गए हैं। इस क्रान्ति में फ़ौज बलवाइयों का साथ दे रही है।

—भारतीय राष्ट्रीय महासभा की लन्दन की शाखा ने गोलमेज़ परिषद के विरोध के जुलूस में आयर्लैण्ड के प्रसिद्ध वीर डीवेलरा को निमन्त्रण भेजा था ; परन्तु उन्होंने यह कह कर इन्कार कर दिया, कि वे आयर्लैण्ड से ही भारत की सहायता करेंगे।

—मर्वेड (इङ्गलैण्ड) में व्याख्यान देते हुए श्री० बी० शिवराव ने कहा है कि अङ्गरेज़ी शासन से भारत-वासियों के असन्तुष्ट होने का कारण यह है कि भारतवर्ष में फ़ौज पर जितना धन ख़र्च किया जाता है, उसके मुक़ाबले में जनता की शिक्षा और स्वास्थ्य पर बहुत ही कम ख़र्च किया जाता है। भारत में आज जो स्वतन्त्रता का आन्दोलन चल रहा है, वह सर्व-साधारण के निराश हो जाने का परिणाम है और जब तक यह समस्या हल न की जायगी तब तक यह बराबर बढ़ता रहेगा।

—३० सितम्बर को ख़त्म होने वाली तिमाही में हवाई डाक द्वारा इङ्गलैण्ड से भारत को ७,७१२ पौण्ड चिट्ठियाँ भेजी गईं। इससे पहली तिमाही में ६,९८८ पौण्ड चिट्ठियाँ आई थीं।

—बर्लिन में फ़ैसिस्ट दल वालों और कम्यूनिस्टों में दङ्गा हो गया। फ़ैसिस्ट एक बाज़ार में यहूदियों की दुकानों में घुस कर लूट करने लगे। पुलिस ने मौक़े पर पहुँच कर उनको रोका और पचास व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया। एक बड़े स्टोर की तमाम खिड़कियाँ तोड़ डाली गईं। इन लोगों ने जर्मन पार्लामेण्ट 'रीस्टॉग' के सामने भी जुलूस निकाला और उपद्रव किया। वहाँ पुलिस ने ८० उपद्रवी गिरफ़्तार किए।

—ऑस्ट्रेलिया का एक प्रसिद्ध उड़ाका फ़्रेड हैनक माथे पर जहाज़ के अगले हिस्से की चोट लग जाने से मर गया।

—दक्षिणी अफ़्रिका का उड़ाका कैस पैरूथस ६½ दिन में इङ्गलैण्ड से केपटाउन पहुँचा है।

—चीन में डाकुओं ने जहाज़ को पकड़ लिया। वे ३० यात्रियों को पकड़ ले गए और १ हज़ार डॉलर की क़ीमत का माल उन्होंने लूट लिया।

—चीन के प्रेज़िडेण्ट चेङ्ग-काईशेक ने प्रकाशित कराया है कि चीन के विद्रोह में राष्ट्रीय दल के १५ हज़ार सिपाही मारे गए और ६० हज़ार घायल हुए। उनके विरोधियों के डेढ़ लाख मनुष्य काम आए।

* * *

ऑर्डिनेन्स-शासन ज़ोर पकड़ रहा है

बम्बई में ८६ कॉङ्ग्रेस संस्थाओं पर प्रहार

वायसराय ने एक नया (नवाँ) ऑर्डिनेन्स 'ग़ैरक़ानूनी संस्था आर्डिनेन्स (Unlawful Association Ordinance) के नाम से जारी किया है, जिसके अनुसार प्रान्तीय गवर्नमेण्टों को ग़ैरक़ानूनी कॉङ्ग्रेस संस्थाओं की अचल सम्पत्ति पर अधिकार जमाने और चल सम्पत्ति को ज़ब्त करने के अधिकार दिए गए हैं।

आर्डिनेन्स की आवश्यकता बताते हुए वायसराय ने जो वक्तव्य दिया है उसका सार यह है:—

"भद्र अवज्ञा आन्दोलन को प्रारम्भ हुए अब प्रायः छः माह हो गए। इस अर्से में इसके प्रवर्तकों और समर्थकों ने क़ानून से स्थापित गवर्नमेण्ट का अन्त करने और जनता में क़ानूनी अधिकारों की अवज्ञा का भाव फैलाने में कुछ उठा नहीं रक्खा। उन्होंने अज्ञान और भोले-भाले लोगों को खुल्लम-खुल्ला क़ानून तोड़ने के लिए उकसाया और सरकारी कर न देने के लिए उत्तेजित किया। उन्होंने फ़ौज और पुलिस को राजविद्रोही बनाने का प्रयत्न किया। परोक्ष या प्रत्यक्षरूप से बहुत सी हिंसात्मक घटनाओं के लिए भी वे ही उत्तरदायी हैं। कॉङ्ग्रेस पर बहुत से मनुष्यों के जीवन और सम्पत्ति-नाश की ज़िम्मेदारी है और इसी के कारण हज़ारों निर्दोष व्यक्तियों को भीषण आर्थिक सङ्कटों का सामना करना पड़ रहा है। इसमें सम्मिलित होने वालों में अधिकांश भारतीय हैं, जिन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध इसमें लाया गया है।

"मसूरी में नेताओं की हाल ही की कॉन्फ़्रेन्स में श्री० जे० एम० सेन गुप्त तथा श्री० के० एफ़० नरीमेन की विज्ञप्ति और पण्डित मोतीलाल नेहरू के व्यापारियों की आन्दोलन स्थगित करने की प्रार्थना को ठुकराने से मुझे यह प्रतीत होता है कि कॉङ्ग्रेस को कुचलने का अब आख़िरी प्रयत्न करना पड़ेगा और यही प्रयत्न इस ऑर्डिनेन्स द्वारा आज (शुक्रवार को) किया गया है।

"मुझे और मेरी गवर्नमेण्ट को यह स्पष्ट हो गया है कि १९०८ के 'क्रिमिनल-लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट" में वह शक्ति नहीं है जिससे वर्तमान स्थिति का पूर्णरूप से सामना किया जा सके। इसलिए इस आन्दोलन को कुचलने के लिए प्रान्तीय गवर्नमेण्टों को यह अधिकार प्राप्त होना चाहिए कि वे ग़ैरक़ानूनी संस्थाओं की अचल सम्पत्ति पर अपना अधिकार जमा सकें और उन संस्थाओं के उपयोग में आने वाली चल सम्पत्ति ज़ब्त कर सकें।

"यह भी मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि ये आदेश उन्हीं संस्थाओं के लिए हैं, जो ग़ैरक़ानूनी घोषित कर दी गई हैं और जो ऑर्डिनेन्स के घोषित होते ही जारी हो जायँ। पर यह ऑर्डिनेन्स उन संस्थाओं की सम्पत्ति के सम्बन्ध में लागू नहीं होगा जो इसके बाद ग़ैरक़ानूनी घोषित की जायँगी।

नए ऑर्डिनेन्स के जारी होते ही पहला प्रहार बम्बई पर हुआ। वहाँ के सरकारी गज़ट के असाधारण अङ्क में प्रकाशित एक विज्ञप्ति से पता चलता है कि बम्बई गवर्नमेण्ट ने ८६ कॉङ्ग्रेस संस्थाएँ (आश्रम या छावनियाँ) नए ऑर्डिनेन्स के अन्तर्गत ले ली हैं।

अहमदाबाद का ११वीं अक्टूबर का समाचार है कि गुजरात प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी ग़ैरक़ानूनी घोषित कर दी गई और उसके सेक्रेटरी श्री० एम० मुरारजी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। प्रान्तीय कमिटी के दफ़्तर पर वहाँ की पुलिस ने अपनी सील लगा कर क़ब्ज़ा कर लिया है।

बम्बई के अंगरेज़ सारजन्ट पर गोली चली

१५ गोलियाँ दाग़ी गईं :: सार्जेन्ट और उसकी स्त्री घायल

बम्बई का १०वीं अक्टूबर का समाचार है कि जब सार्जेण्ट टेलर अपनी पत्नी तथा श्रीमती किङ्ग के साथ सवेरे विक्टोरिया कार्निवल से लौट कर लैमिङ्गटन रोड के पुलिस थाने में प्रवेश कर रहे थे तब उन्होंने कुछ दूरी पर एक मोटर में तीन आदमियों को देखा। एक क्षण के बाद उसी ओर से गोलियाँ आने लगीं। जब तक सार्जेण्ट टेलर के हाथ में गोली नहीं लगी तब तक पुलिस अफ़सर गोलियों को पटाखों की आवाज़ समझता रहा। इसके बाद एक के बाद एक १५ गोलियाँ चलीं। एक श्रीमती टेलर की जाँघ में लगी और वे आहत हो गईं। गोलियाँ चला कर घातक मोटर पर पूरी तेज़ी से रफ़ूचक्कर हो गए। एक दूसरी मोटर में उनका पीछा करने को कोशिश की गई, पर उन्होंने उस मोटर के पहिए में पिस्तौल की गोली से पङ्कचर कर दिया था। श्री० टेलर और उनकी पत्नी पुलिस अस्पताल भेज दिए गए हैं।

सी० आई० डी० पुलिस ने इस सम्बन्ध में श्री० कमलादेवी चट्टोपाध्याय और एक डॉक्टर के घर की तथा एक कपड़े की दूकान की तलाशी ली है। पुलिस ने स्वतन्त्र-भारत-सभा के, जो हाल ही में स्थापित हुई है, १८ सदस्यों को सन्देह में रोक लिया है। उनमें से किसी की उमर २० वर्ष से अधिक नहीं है। गिरफ़्तारों में अन्धेरी के ज़मींदार शङ्कर बी० शिन्दे भी हैं। जिनकी मोटर में, कहा जाता है कि बैठ कर घातक ने गोली चलाई थी। इनमें तीन, गवर्नमेण्ट के नौकर भी हैं। जाँच अभी जारी है।

जिस मोटर पर से यह काण्ड हुआ है, उसका ड्राइवर बापट गिरफ़्तार हो गया है। उसका कहना है कि मोटर में तीन घातकों के साथ एक स्त्री, उसका पति और उनका एक आठ वर्ष का लड़का भी था। इस काण्ड का मुख्योद्देश्य पुलिस अफ़सरों को मार कर भगतसिंह के दण्ड का बदला लेना था। पार्टी दिन भर पुलिस अफ़सरों की खोज में चक्कर लगाती रही और अन्त में टेलर के ऊपर आक्रमण किया। गुजराती स्त्री ने भी टेलर की ओर गोली चलाई थी। मालूम होता है इस मामले में बापट एप्रूवर बनाया जायगा।

बिहार में 'कॉङ्ग्रेस राज्य'

बिहार में 'कॉङ्ग्रेस की अदालतें'

बिहार प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी की (२७ सितम्बर से लेकर ३ अक्टूबर तक की) साप्ताहिक रिपोर्ट से मालूम पड़ता है कि इस सप्ताह में सारन, मुज़फ़्फ़रपुर, चम्पारन, मुँगेर और दरभङ्गा के बहुत से गाँवों में कॉङ्ग्रेस द्वारा पञ्चायतें स्थापित की गई हैं और वे अपने गाँवों के झगड़ों का फ़ैसला भी करने लगी हैं। चम्पारन ज़िले की सुगौली थाने की केवल एक पञ्चायत ने एक सप्ताह में २९० मामलों का फ़ैसला किया है। सरकारी अदालतों के बहिष्कार की ओर समस्त प्रान्त में धीरे-धीरे, पर गम्भीरता के साथ पग बढ़ाया जा रहा है। चौकीदारी करबन्दी की ओर पहिले ही से दृष्टि है। सभी ज़िलों के कार्यकर्ताओं ने यह अच्छी तरह समझ लिया है कि ग्राम्य-सङ्गठन की दृढ़ता पर ही चौकीदारी करबन्दी की सफलता निश्चित है। प्रान्त के अनेक अनुभवी नेताओं के जेलों से वापिस आ जाने के कारण आन्दोलन में नई स्फूर्ति आ गई है।

यद्यपि इस सप्ताह प्रान्त के सभी ज़िलों से गिरफ़्तारियों की पूरी रिपोर्ट नहीं मिली है, तथापि प्राप्त समाचार पत्रों से मालूम पड़ता है कि इस सप्ताह कुल २४१ व्यक्ति ही गिरफ़्तार किए गए हैं। प्रान्त के अब तक कुल ८,९२७ व्यक्ति गिरफ़्तार हो चुके हैं।

स्वयंसेवक विदेशी बहिष्कार का प्रचार करने के लिए सदैव शहरों की सड़कों पर गश्त लगाते पाए जाते हैं। समय-समय पर विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाती है। पटना ज़िले के गाँवों के मुखियों और चौधरियों से प्रतिज्ञा कराई जाती है कि वे अपने गाँव में विदेशी वस्त्र न बिकने दें। चम्पारन के गाँवों में तो यह प्रतिज्ञा कराई जा रही है कि जो व्यक्ति विदेशी वस्त्र ख़रीदेगा उसे ५ से लेकर २५ रुपया तक जुर्माना देना होगा जो कॉङ्ग्रेस के हवाले किया जायगा। पञ्चायतें उनका सामाजिक बहिष्कार भी कर सकती हैं। जनता समझने लगी है कि बहिष्कार द्वारा हमारी जेब में कुछ पैसे भी बढ़ेंगे। इसलिए और-और चीज़ों का बहिष्कार भी प्रारम्भ हो गया है। विदेशी चीनी का बहिष्कार हो गया है।

प्रान्त में सभी स्थानों पर शराब और गाँजे की दुकानों पर धरना जारी है। इधर सरकार भी शराब बिकवाने का मन्सूबा बाँधे हुए है। समाचार आया है कि सरकार ने गरखा थाने के बरामदे में भट्टी खुलवाई है। पहिला ख़रीदार भी आबकारी सुपरिण्टेण्डेण्ट का मोटर ड्राइवर उनकी प्रेरणा से तैयार हुआ है। मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले के लालगञ्ज में आबकारी के सिपाही और गाँवों में चौकीदार शराब और गाँजे की फेरी कर बेंच रहे हैं। सोनपुर थाने की परमानन्दपुर की भट्टी पर धरना देने वाले दो स्वयंसेवकों के छुरा भोंक दिया गया। भगवान की कृपा से चोट नहीं आई।

चौकीदारी करबन्दी आन्दोलन ज़ोर पकड़ रहा है। मुङ्गेर ज़िले के जमुई सब-डिवीज़न के सिकन्दरा थाने के बारह गाँवों ने चौकीदारी कर न देने का निश्चय कर लिया है। समय आने पर गाँव वाले गोली खाने तक को तैयार हैं। बरेजा में साल भर के लिए अतिरिक्त पुलिस बैठाई गई है। वहाँ पचास पञ्जाबी जवानों तथा पचास गोरखों ने डेरा जमा रक्खा है। इनका ख़र्च गाँव वालों से वसूल किया जायगा। इस केन्द्र में बीस गाँवों में चौकीदारी-कर बन्द है। खड़गपुर (मुङ्गेर) के तेरह चौकीदारों ने इस्तीफ़ा दे दिया है।

*　*　*

शहर और ज़िला

—इलाहाबाद में ६वीं अक्टूबर की रात्रि को बहादुरगञ्ज में गाँजा और भाँग की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण चार गिरफ़्तारियाँ हुईं। मालूम हुआ है कि कॉङ्ग्रेस वालण्टियरों को कुछ आदमियों ने मारा था। दो पर लाठियों की चोटें पड़ी हैं।

—पत्थर गली की शराब की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में देव शङ्कर को छः मास की सख़्त क़ैद और ५० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई। जुर्माना न देने पर १॥ माह की क़ैद और भोगनी पड़ेगी।

—कटरा जथा के श्री० किशोरीलाल को राजापुर की चरस की दुकान पर पिकेटिङ्ग करने के कारण, ६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई। किन्तु इसके साथ पकड़े गए स्वयं सेवक को कुछ दूर ले जाकर छोड़ दिया गया।

—१५ अक्टूबर की शाम को कटरा सत्याग्रह-आश्रम और जत्थे का स्वयंसेवक पं० बालकृष्ण भट्ट भी राजापुर गाँजा-भाँग की दूकान पर धरना के अपराध में पकड़ा गया।

पं० कृष्णकान्त मालवीय को दण्ड

'अभ्युदय' के सम्पादक और एसेम्बली के भूतपूर्व सदस्य श्री० कृष्णकान्त मालवीय को कानपुर के ज़िलाधीश ने दफ़ा १२४ ए के अभियोग में एक साल की सख़्त क़ैद को सज़ा दी है। आप 'ए' क्लास में रक्खे गए हैं।

—'चाँद' के प्रकाशक श्रीयुत रामरखसिंह जी सहगल से यू० पी० गवर्नमेण्ट ने १०००) की जो ज़मानत माँगी थी, १३ अक्टूबर को वह जमा कर दी गई और अब 'चाँद' का अक्टूबर का अङ्क, जो छपा हुआ रक्खा था, प्रकाशित होगा। पाठकों को स्मरण होगा कि 'फ़ाइन आर्ट प्रिंटिङ्ग कॉटेज' (चाँद-प्रेस) से पहले ही एक हज़ार की ज़मानत ली जा चुकी है।

—इलाहाबाद के स्वराज्य-भवन में एक कॉङ्ग्रेस अस्पताल खोला गया है। इसका इन्तज़ाम डॉ० जे० एन० मल्लिक एम० बी० करते हैं।

—पं० जवाहरलाल नेहरू १४ तारीख़ को सुबह देहरादून पहुँच गए और दोपहर तक कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ताओं से भेंट करके मसूरी रवाना हो गए।

—विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिङ्ग जारी है। कुछ दुकानदार विलायती कपड़े की सीलबन्द गाँठें सिविल लाइन में ले जाकर बेचने का प्रयत्न कर रहे हैं। गत ६ वीं अक्टूबर को जब श्री० बनवारीलाल गिरधारीलाल एक ठेले में अपना विलायती कपड़ा सिविल लाइन में लिए जा रहे थे, कॉङ्ग्रेस के वालण्टियरों ने घण्टाघर के पास ठेला रोक लिया। पुलिस ने जब उनसे सहायता लेने को कहा तो उन्होंने उसकी सहायता से साफ़ इनकार कर दिया। पीछे पुलिस ने इस सम्बन्ध में कोठापारचा में रहने वाले प्रो० एन० बी० मित्र के लड़के महेशचन्द्र मित्र को गिरफ़्तार किया। १३ ता० को उसका मुक़द्दमा मि० ग्रोस की अदालत में पेश हुआ। अभियुक्त ने बयान देने से इनकार किया और उसे छः मास की क़ैद तथा ५०) जुर्माने की सज़ा दी गई। जुर्माना न देने पर डेढ़ मास की क़ैद और भोगनी होगी।

पुरुषोत्तमदास टण्डन की घोषणा

शक्ति की आराधना करो

इलाहाबाद के भूतपूर्व 'डिक्टेटर' श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन जेल से छूट कर १४ तारीख़ को यहाँ आ गए। १२ तारीख़ को बस्ती जेल से छूटते ही उन्होंने अपना कार्य आरम्भ कर दिया और उसी दिन शाम को ३ बजे एक सार्वजनिक सभा में व्याख्यान दिया। एक सम्वाददाता से उन्होंने कहा कि—"जेल से बाहर आकर मुझे नए ऑर्डिनेन्स की ख़बर मालूम हुई और इससे मैं बड़ा प्रसन्न हूँ। अगर हममें कुछ सचाई है तो हमको अब और भी दृढ़ बन जाना चाहिए, और कॉङ्ग्रेस के प्रोग्राम को नया स्वरूप देना चाहिए।" उन्होंने यह भी कहा कि बायकॉट बराबर जारी रहेगा। शाम के समय उनको बधाई देने के लिए पुरुषोत्तमदास पार्क में एक विराट सभा हुई। सभापति का आसन श्रीमती मदनमोहन मालवीय ने ग्रहण किया था। कितने ही प्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं की बधाइयों के बाद टण्डन जी ने उठ कर सबको धन्यवाद दिया और कहा कि नए ऑर्डिनेन्स से यह सिद्ध होता है कि अभी कॉङ्ग्रेस का काम ठण्डा नहीं पड़ा है। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी शक्ति की परीक्षा का असली समय तो अब आ रहा है। संसार में जितने आन्दोलन होते हैं, चाहे वे हिंसात्मक हों या अहिंसात्मक, उनका आधार शक्ति पर ही रहता है, और हमको शक्ति की देवी की ही उपासना करनी चाहिए।

—ठाकुर बहादुरसिंह और रुद्रनाथ शुक्ल को विलायती कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के कारण ६ महीना की सख़्त क़ैद और ५० रुपया जुर्माने की सज़ा हुई। जुर्माना न देने पर १॥-१॥ मास की क़ैद और भोगनी पड़ेगी।

—बहादुरगञ्ज की गाँजे-भाँग की दुकान पर जो चार स्वयंसेवक अब्दुल मुईद ज़ैदी, पुरुषोत्तमदास, नर्बदा और सीतला सहाय गिरफ़्तार हुए थे, उनका फ़ैसला १३ तारीख़ को सिटी मैजिस्ट्रेट मि० ग्रोस ने सुना दिया। नर्बदा ने कहा कि मैं पिकेटिङ्ग नहीं करता था। उसके क्षमा-प्रार्थना करने पर मैजिस्ट्रेट ने उससे छः महीने के लिए १००) का मुचलका लिखवा लिया। शेष तीन अभियुक्तों को छः-छः महीने की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—इलाहाबाद के ईविङ्ग क्रिश्चियन कॉलेज पर से किसी ने दशहरे की छुट्टियों में राष्ट्रीय झण्डे को हटा दिया था। १३ तारीख़ को दिन के एक बजे वह फिर प्रो० बी० एन० मित्र के हाथों लगवा दिया गया।

—६ वीं अक्टूबर को दारागञ्ज में श्री० महेशप्रसाद शराब की दूकान पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। उनको छः मास की क़ैद और १५०) जुर्माने की सज़ा दी गई।

—इलाहाबाद यूनिवर्सिटी का वार्षिक उपाधिवितरण-उत्सव २२ नवम्बर को मनाया जायगा। इस अवसर पर भारत के सुप्रसिद्ध ऐतिहासज्ञ सर जदुनाथ सरकार भाषण देंगे।

* * *

—नजीबाबाद (बिजनौर) कॉङ्ग्रेस कमेटी के एक उत्साही कार्यकर्ता श्रीयुत लाल जी नगीना में गिरफ़्तार कर लिए गए। उन पर बिजनौर में मुक़द्दमा चलेगा।

—बिजनौर में बाबू सोमदेव शर्मा और पण्डित जगदीशप्रसाद पाठक दफ़ा १०८ के अनुसार पकड़े गए हैं।

—बिलारी (मद्रास) में कॉङ्ग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी श्री० के० सुब्बाराव को दफ़ा १०८ के अनुसार एक साल की सज़ा दी गई है।

—दिल्ली के एडिशनल मैजिस्ट्रेट ने प्रभुदयाल और मुहम्मद यूसुफ़ को दफ़ा १७ में तीन-तीन महीने की क़ैद और ५०-५० रुपया जुर्माने की सज़ा दी है। महिला स्वयंसेविकाओं की कप्तान श्रीमती मेमो बाई को १००) रुपया जुर्माने या दो मास की क़ैद की सज़ा दी गई है।

* * *

(पहले पृष्ठ का शेषांश)

परन्तु आज कॉङ्ग्रेस में छोटी-बड़ी सभी जातियाँ सम्मिलित हैं और उन प्रगतिशील लोगों के लिए आन्दोलन को दबाना असम्भव है।

यदि लॉर्ड इर्विन या उनके सहयोगी भारतीयों की मनोवृत्ति का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, तो वे पहाड़ की शिखरों पर से उतर कर बाज़ारों, खेतों और फ़ैक्टरियों में क्यों नहीं जाते? परन्तु वे यह करें ही क्यों? उनका रास्ता तो दूसरा ही है। वे तो सत्य के ऊपर पर्दा डाल कर, उसे कुचल कर, ऑर्डिनेन्सों के द्वारा उसका प्रभाव रोकना चाहते हैं और फिर बाद में फ़ौज और पुलिस की प्रशंसा के पुल बाँधने लगते हैं।

कॉङ्ग्रेस के आगे के कार्य के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि जिस प्रकार अभी तक कॉङ्ग्रेस विदेशी कपड़े का बहिष्कार, विलायती माल का बॉयकॉट, नमक-सत्याग्रह और शराबबन्दी का आन्दोलन करती आई है वह उसी प्रकार जारी रहेगा और उनमें किसी से किसी प्रकार का समझौता नहीं हो सकता। व्यापारियों का त्याग निस्सन्देह बहुत प्रशंसा के योग्य है, पर किसी काँङ्ग्रेस कमिटी को किसी विदेशी कपड़े के व्यापारी से समझौता करने का अधिकार नहीं है। देश के सामने नया कार्य लगानबन्दी का है। देश के कुछ भागों में यह आन्दोलन प्रारम्भ हो गया है, परन्तु अन्य भागों में अब इसका प्रचार किया जावेगा। हमारे इस युद्ध का पहला कार्य राष्ट्रीय जागरण था जो पूर्ण हो चुका है। अब आन्दोलन दूसरे क्षेत्र में पदार्पण कर रहा है—और वह क्षेत्र है भविष्य के स्वतन्त्र भारत की नींव स्थापित करना। और अब हर एक शहर, हर एक गाँव और हर एक मुहल्ले को भारत की विराट स्वतन्त्रता के लिए अपने बाह्य बन्धनों से मुक्त होकर स्वतन्त्रतावादी हो जाना चाहिए।

गोलमेज़ परिषद के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि "जब लन्दन में वकील लोग छोटी-छोटी बातों पर बहस करेंगे और मिथ्याधिकारों के लिए लड़ेंगे तब हम भारत में वास्तविक शक्ति प्राप्त करने के लिए युद्ध करेंगे।"

अन्त में उन्होंने वायसराय की हिंसा और अहिंसा की विवेचना का उल्लेख करते हुए कहा कि "किसी ऐसे व्यक्ति के मुख से जो हिंसात्मक वायु-मण्डल में पला हो और जो सदैव हिंसा के पक्ष में रहा हो अहिंसा का उपदेश सुन कर हँसी आती है। भगतसिंह ने क़त्ल का अपराध किया है, परन्तु वह ब्रिटेन की आँखों में अपराधी नहीं है, क्योंकि हिंसा उसका धर्म है। अपराधी वह म० गाँधी की आँखों में है, जिनका समस्त जीवन ही अहिंसा का अवतार रहा है।" अहिंसात्मक आन्दोलन पर अपना दृढ़ विश्वास दिखाते हुए उन्होंने देश से अहिंसात्मक रहने की प्रार्थना की और कहा कि उसी में देश की मुक्ति है।

* * *

भविष्य की नियमावली

१. 'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२. किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३. लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़ हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४. हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५. कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६. लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७. समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।

८. परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९. सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०. किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर
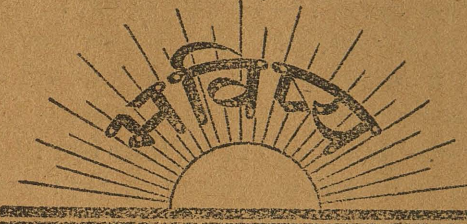
१६ अक्तूबर, सन् १९३०

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

अछूत

[डॉक्टर धनीराम 'प्रेम', लन्दन]

रामपुर, जहाँ मैं पैदा हुआ था, एक छोटा सा क़स्बा था। परन्तु सङ्गीत अच्छा जानने के कारण दूर-दूर के लोग मेरा नाम जानते थे। सङ्गीत एक प्रकार से मेरा पेशा हो गया था, क्योंकि महीने में पचीस दिन मैं बाहर गाने के लिए जाया करता था।

इस बार कासगञ्ज के एक रायसाहब के यहाँ वर्षों की कठिन तपस्या के बाद एक पुत्र उत्पन्न हुआ था; अतः उसके उपलक्ष में उन्होंने अनेकों मित्रों को निमन्त्रित करके पाँच दिन उत्सव मनाने का निश्चय किया। मुझे रायसाहब ने बुलाया तो मित्र की हैसियत से था, परन्तु था तो मैं एक गायक। लोगों के आग्रह से प्रत्येक सन्ध्या को मुझे कुछ गाने, गाने पड़े।

रायसाहब के घर के पास ही कुछ छोटी सी मड़ैयाँ कुछ चमारों ने डाल रक्खी थीं। अधिकांश इनमें से राज-मज़दूर थे। तीसरी सन्ध्या को मैं जब रायसाहब के द्वार से निकला तो मेरे सामने एक चौदह वर्ष की बालिका आकर खड़ी हो गई। मैं रुक गया। उसने एक गुलाब के फूलों का गुच्छा मेरी ओर करके नीचे को दृष्टि कर ली। मैंने गुच्छा उसके हाथ से लिया और पूछा:—कितने का है यह?

"कितने का भी नहीं।"

"इसका क्या अर्थ?"

वह चुप रही। मैंने कुछ क्रोध का भाव दिखा कर कहा—क्या बेचना नहीं है?

"नहीं।"

"तो यहाँ इसे लेकर क्यों खड़ी हो गई थी?"

"देने के लिए।"

"किसे?"

"आपको।"

"मुफ़्त?"

"भेंट।"

"भेंट? और मुझे?"—मैंने उत्सुक होकर पूछा।

"हाँ।"—उसने उसी सरलता से कहा।

"परन्तु मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं।"

"मैं आपको जानती हूँ।"

"वह कैसे?"

"आप रायसाहब की महफ़िल में गाना गाते हैं?"

"हाँ।"

"ऐसे।"

"परन्तु यह भेंट किस लिए?"

"एक गाने के लिए, केवल भक्ति-भाव से।"

"तुमने मुझे गाते हुए देखा था?"

"नहीं।"

"फिर तुम यह कैसे जानती हो कि मैं ही गाने गाता हूँ?"

"रायसाहब के नौकर ने कृपा करके बता दिया था।"

"तुम भीतर क्यों नहीं आईं?"

"मैं वहाँ कैसे जा सकती हूँ?"

"क्यों? वह तो सब के लिए खुली है!"

"परन्तु कुछ लोग हैं, जो सब में शामिल नहीं हैं।"

"क्यों?"

"क्योंकि वे अछूत हैं!"

"तुम अछूत हो?"—मैंने उछल कर पूछा।

"हाँ, मैं चमारी हूँ!"—उसने मर्म-भरी वाणी से कहा। मैं उससे एक क़दम दूर हट गया। मेरे माथे पर क्रोध से बल पड़ गए। मैंने उसे डाँटते हुए कहा—

"चमार की बच्ची, पहले ही क्यों न कह दिया?"—यह कह कर मैंने उसके फूल पृथ्वी पर फेंक दिए। उसके नेत्रों में आँसू छलछला आए। काँपते हाथों से उसने वे फूल उठाए और काँपते हुए शब्दों में वह बोली:—

"मैं नहीं जानती थी कि आप भी ऐसे ही होंगे। क्यों आप अपना गाना बाहर निकलते ही भूल गए? वह एकता और समानता का राग केवल महफ़िल के ही लिए था? मैं समझती थी कि आप ही संसार में ऐसे हैं, जो ऊँच-नीच का भेद नहीं मानते। मैं आप ही को भगवान समझने लगी थी। नित्य नियम से इस कोने पर आकर उस गाने को सुनती थी और नित्य मेरी भक्ति आप में बढ़ती जाती थी। परन्तु मुझे क्या मालूम था कि वह केवल एक गान था! ख़ैर! मेरी धृष्टता को क्षमा करना।" वह झोपड़ों की ओर मुड़ कर चलने लगी। मैंने उसे पुकार कर कहा—ठहरो!

वह खड़ी हो गई। मैंने उसके पास जाकर पूछा—वह कौन सा गान तुमने सुना था!

एक पिता के सब सन्तान?

"पूरा गा सकती हो?"

"हाँ।"

"सुना सकोगी?"

"सुना सकूँगी, परन्तु सुनाऊँगी नहीं।"

"मेरे व्यवहार के कारण? परन्तु यह मेरी भूल थी। वह गाना मैंने सैकड़ों बार गाया है, परन्तु कभी उसका अर्थ नहीं समझा। और लोगों ने उसे बीसियों बार सुना है, तालियाँ बजाई हैं, 'वन्समोर' के नारे बुलन्द किए हैं, परन्तु केवल मेरे स्वर के कारण। कितनों ने उसका अर्थ समझा था? आज तुम एक मिली हो, जिसने स्वर के लिए नहीं, प्रत्युत उसके अर्थ के लिए उस गान की प्रशंसा की है। यही नहीं, तुमने आज दो शब्द कह कर ही मुझे इसका अर्थ समझा दिया है। तुमने उसे एक ब्राह्मण के मुख से सुना था। मैं उसे एक चमारी के मुख से सुना चाहता हूँ। गाओगी?"

"अच्छा।"

"यहीं, उस नीम के नीचे, अभी।"

"अच्छा!"

उसने गाना गाया—

एक पिता के सब सन्तान,
कोई बड़ा न छोटा हममें, सब हैं एक समान
वैश्य, ब्राह्मण, चमार, नाई,
हिन्दू, मुस्लिम या ईसाई।
यह सब कृत्रिम भेद-भाव है, इनमें तत्व न जान;
लग जा सबके गले प्रेम से, तज झूठा अभिमान;
सबका एक वही भगवान॥
एक पिता के सब सन्तान,
कोई बड़ा न छोटा हममें, सब हैं एक समान॥

कमाल कर दिया था। दूर से सुनने पर भी, बिलकुल मेरी नक़ल की थी। स्वर में एक दलित-हृदय की वेदना थी, जिसने उसके गान में स्वाभाविकता कूट-कूट कर भर दी थी। मालूम होता था कि 'समता की देवी' स्वयं आकर वह सन्देश सुना रही थी। मैंने उसे शाबाशी देकर पूछा—तुम्हें यह गाना अच्छा लगता है?

"ख़ूब।"

"तुम बड़ा अच्छा गाती हो।"

"सुनने वाला कौन है?"

"तुम्हारे घर कोई नहीं?"

"नहीं।"

"माँ-बाप?"

"मर गए।"

"अकेली रहती हो?"

"एक दूर के चचा हैं, उनके पास।"

"करती क्या हो?"

"जो चमार करते हैं। गोबर बीन लाती हूँ और कण्डे बेच देती हूँ।"

"यह फूल कहाँ से लाई थीं?"

"मोल।"

"पैसे देकर?"

"कोई मुफ़्त भी चीज़ मोल देता है?"—वह हँस कर बोली।

"पैसे कहाँ से लाई थीं?"

"आज कण्डे बेचे थे।"

"खाने को अब कहाँ से लाओगी?"

"कल का थोड़ा सा आटा रक्खा है।"

मैंने उसके हाथ से फूल ले लिए और एक चवन्नी निकाल कर उसे दी। वह चवन्नी मेरे हाथ में लौटा कर बोली—यह मैं न लूँगी।

"तुमने मुझे फूल दिए हैं।"

"मैं यह नहीं चाहती।"

"फिर क्या चाहती हो?"

"देंगे आप?"

"अवश्य।"

"एक बार स्वयं इस गाने को गाकर सुना दीजिए!"

"बस?"

"यह क्या कम है? ख़ासकर एक चमारी के लिए।"

"कल तुम्हें यहीं आकर सुनाऊँगा?"

"मेरा नाम 'गङ्गा' है। आप पुकार लेंगे?"

"हाँ, गङ्गा!"

जब हम चलने लगे तो वह बोली—जाकर आपको स्नान करना पड़ेगा!

"क्यों?"

"एक चमारी से छू गए?"

"अब नहीं। एक अछूत से छूकर मैं पवित्र हो गया?"

* * *

दूसरे दिन मैं रायसाहब की कोठी के पास पहुँचा तो देखा कि गङ्गा मेरी प्रतीक्षा कर रही है। मुझे देखते ही वह प्रसन्न होकर बोली—आप आ गए?

"क्या तुम समझती थीं कि मैं नहीं आऊँगा?"

"मैं......मैं कुछ नहीं जानती।"

"नहीं, ठीक बताओ।"

"नाराज़ तो नहीं होंगे?"

"नहीं।"

"मैं समझती थी कि आप नहीं आएँगे।"

"क्यों?"

"क्योंकि आप पण्डित जी हैं और........"

"और तुम चमारी हो?"

"हाँ।"

"परन्तु पण्डित अपनी बात अवश्य रखते हैं।"

"सच?"

"सच।"

"शायद रखते हों।"

"देखो, मैं आया या नहीं ?"

"आप वैसे पण्डित थोड़े हैं। नहीं तो एक चमार की लड़की से कोई पण्डित इस प्रकार बातें करता ?"

"ठीक है, गङ्गा मैं 'पण्डित' नहीं हूँ।"

"यह ठीक है, आप 'पण्डित' नहीं हैं।"

"जानती हो, फिर मैं कौन हूँ ?"

"हाँ।"

"बताओ ?"

"देवता।"

वह नीचा सर किए कुछ देर खड़ी रही, फिर मैंने कहा—अच्छा गङ्गा, फिर देवता का गाना सुनोगी ?

"यहाँ ?"

"नहीं, तुम्हारे झोंपड़े के सामने।"

"वहाँ ?"

एक पिता के सब सन्तान।
कोई बड़ा न छोटा हम में, सब हैं एक समान॥

वह झूमने लगी। उसके नेत्रों से एक अपूर्व ज्योति निकल रही थी। वह यह भूल गई थी कि वह चमारी थी या मैं ब्राह्मण था। शायद उसके मस्तिष्क के सामने एक संसार घूम रहा था, जिसमें या तो एक भी प्राणी न था और या सब एक ही प्रकार के थे। वह स्वयं शान्त बैठी थी, परन्तु मेरे शब्दों के साथ वह अपने हृदय को नचा रही थी। मैं उसकी ओर देखता जाता था और गाता जाता था। उस गाने में मुझे कभी इतने आनन्द का आभास नहीं हुआ था। मुझे उसका आदि-अन्त सब भूल गया था। मैं समझ गया कि उसी राग को मेरी आत्मा वर्षों से गा रही थी, परन्तु मैंने सुना नहीं था। मेरा राग इसलिए बेसुर हो जाता था। परन्तु, आज ? आज आत्मा के स्वर के साथ मेरा स्वर मिल रहा था। मेरा भौतिक-राग आत्मा के उस अदृष्ट तथापि सत्य राग में लीन हो

गाएँगे ? क्या पुजारी जी सब को गले लगाने के लिए तैयार होंगे ? क्या चमार और भङ्गी से कोई घृणा न करेगा ?"

"परन्तु चमार-भङ्गी से घृणा करने का तो कारण है।"

"क्या ?"

"वे गन्दे कपड़े पहनते हैं।"

"उनका इसमें क्या दोष है ?"

"और किसका दोष है ? उनके कपड़े भी कोई और धो जायगा ? ज़रा सा साबुन लगाते हुए उनकी जान निकलती है ?"

"परन्तु इसमें उनका दोष कहाँ है ? उनके पास इतने पैसे कहाँ जो साबुन लाकर कपड़े धोवें ? खाने के तो लाले पड़े रहते हैं। यह सारा दोष इन ब्राह्मण और वैश्यों का है। उनसे गन्दे-गन्दे तो कराते हैं काम और फिर देते हैं दिन भर में चार टके। उसमें वे क्या-क्या कर लें ? क्या पहनें और क्या धोएँ ? यदि उनको भी दो

अछूतों का फ़ुटबॉल

पण्डित जी अछूतों के बहिष्कार का फ़तवा देकर उसे ठुकरा रहे हैं और मौलवी तथा पादरी साहब अछूत रूपी गेंद को लोक रहे हैं !!

"क्यों ?"

"वहाँ साफ़ जगह नहीं है।"

"कोई परवाह नहीं। किसी पेड़ के नीचे बैठ जायँगे।"

"अच्छा !"

गङ्गा की झोंपड़ी के सामने ही एक पीपल का पेड़ था। उसीके नीचे चमारों ने एक चबूतरा बना लिया था। मैं उसी चबूतरे पर बैठना चाहता था कि गङ्गा बोली—अभी ठहर जाइए।

"क्यों ?" मैंने पूछा।

"ज़रा सा ठहर जाइए"—कह कर वह वहाँ से एक झोंपड़े की ओर गई और कुछ ही देर में एक मोढ़ा लेकर आ गई। मैंने पूछा—यह किस लिए ?

"आपके बैठने के लिए। और हम ग़रीबों के यहाँ क्या है ?"

मैं मोढ़े पर बैठ गया। वह मेरे पास चबूतरे पर बैठ गई। मैंने गाना प्रारम्भ किया—

गया था, फिर मैं उसके आदि-अन्त को कैसे समझ पाता ? मेरी भाव-भङ्गी टूटी, जब कि मैंने गङ्गा को अपने साथ ही गाते हुए सुना—

यह सब कृत्रिम भेद-भाव है, इसमें तत्व न जान,
लग जा सबके गले प्रेम से, तज झूठा अभिमान।
सबका एक वही भगवान !

गङ्गा ने मेरे पैर को पकड़ कर मेरे जूते पर अपना सर रख दिया। उसके नेत्रों से आँसू निकल रहे थे। मैंने उसके सर पर हाथ रख कर कहा—गङ्गा।

"हाँ।"

"अब तुम सन्तुष्ट हो ?"

"सन्तुष्ट ? इससे अधिक गहरा कोई शब्द हो तो वह मैं हूँ। कई दिनों की मेरी कामना आज सफल हुई है। मैंने आपके मुख से स्वयं यह गान सुन लिया, मेरा यह सौभाग्य है। बताइए, क्या कभी सारे मनुष्य इसी प्रकार का गान गाने लगेंगे ? क्या रायसाहब इसी प्रकार कभी

रुपया रोज़ मिलें और घास, कण्डे, चमड़ा आदि से हाथ न लगा कर दफ़्तर में बैठ कर काम करने को मिले तो वे भी आप लोगों के से कपड़े पहनने लगें। और फिर क्या घृणा का यही कारण है ?"

"और क्या ?"—मैंने लज्जित होकर कहा। उसकी बातों का उत्तर मेरे पास क्या था। वह बोली—यदि मैले कपड़े ही घृणा का कारण हैं तो यह हलवाई रोज़ गन्दे कपड़े पहने रहते हैं, इनकी बनाई हुई मिठाई लोग क्यों खा लेते हैं ? भड़भूँजा गन्दे कपड़े पहनता है तो उसके हाथ का भुना हुआ दाना कैसे ग्रहण कर लेते हैं ? अनेकों ब्राह्मण गन्दे कपड़े पहन कर भीख माँगते फिरते हैं, उन्हें लोग फिर भी 'पण्डित जी' क्यों पुकारते हैं ? उनसे घृणा कर के उन्हें अछूत क्यों नहीं कह देते ?

मैं अपनी हार तो नहीं मानना चाहता था, परन्तु मन ही मन मैं अपने समाज के अन्याय के लिए लज्जित हो रहा था। उसे मैं क्या उत्तर देता ? वह ठीक कह रही

थी। हम पढ़े-लिखे उच्च वर्णों के लोग बहुधा इन 'गन्दे कपड़ों' की आड़ में ही अछूतों पर प्रहार करते हैं, परन्तु क्या वे गङ्गा के उन साधारण प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे?

मैंने अपनी प्रतिष्ठा बचाए रखने के लिए उस बात को वहीं समाप्त करना चाहा। मैंने कहा—गङ्गा, अभी तुम इन बातों को समझती नहीं हो। परन्तु यदि अछूत शुद्धता से रहेंगे तो कुछ दिनों में उनसे कोई भी छुआछूत न रक्खेगा।

"तो क्या यदि हम लोग साफ़ कपड़े पहनें और सफ़ाई से रहें तो ऊँची जात वाले हमें अपना लेंगे? हम भी उनके समान स्कूल में पढ़ सकेंगे? भगवान के दर्शन कर सकेंगे?"

"हाँ!"—मैंने धीरे से कहा, परन्तु मेरी आत्मा मुझे इस झूठ के लिए काट रही थी। क्या वह युग हिन्दू-समाज में इतना शीघ्र आ जायगा? असम्भव! परन्तु गङ्गा इससे बड़ी प्रसन्न हुई। शायद उसकी आत्मा इस असमानता पर जलती थी, इसीलिए समानता के समाचार उसके लिए इतने शान्ति और उल्लास के होते थे। वह चमारी थी, वह अपढ़ थी, वह मैली-कुचैली थी, परन्तु उसके भीतर एक सजीव हृदय और जागृत मस्तिष्क था। वह समझ सकती थी, वह अनुभव कर सकती थी। अछूतों की जिस जीवित आत्मा को ऊँचे हिन्दुओं ने कुचल कर नष्ट कर डाला है, उसका कुछ अंश उसमें शेष था। इसीलिए वह अपने सम्प्रदाय के लिए बलिदान कर सकती थी। जो अपने दिन भर की कमाई को समानता के एक गाने के लिए भेंट करके भूखी रहे, उसके समान हृदय नामधारी द्विजों में कितने निकलेंगे? परन्तु वे हृदय अत्याचारियों की छातियों में नहीं, पीड़ितों की छातियों में ही निवास करते हैं।

२

रायसाहब के यहाँ का उत्सव समाप्त हो चुका था। गङ्गा को मैंने एक नया गीत सिखाया था; उस दिन सन्ध्या को वह उसे गाकर सुनाने वाली थी, अतः मैं उसके झोंपड़े की ओर को चल दिया। रायसाहब के मकान से कुछ दूर मेरे मार्ग में एक महादेव का मन्दिर था। जब मैं उसके पास पहुँचा तो जो कुछ देखा, उससे विस्मित रह गया। कई लोग गङ्गा को सड़क की ओर को घसीट रहे थे। मुझे यह देख कर क्रोध आ गया। इन लोगों का इतना पतन, एक असहाय बालिका पर इतना अत्याचार! मैं दौड़ कर वहाँ पहुँचा और जिसने गङ्गा के कन्धे को पकड़ रक्खा था, उसका हाथ मैंने पकड़ लिया। वह और उसके साथी मेरी ओर विस्मय से देखने लगे और गङ्गा रोती हुई भाग कर मेरे पास खड़ी हो गई। मैंने उस मनुष्य से पूछा—इस लड़की को क्यों घसीट रहा है?

"मन्दिर में घुसना चाहती थी।"

"फिर, क्या हर्ज था?"

"भला कभी ऐसा हुआ है? चमार की औलाद और मन्दिर के ऊपर चढ़ आवे। इसका इतना दुस्साहस?"

"तो उसे सीधी तरह से क्यों नहीं कह दिया? इस प्रकार घसीटने की क्या आवश्यकता थी?"

"तो क्या उसके पैरों पड़ कर ख़ुशामद करते कि वह मन्दिर में न जाय? इन नीच लोगों को जितना ही मुँह चढ़ाओ, उतने ही धृष्ट होते जाते हैं। इनके लिए एक ही दवा है कि इनका सर कुचल दिया जाय।"

"अच्छा, कुछ दिन और देखो, शायद यह दवा तुम्हीं को पीनी पड़ेगी।"—यह कह कर मैंने गङ्गा का हाथ पकड़ा और उसके घर की ओर को चल दिया। वे लोग कुछ देर तक तो अवाक् होकर मेरे पीछे देखते रहे, फिर यह कह कर कि—"घोर कलजुग आ गया बाबा, अब ब्राह्मण भी चमार-भङ्गी की हिमायत करने लगे"—वे मन्दिर की ओर चले गए।

मार्ग में गङ्गा ने पूछा—क्या आप मन्दिर में जायँगे?

"क्यों?"

"मैं यह फूल लाई थी, क्या आप महादेव जी पर चढ़ा देंगे?"

"तुम महादेव जी पर फूल चढ़ाने क्यों गई थीं, गङ्गा?"

"उस दिन आपने कहा था न?"

"क्या कहा था?"

"कि यदि मैं साफ़ कपड़े पहनूँगी तो भगवान के दर्शन हो जायँगे।"

"इसीलिए तुमने कपड़े धोए हैं?"

"हाँ! मुझे आशा थी यदि स्नान करके साफ़ कपड़े पहन कर मन्दिर में जाऊँगी तो भगवान अपने दर्शन कर लेने देंगे। इसीलिए आज मैंने साबुन से कपड़े धोए थे।"

"गङ्गा!"

"हाँ!"

"तुम एक बात सुनोगी?"

"क्या?"

"उस दिन मैंने झूठ बोला था।"

"झूठ?"

"हाँ! झूठ। मैंने तुमसे कहा था कि यदि चमार साफ़ कपड़े पहनेंगे तो ऊँची जाति वाले उन्हें अपना लेंगे। परन्तु यह सत्य नहीं है। उस दिन मेरे ब्राह्मणत्व के अभिमान ने मुझे अन्धा कर दिया था। इसीलिए मैंने तुमसे वे बातें कही थीं। मैं नहीं जानता था कि तुम्हारी बुद्धि इतनी कुशाग्र है कि तुम मन्दिर में जाने के लिए तैयार हो जाओगी।"

"तो मेरी बात ठीक थी?"

"बिलकुल। अभी ब्राह्मण-वैश्यों में वह भाव उत्पन्न नहीं हुआ। कब होगा, कहा नहीं जा सकता। अभी एक 'अछूत' उनके लिए 'अछूत' है, चाहे वह पढ़ा-लिखा हो, शुद्ध-पवित्र रहता हो, सदाचारी हो, धनिक हो। उसने एक अछूत के घर उत्पन्न होने का जो अपराध किया है, वह समाज के न्यायालय में क्षम्य नहीं है। यह एक अत्याचार है, निरङ्कुशता है, हमारे समाज के नाम पर गहरी कलङ्क-कालिमा है; इसे कुछ लोग मानने लगे हैं, परन्तु वे असहाय हैं। समाज के सामने विद्रोह का झण्डा वे अभी उठा नहीं सकते।"

"परन्तु क्या महादेव जी भी इन बातों को नहीं समझते?"

"कौन से महादेव जी?"

"जो मन्दिर में बैठे हैं।"

"वे महादेव जी नहीं हैं।"

"तो फिर कौन हैं?"

"वह तो पत्थर की मूर्ति है। उसमें कुछ समझने की शक्ति है न करने की। उसके नाम पर यह ऊँचे आदमी चाहे जो कुछ करते हैं। यदि महादेव जी इस मन्दिर में होते तो वे कभी तुम्हें इस प्रकार घसिटने न देते। उनके यहाँ सब एक बराबर हैं।"

"वे कहाँ रहते हैं?"

"सब जगह।"

"यहाँ भी हैं?"

"वे यहाँ हैं, तुममें हैं, मुझमें हैं, सब में हैं।"

"क्या वे ही महादेव जी गिर्जे में भी हैं?"

"हाँ, सिर्फ़ नाम उनका वहाँ दूसरा है।"

वह बड़े भोलेपन से इन गुत्थियों को सुलझा रही थी। कुछ देर तक वह चुप रही और फिर बोली—आप कहते हैं कि महादेव जी ही गिर्जे में हैं?

"हाँ।"

"परन्तु वहाँ वे मन्दिर के महादेव जी की भाँति निर्दय भेद-भाव रखने वाले और नीचों से घृणा करने वाले नहीं हैं। गिर्जे के महादेव जी दयालु हैं, सबको एक दृष्टि से देखने वाले हैं। हमारे पड़ोस का मुरली जब से क्रिस्तान हुआ है, तब से वह सबके साथ जाकर गिर्जे में बैठता है। सब ईसाई उससे हाथ मिलाते हैं। जो पादरी साहब हमारे यहाँ आया करते थे वे कभी-कभी उसके साथ खाना खाया करते हैं। यही नहीं, जब कभी वह यहाँ आता है तो रायसाहब की कुर्सी पर बैठता है। एक दिन वह कह रहा था—'हिन्दू अपने भगवान से ईसाइयों के भगवान की ज़्यादा इज़्ज़त करते हैं। क्योंकि जब मैं हिन्दू था तो कोई मेरी ओर देखता भी नहीं था और जब से ईसाई हुआ हूँ बड़े-बड़े हिन्दू हाथ मिलाते हैं और पास बिठाते हैं।' पुजारी जी के महादेव जी से तो ईसाइयों के महादेव जी अच्छे हैं।"

"क्या तुमने भी कभी ईसाई हो जाने का विचार किया है?"

"किया था, एक बार।"

"फिर क्यों नहीं हुई?"

"यह सोच कर कि शायद कभी हमारे महादेव जी ही अपने दर्शन देने की कृपा कर दें।"

"गङ्गा, तुम इतनी चतुर हो। कपड़े बेचना ही तुम्हारा काम नहीं है।"

"और हम लोगों के भाग्य में है ही क्या?"

"तुमने कुछ पढ़ा-लिखा था?"

"कौन पढ़ाता? चमारों में कोई पढ़ा-लिखा नहीं। ऊँची जात वाला कोई हम लोगों के पास बैठ सकता है? पादरी साहब पढ़ाना चाहते थे, परन्तु मैं उनके यहाँ नहीं गई।"

"तुम्हारी पढ़ने की इच्छा है?"

"इच्छा है, परन्तु पढ़ाएगा कौन? और पढ़ने कौन देगा? पण्डितों को मालूम हो जायगा तो कहेंगे—'लो, चमार की लड़की अब पुस्तक पढ़ेगी!' इतने भाग्य कहाँ? चमारों के लिए तो यह सब स्वप्न हैं।"—एक आह भर कर वह चुप हो गई।

उसके एक-एक शब्द से उसके हृदय की व्यथा टपकती थी। उन सरल परन्तु सच्चे शब्दों में, उच्च वर्णों के लिए उसके श्राप-घृणा-मिश्रित विद्रोह की गन्ध आती थी। एक चोट खाया हुआ पक्षी कुछ कहता नहीं है, परन्तु उसकी तड़पती हुई एक सिसकारी जो अर्थ रखती है, वह सहस्रों शब्दों में दिया हुआ श्राप नहीं रख सकता। यही दशा गङ्गा की आह की थी। वह बोली थी और बहुत कुछ बोली थी, परन्तु उन शब्दों ने मेरे हृदय पर वह प्रभाव न किया था, जो उसकी एक दबी हुई आह ने। मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि हमारे निरङ्कुश समाज के पापों की कलुषित धारा मेरे सामने बह रही है और गङ्गा उस आह से मुझे फूँक कर उस धारा में फेंके दे रही है। गङ्गा ने कुछ कहा, पर मैं सुन न सका, क्या। परन्तु वह भयानक दृश्य मेरे सामने से हट गया। मैंने पूछा—क्या कहा, गङ्गा?

"आप क्या सोच रहे हैं?"

"मैं यह सोच रहा था कि हम लोग अछूतों पर कैसा अत्याचार कर रहे हैं। वे हमारे समाज के अङ्ग हैं, परन्तु हमारे लिए वे त्याज्य हैं। ईसाइयों के वे कुछ भी नहीं लगते, फिर भी वहाँ उनका स्वागत होता है।"

"परन्तु क्या किया जा सकता है?"

"किया जा सकता है, बहुत कुछ।"

"कौन करेगा?"

"समाज नहीं, व्यक्ति। उनमें से एक मैं हूँ।"

"आप?"

"हाँ, मैं। मैंने तुम्हें समानता का राग सुनाया था। तुमने मुझे समानता का पाठ पढ़ाया है। समाज के पाप

का कुछ अंश धोने के लिए मैं तुम्हें अपने साथ रक्खूँगा। बोलो गङ्गा, तुम मेरे साथ चल कर मेरे घर रहोगी ?"

"नहीं।"

"हाँ।"

"नहीं।"

"क्यों ?"

"आपके ग्राम वाले क्या कहेंगे ?"

"इसकी परवाह नहीं। वे मेरा बहिष्कार करेंगे, करें। मैं इसके लिए तैयार हूँ।"

"मेरे लिए इतना बड़ा दण्ड भोगेंगे।"

"तुम्हारे लिए नहीं, अपने अपराधों के लिए, अपने पुरुषाओं के अपराधों के लिए!"

"मुझे क्या करना पड़ेगा ?"

"तुम मुझे भोजन बना कर दिया करोगी और मैं तुम्हें पढ़ाऊँगा!"

"आप यह क्या कर रहे हैं ? आप ब्राह्मण हैं, मैं चमारी हूँ। आप—मेरे हाथ का—खाना खाएँगे ?"

"भूल गई, मैंने तुम्हें क्या सिखाया था—

अछूतोद्धार

वैश्य, ब्राह्मण, चमार नाई।
हिन्दू, मुस्लिम या ईसाई।
यह सब कृत्रिम भेद-भाव हैं, इसमें तत्व न जान,
लग जा सबके गले प्रेम से, तज झूठा अभिमान।
सबका एक वही भगवान !!

"अच्छा !"

"तै रहा ?"

"रहा।"

३

ग्राम में पहुँचे तो उपद्रव मच गया। जिस बात की आशा थी, वही हुई। उस खलबली पर मुझे आश्चर्य न हुआ, आश्चर्य तो तब होता, जबकि वह खलबली न मचती। सब जगह यही चर्चा होने लगी। पण्डित श्यामलाल के घर में एक चमार की लड़की रहती है, भला यह बिरादरी को कभी सह्य हो सकता था। पञ्चायतें होने लगीं और सब ने मिल कर मुझे दण्ड भी दे दिया। पञ्च कौन थे ? बड़े-बड़े नामधारी ब्राह्मण, जिनकी चोटी कुएँ से जल खींच कर ला सकती थी, जिनके तिलक आकाश के इन्द्र-धनुष को भी मात करते थे, जिनके ओष्ठ 'राम-राम' कहते-कहते मोटे पड़ गए थे। परन्तु उनके भीतरी जीवन क्या थे ? एक, दो-तीन गर्भ गिरा चुका था; दूसरा छिप-छिप कर शराब पिया करता था; तीसरे ने अपने पुत्र की वधू पर ही हाथ साफ़ किया था; चौथे का सम्बन्ध एक सुनारिन से था; पाँचवें ने अपनी पुत्री के श्वसुरालय का सारा धन हज़म किया हुआ था और वह पुत्री विधवा होकर मारी-मारी फिरती थी। यह थे 'पञ्च' जो लम्बे-लम्बे हाथ चला कर मेरा न्याय करने बैठे थे। उनके पास रुपया था, उनके पास शक्ति थी, अतः वे बिरादरी को जिधर चाहते थे, नचाते थे। जो उनका शत्रु था, वह बिरादरी का शत्रु था; जो उनका मित्र था, वह बिरादरी में मान्य था। वे इसी बल पर अपने काले कुकर्मों पर पर्दा डाल सकते थे। बिरादरी की पञ्चायतों के हाथ में और तो शक्ति रही नहीं है। हाँ हुक्का-पानी का बन्द करना उन्होंने हाथ में रक्खा है, जो पञ्चों के इशारों पर दुरुपयोग में लाया जा सकता है। मेरे पास हुक्मनामा आ पहुँचा। यदि पञ्चायतों का ही राज्य होता तो मेरा अपराध फाँसी के दण्ड से कम का नहीं था। परन्तु मेरे सौभाग्य से उतना अधिकार उन्हें नहीं था। मुझे "बहिष्कार" का दण्ड मिला था। मेरा हुक्का-पानी बन्द था। कब तक ? जब तक कि मैं गङ्गा को घर से निकाल कर सारी बिरादरी को मिठाई-पूरी न खिलाऊँ और महादेव जी पर एक सौ एक रुपए और एक नरियल न चढ़ाऊँ।

मैं इससे विचलित न हुआ था। मैंने जो कार्य अपने ऊपर लिया था, उसके सङ्कटों को जानता था और उनका सामना करने के लिए तैयार था। मैं गङ्गा को योग्य बनाने का प्रयत्न कर रहा था और उसमें मुझे सफलता हो रही थी, इससे अधिक सन्तोष की बात मेरे लिए और क्या हो सकती थी ? गङ्गा शुद्ध रहना सीख गई थी, भोजन अच्छा बनाने लगी थी, घर का प्रबन्ध करना उसे आ गया था। उसी गति से वह पढ़ने में भी आगे बढ़ रही थी। उसे ईश्वर ने बुद्धि दी थी और स्वर दिया था। मैं उन्हें उपयोगी साँचे में ढाल रहा था। सब से अधिक उन्नति उसने सङ्गीत में की थी। वह अच्छा गाने लगी थी और कुछ-कुछ सितार बजाने लगी थी। नित्य, नियम से, वह 'एक पिता के सब सन्तान' सितार पर गाया करती थी।

दिन इसी प्रकार बीतने लगे। कई महीने इसी प्रकार व्यतीत हो गए। गङ्गा अब पहले की गङ्गा नहीं रह गई थी। उसके हाव-भाव, वेश-भूषा, बोल-चाल, रङ्ग-ढङ्ग आदि को देख कर कोई नहीं कह सकता था कि वह एक अछूत की लड़की थी। और 'अछूत' शब्द चमारों के मस्तक पर थोड़े ही लिखा है। यदि उन्हें अच्छी परिस्थितियों में रक्खा जाय तो वे ब्राह्मण के पुत्रों को भी मात कर सकते हैं। ब्राह्मणों और उच्च वर्ण के हिन्दुओं की सन्तान ने ही संसार में सफल होने का ठेका थोड़े ही लिया है।

इटावा ज़िले में मेरा सम्बन्ध पक्का हो गया था। उधर से भी विरोध की मुझे आशा थी, परन्तु अभी तक उसके कोई लक्षण मुझे दिखाई नहीं पड़े थे। परन्तु इस प्रकार कब तक चल सकता था। मेरे श्वसुर भी तो एक कट्टर ब्राह्मण थे, वह भला यह कब सहन कर सकते थे कि जो एक अछूत को अपने घर में शरण दिए हुए है, उसके साथ उनकी कन्या का विवाह हो। आही तो धमके। लाल-पीले हो रहे थे, मानो मैं उनका भावी-जामाता नहीं, किन्तु कोई गिरा-पड़ा पापी हूँ।

"श्यामलाल !"—आप बोले।

"कहिए।"

"यह क्या कर रहे हो ?"

"क्या ?"

"एक चमार की लड़की को अपने घर में रख रहे हो, और क्या!?"

"इसमें हर्ज क्या है ? क्या और लोगों के यहाँ नौकर नहीं हैं ?"

"नौकर हैं तो चमार तो नहीं हैं ? अगर नौकर ही रखना था तो कोई ब्राह्मण नहीं मिलता था ?"

"जब नौकर ही रखना है तो वह ब्राह्मण हुआ तो क्या, चमार हुआ तो क्या। कोई ब्राह्मण नौकर रखता है, कोई ठाकुर नौकर रखता है, कोई कहार नौकर रखता है, मैंने एक चमार नौकर रख लिया। काम कराने से मतलब।"

"तुम पर मुझे शर्म आती है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि तुमने सारे पुरखाओं का नाम नीचा कर दिया। अगर तुम्हारे बाप ज़िन्दा होते तो तुम्हारा गला घोंट देते। तमाम बिरादरी चर्चा कर रही है। सुन कर हम रिश्तेदारों की भी नीची होती है।"

"पुरखाओं का नाम ही कब था, जो नीचा कर दिया। और रही बिरादरी की बात, सो बिरादरी के पास सिवाय ऐसी चर्चा करने के और काम ही क्या है ?"

"लेकिन बिरादरी में रह कर बिरादरी की बात माननी ही पड़ती है।"

"वे दिन गए।"

"वे दिन नहीं गए, तुम्हें बिरादरी की बात माननी ही पड़ेगी।"

"हाँ ?"

"हाँ, और इस लड़की को घर से निकालना ही पड़ेगा।"

"कहे जाइए।"

"और सारे ब्राह्मणों को जिमा कर महादेव जी पर नारियल चढ़ाना पड़ेगा।"

"और अगर मैं बिरादरी की बात न मानूँ ?"

"तो मैं अपनी लड़की की सगाई वापस ले लूँगा!"

"यह बात ?"—कह कर मैंने गङ्गा को आवाज़ दी। उसने भीतर आकर पूछा—"मुझे आप बुला रहे थे ?"

"हाँ गङ्गा, एक गिलास में पानी दे जाओ।"

गङ्गा चली गई। वे उछल कर बोले—गिलास में पानी ?

"जी हाँ।"

"किसके लिए ?"

"आप न घबराइए, आप तो पी ही नहीं सकते।"

"क्या तुम पियोगे ?"

"हाँ। प्यास लगी है।"

"चमारी के हाथ का पानी ?"

"पानी कुँए का है, उसमें वह कुछ मिला थोड़े ही देगी।"

"तुम्हारा इतना साहस?"—वे क्रोधित होकर बोले।

"आप इसे साहस कहते हैं? बड़े हर्ष की बात है। परन्तु आप यह सुन कर प्रसन्न होंगे कि मैं इससे भी अधिक साहसी हूँ। मैं उसके हाथ का बनाया हुआ खाना भी खाता हूँ।"

"खाना? हरे, हरे, इसका भी कोई ठीक है। सारा धर्म नष्ट कर दिया। तीनों त्रिलोकी में आज तक कभी ऐसा न हुआ था। ऋषि-मुनियों ने जो मर्यादा बनाई थी, उस पर भी छुरी फेर दी। मैं तुम जैसे पापी का मुख अब नहीं देखना चाहता।" वह उठे। मैंने उन्हें प्रणाम करके कहा—कष्ट के लिए धन्यवाद है। बिरादरी से कह दीजिए कि उन्हें मिठाई-पूरी न मिल सकेगी। और आप यह याद रखिए,कि मैं आपकी लड़की से विवाह नहीं कर सकता।

चलते-चलते रुक कर वह बोले—मैं जा रहा हूँ, परन्तु याद रक्खो कि मरते समय यम के दूत तुम्हें नरक में भी न ले जाएँगे।

"इसकी आप चिन्ता न कीजिए। आपको याद है कि एक मनुष्य मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' को पुकार रहा था, उधर यमदूतों ने जो सुना कि वह 'नारायण'-'नारायण' पुकार रहा है तो उसे स्वर्ग को ले गए। वही बात मेरे साथ होगी। इस लड़की का नाम गङ्गा है। जब मैं मरने लगूँगा तो इसे पुकार लूँगा और स्वर्ग पहुँच जाऊँगा। आपके यम के अन्धे दूत सलामत चाहिएँ, स्वर्ग क्या कठिन बात है!"

वे दाँत पीसते हुए चले गए। उधर से गङ्गा पानी लेकर आ गई। उसका मुख उदास था। मैंने आश्चर्य से पूछा—गङ्गा, क्या बात है?

"कुछ नहीं।"

"तो उदास क्यों हो?"

"मैं......मैं यहाँ से जाना चाहती हूँ।"

"जाना चाहती हो, क्यों?"

"क्योंकि मैं आपके लिए कण्टक के समान हूँ। जब तक मैं यहाँ रहूँगी, आपको दुःख हो उठाने पड़ेंगे।"

"तो क्या तुम्हें यहाँ कष्ट मिल रहा है?"

"मुझे कष्ट? इसकी कोई कल्पना भी कर सकता है? आपने मुझे गन्दे नाले से निकाल कर गुलाबों की बाटिका में ला बिठाया, मुझे पढ़ाया-लिखाया, पशु से मनुष्य बनाया। इतना एहसान एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर कर सकता है? विशेषकर जब कि वह दूसरा मनुष्य एक अछूत हो, एक दलित व्यक्ति हो, जिसका भाग्य ही ठोकर खाना, गिरना और उसके लिए ठोकर मारने वाले से क्षमा माँगना हो। मेरे लिए यह बहुत बड़ी बात है। एक अछूत बालिका इससे अधिक के लिए कामना भी नहीं कर सकती, इसे पाना तो उसके लिए असम्भव ही है। ऐसी दशा में क्या मैं आपको छोड़ कर जाने की बात कर सकती थी? यदि सहस्रों जन्म हों और प्रत्येक जन्म में नित्य आपके चरणों की धूल पोंछूँ, तब भी आपसे उऋण नहीं हो सकती। परन्तु मुझे जाना ही पड़ेगा, अपने लिए नहीं, आपके लिए!"

"मूर्ख मत बनो! मेरे लिए तुम्हें क्यों जाना पड़ेगा? क्या बिरादरी के बहिष्कार से डरती हो? उससे मुझे क्या कष्ट है? मैं बाहर गाने के लिए उसी प्रकार जाता हूँ। सब काम उसी प्रकार होते हैं। बिरादरी में दो-चार नवयुवक यदि अछूतों के प्रति सद्भाव दिखलाने लगेंगे तो बिरादरी भी कुछ दिनों में ठीक हो जायगी।"

"परन्तु यह बिरादरी का बहिष्कार ही नहीं है। यह उससे भी अधिक आवश्यक बात है। मैंने आपकी सब बातें सुनी थीं।"

"क्या तुम्हारा अर्थ है मेरा विवाह?"

"हाँ।"

"परन्तु उसमें क्या है? मैंने सम्बन्ध छोड़ दिया। उसका विवाह किसी और जगह हो जायगा।"

"क्या आप उससे प्रेम नहीं करते?"

"प्रेम? मैंने उसे देखा भी नहीं है। कई वर्ष हुए पिता जी यह सम्बन्ध पक्का कर गए थे। मैं केवल उनकी बात निभा रहा था।"

"परन्तु फिर भी, मुझे जाना ही पड़ेगा। यह न सही, आप किसी और से विवाह करेंगे ही। मैं व्यर्थ ही बाधा डालने का कारण हो जाऊँगी।"

मैंने उसकी ओर देखा। उसका शरीर काँप रहा था। पलक झपके जा रहे थे। मुख पीला पड़ता जा रहा था। मैं बोला—गङ्गा!

"हाँ!"—उसने धीरे से कहा।

"मेरी ओर देखो।"

उसने सर ऊपर को उठाया, उसके नेत्रों में दो बूँदें थीं—तुम इस घर को नहीं छोड़ रही हो। यह घर तुम्हारा हो जायगा, तुम्हें यह सँभालना पड़ेगा!

"यह कैसे?"

"मैं तुमसे विवाह करूँगा।"

"मुझसे, विवाह? ब्राह्मण और चमार का विवाह?"

धन्यवाद

पाठकों को जान कर प्रसन्नता होगी—और उसके प्रवर्तक के नाते हमें क्षणिक गर्व का होना बहुत स्वाभाविक है—कि "भविष्य" का हिन्दी-संसार में यथोचित आदर हुआ है, किन्तु हमें इस बात का खेद भी है कि रात-दिन सारा प्रेस चला कर भी हम २५,००० प्रतियों से अधिक छापने में सर्वथा असमर्थ हैं। जो सज्जन अथवा देवियाँ ग्राहक होना चाहती हों, उन्हें शीघ्रता करनी चाहिए, नहीं तो उनकी फ़ाइल अधूरी रह जायगी। पहिले अंकों की कॉपी आज ढूँढ़े नहीं मिल रही है!

"ब्राह्मण और चमार का विवाह नहीं, चमार और चमार का विवाह!"

"परन्तु आप तो ब्राह्मण हैं।"

"था, अब नहीं हूँ। ब्राह्मणों ने मुझे निकाल ही दिया है। अब मैं चमार हूँ, अछूत हूँ। याद नहीं है—

'एक पिता के सब सन्तान'

वह कुछ न बोली, मेरा हाथ पकड़ कर वहीं बैठ गई, और हम गाने लगे—

वैश्य, ब्राह्मण, चमार नाई,
मुस्लिम, हिन्दू या ईसाई;
यह सब कृत्रिम भेद-भाव हैं, इसमें तत्व न जान,
लग जा सब के गले प्रेम से, तज झूठा अभिमान।
सब का एक वही भगवान!

गाना समाप्त करके मैंने पूछा—कहो, तै रहा?

"रहा!"—उसने हँस कर कहा।

* * *

गङ्गा अब मेरी है। वह ब्राह्मणी है या मैं चमार हूँ, कह नहीं सकता। परन्तु इतना मैं जानता हूँ कि हम दोनों एक-दूसरे के साथ बड़े सुखी हैं। मूर्ख उसे चमारी कहें, अछूत कहें या कुछ भी कहें, वह चन्द्र-ज्योत्स्ना के समान विमल है, वसन्त के समान सौरभमयी है और इस अनन्त विश्व के समान विशाल हृदया है।

* * *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

जगत जाग रहा था—

उसका सौभाग्य यौवन में भरपूर था। बेतोल सम्पदा भरी पड़ी थी। खा रहा था और बखेर रहा था। रात-दिन वहाँ समान थे। बिजली का तेज और वायु की गति लिए हुए—प्रकृति-वेश्या वहाँ हाज़िर थी, हाथ में रक्त, मद्य और नयनों में हलाहल कटाक्ष था। अन्धाधुन्ध ढाल रही थी। ज्ञान और विज्ञान उसके मुसाहिब थे, और वे अपने आप पर इतरा रहे थे।

उस समय विश्व-विभूतियाँ नग्ननृत्य कर रही थीं। और नर-लोक उस अकाण्ड-ताण्डव पर मुग्ध और लीन हो रहा था। मूर्ख न्याय ताल दे रहा था और निर्लज्ज नीति अट्टहास कर रही थी। रूढ़ि सभापति थी। पाखण्ड के हाथ प्रबन्ध था। और पाप स्वागत कर रहा था। असत्य के अन्ध दीप जल रहे थे। और सत्ता का महदा-लोक अप्रतिभ चमक रहा था।

वहाँ! मानव उत्कर्ष का स्वच्छन्द उपहास हो रहा था। भीषणताएँ अदम्य वेग में भरी खड़ी थीं। प्रतिहिंसा जीभ लपलपा रही थी, और दासता दुम हिला रही थी।

हिंसा! हिंसा की ओर सब की दृष्टि थी। उसका कुञ्चित भृकुटी-विलास, कुटिल भ्रूभङ्ग, विकट दन्तपेषण, क्षण-क्षण में आशङ्का उत्पन्न कर रहा था।

विश्व-ध्वंसिनी ज्वालाएँ सङ्केत की बाट में हाथ बाँधे खड़ी थीं। सब तरफ़ लाल ही लाल दीखता था। एक अस्फुट किन्तु अशान्त ध्वनि सब से ऊपर उठ रही थी। न उसमें स्वर था न ताल—उसे सुन कर वातावरण में रह-रह कर कम्पन हो रहा था। कुछ होने वाला था।

भारत सो रहा था!!

२

भारत सो रहा था।

थकावट से चूर और बुढ़ापे से लाचार। वह सब कुछ कर चुका था, सब कुछ पा चुका था, उसकी कोई साधना न रह गई थी। इतिहास के हज़ारों-लाखों पृष्ठों पर उसके हाथ के हस्ताक्षर थे।

दूसरी जातियाँ उन्हें पढ़ और समझ रही थीं।

वीरता, विद्या, व्यापार और वैराग्य की बाटिकाओं में उसके हाथ का जो कुछ बचा था उसमें से जागती जातियों को जो कुछ मिल जाता था—निहाल हो जाती थीं।

वे उस पर लोट-पोट थीं। वे उससे ब्याह करने का चाव रखती थीं। बूढ़े को कुछ ख़बर न थी।

वह सो रहा था। थकावट से चूर और बुढ़ापे से लाचार!

वह सब कुछ कर चुका था, सब कुछ पा चुका था, उसकी कोई साधना न रह गई थी!

घर में सम्पदा, सुख और धर्म का मेह बरस रहा था।

आँगन से स्वर्ग तक सरल सीढ़ियाँ लगी थीं।

अभ्युदय और निःश्रेयस एकत्र घर को रखा रहे थे।

देवता आ रहे थे, जा रहे थे।

रत्न-दीप जल रहे थे।

स्वर्ण-स्तम्भों पर बारहों राशियाँ दिप रही थीं।

जल-थल और आकाश उसके निःश्वासों की सुगन्ध से सुरभित हो रहे थे।

वे आईं और पास बैठ गईं। जो मिला सो खाया और वहीं सो गईं!!

यह बूढ़े की नींद का चमत्कार था!!!

* *

क्या दमन से राष्ट्रीय आन्दोलन दबेगा ?

[श्री० भोलालाल दास जी, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन के आरम्भ काल से ही दमन का चक्र जैसा अधिकाधिक भयानक हो रहा है, उससे यही विदित होता है कि कम से कम हमारे भाग्य-विधाताओं की यही निश्चित-धारणा है कि दमन से यह आन्दोलन अवश्यमेव दब जायगा। कुछ दिन पहले हमने अख़बारों में पढ़ा था कि शिमला-शैल के अधिकारीवर्ग का यह सिद्धान्त है कि दमन नहीं करने से आज ही इङ्गलैण्ड को भारत से हाथ धोना पड़ेगा, किन्तु दमन करके दबा देने से कम से कम एक सौ वर्षों तक और भी शासन किया जा सकता है। कहना व्यर्थ है, कि अधिकांश अङ्गरेज़ों का यही मत है। यही कारण है कि न केवल इस देश के रहने वाले अङ्गरेज़, बल्कि ख़ास विलायत के भी अधिकांश लोग दमन के ही पक्ष में हैं। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि अन्यान्य घराऊ बातों में चाहे विलायती पार्लामेण्ट में जितनी दलबन्दी हो, किन्तु भारतवर्ष को अधीन रखने के विषय में विलायत की भिन्न-भिन्न पार्टियों की राय एक ही है। यही क्यों, भारत-गवर्नमेण्ट जिस किसी नीति का अवलम्बन करती है उसका निश्चय विलायत में ही हुआ करता है। सुतराम् जैसे-जैसे दमन की कुञ्जी विलायत में ऐंठी गई है, वैसे ही वैसे भारत में इसका दौर-दौरा भीषण रूप से बढ़ता जा रहा है। अब समझौते की बात-चीत टूट जाने से दमन का चक्र और भी ज़ोरों के साथ चलाया जा रहा है। किन्तु अब प्रश्न यह है कि क्या इस दमन का परिणाम दमन होगा ?

यदि अधिकांश अङ्गरेज़ों की दमन के विषय में उपरोक्त धारणा है, तो कहना पड़ता है कि वे लोग भारी ग़लती में हैं। किसी जानकार राजनीतिज्ञ की यह अन्धी नीति नहीं हो सकती है कि भारतवर्ष कम से कम सौ ही वर्षों तक इङ्गलैण्ड के अधीन रहे, उसके बाद चाहे जो कुछ हो। ऐसी धारणा तो निम्न श्रेणी के मूर्खों की ही हो सकती है। फिर यदि उनकी बातों को एक क्षण के लिए सत्य भी मान लिया जावे कि दमन से यह राष्ट्रीय युद्ध दबा दिया जायगा तो यह कोई निश्चय नहीं कि पूरे सौ वर्षों या उससे भी अधिक दिनों तक शान्ति बनी रहेगी। बहुत सम्भव है यह आग फिर भी अधिक भीषण रूप से केवल दस-पन्द्रह वर्षों में भभक पड़े। उस समय की स्थिति और भी भयानक हो जायगी। अतः हमारे भाग्य-विधाताओं की भविष्यद्वाणी किस ज्योतिष या इलहाम पर अवलम्बित है, वे ही जानते होंगे। किन्तु मानव घटनाओं की जैसी अनुवृत्ति देख पड़ती है, उससे विदित होता है कि जिस जोश को जितनी ही तेज़ी से दबाया जाता है, वह या तो दबने के बदले और भी बढ़ता है अथवा यदि विशेष कारणों से दब भी गया तो उसका परिणाम कथमपि चिरस्थायी नहीं होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है। इसलिए कहना पड़ता है कि यद्यपि ऐसी धारणा अधिकांश अङ्गरेज़ों की है, तथापि यह भ्रमसूलक है। वस्तुतः ऐसी धारणा तृतीय श्रेणी के लोगों की ही हो सकती है, जिनको अपने वर्तमान स्वार्थ-साधन के अतिरिक्त थोड़ी भी दूरदर्शिता नहीं है। आज इस आन्दोलन से लङ्काशायर और माञ्चेस्टर के व्यापारियों की क्षति होती हुई देख पड़ती है, बहुतों की रोज़ी छिनती चली जा रही है, तथा और भी कितनी स्वार्थहानि होती है। इसीलिए दमन का अवलम्बन करना इन लोगों का मुख्य उद्देश्य है, ताकि उन बुराइयों का मार्ग बन्द हो जाय। किन्तु ये सभी बातें क्षणिक हैं। इनके सुधर जाने से भी इङ्गलैण्ड या भारत की जनता का जो चिरस्थायी सम्बन्ध अभीष्ट है, उसमें कोई लाभ नहीं पहुँच सकता है, जब तक कि असन्तोष के मूल कारण को नहीं हटाया जायगा। कोई सद्वैद्य किसी व्याधि के बाहरी उपद्रवों को ही शान्त करने से उसके निर्मूल होने की आशा नहीं कर सकता। अतः कोई उच्च कोटि का अङ्गरेज़ राजनीतिज्ञ ऐसी लचर दलील के आधार पर दमन का अवलम्बन नहीं कर सकता।

यथार्थ पूछिए तो उनकी श्रेणी भिन्न है। इस श्रेणी के लोगों की राय यह है कि क़ानून और व्यवस्था (Law and Order) ऐसी चीज़ है जिसको पालन करना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है और उसका पालन करवाना गवर्नमेण्ट का धर्म है। यदि प्रजा इसकी अवहेलना करती है तो वह अपराधी है, उसे अवश्य दण्ड मिलना चाहिए और यदि गवर्नमेण्ट इसकी उपेक्षा करती है, तो वह गवर्नमेण्ट नहीं, बल्कि एक निर्जीव संस्था है। यथार्थ पूछिए तो इस दलील में अवश्य ही कुछ सार है, क्योंकि

१ ली नवम्बर को

हिन्दी 'चाँद' का एक वृहत् विशेषाङ्क "प्रवेशाङ्क" के नाम से प्रकाशित हो रहा है। इसके प्रवर्तकों का दावा है कि ऐसा सुन्दर विशेषाङ्क हिन्दी में कभी भी प्रकाशित नहीं हुआ है। इस अङ्क से 'चाँद' अपने नवें वर्ष की साधना में प्रवेश कर रहा है। 'चाँद' अब केवल सामाजिक ही नहीं, एक उच्च कोटि का राजनैतिक एवं सामाजिक (Socio-political) पत्र बनने जा रहा है। उसके पाठकों को 'चाँद' से और 'चाँद' को उसके पाठकों से पूर्ण सहयोग और सहानुभूति की आशा है! 'चाँद' के पढ़ने वाले पाठक इस नवीन अङ्क से आगे प्रकाशित होने वाले सभी अङ्कों को देख कर निहाल हो जायँगे। आप यदि अब तक ग्राहक नहीं हैं तो आज ही ६॥) रु० भेजने की कृपा कीजिए!

देश की शान्ति और राजा-प्रजा का पारस्परिक सम्बन्ध इसी कर्त्तव्य पर अवलम्बित है। किन्तु जब हम इस सिद्धान्त की सत्यता के ऊपर ध्यान देते हैं तो हमें इन राजनीतिज्ञों की दलील भी थोथी विदित होती है। गवर्नमेण्ट अपने क़ानून और व्यवस्था को अवश्य बनाए रक्खे तथा प्रजा भी उसको माने, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह क़ानून और व्यवस्था प्रजा की बुराई और अत्याचार के लिए हो। क़ानून और व्यवस्था, किसी भी गवर्नमेण्ट की, इसीलिए होती है कि उसके द्वारा भिन्न-भिन्न नागरिकों का पारस्परिक अधिकार और कर्त्तव्य न्यायपूर्वक सञ्चालित होवे, गवर्नमेण्ट से प्रजा को और प्रजा से राजा को लाभ तथा सन्तोष मिलता रहे। किन्तु हमारे देश की अवस्था भिन्न है। यहाँ राजा-प्रजा के स्वार्थ में एकता के बदले विरोध है। विदेशी गवर्नमेण्ट के लिए यह बात स्वाभाविक है।

आख़िर भारतीय आन्दोलन का अर्थ क्या है ? केवल यही न कि भारतवर्ष की दुःखी प्रजा सुखी होवे, ग़रीब और अशान्त लोग धनवान तथा शान्त बनें, मूर्खता, व्याधि, परतन्त्रता आदि दूर होवे। भला इन उद्देशों में प्रजा की भलाई है या बुराई ? गवर्नमेण्ट का स्वार्थ जब तक इससे भिन्न नहीं है, तब तक वह इन वस्तुओं की उन्नति में अपनी अवनति क्यों समझती है, वह इनमें साधक होने के बदले बाधक क्यों होती है ? फिर ज़रा क़ानून और व्यवस्था की हालत पर भी तो विचार कीजिए। विदेशी कपड़ों पर पिकेटिङ्ग करना, ताड़ी-शराब आदि मादक द्रव्यों को रोकने की चेष्टा करना, देश की हानि-लाभ वाली बातों को ज़रा स्वतन्त्रतापूर्वक लिखना या बोलना, देशसेवा के लिए स्वयंसेवकों को सङ्गठित करना आदि सभी बातें ऑर्डिनेन्स के पेंचीले दफ़ों में ग़ैरक़ानूनी हैं—यही नहीं, देश की सब से बड़ी राष्ट्रीय सभा कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति भी ग़ैरक़ानूनी संस्था क़रार दे दी गई है! भला इन क़ानूनों का भी कोई जवाब है ? यदि इन आज्ञाओं का पालन सम्भव हो तो खाद्य, जल, वायु आदि के व्यवहार पर भी क़ानून क्यों नहीं बनेगा ? परन्तु सोचने की बात है कि क्या ऐसे क़ानून किसी देश की सरकार ने बनाने का प्रयास या साहस किया है ? यों तो अत्याचारी राजा या राजकीय संस्था सब कुछ कर सकती है और भारतवर्ष के ही इतिहास से विदित होता है कि बहुत से मुसलमान बादशाहों का क़ानून यह था कि हिन्दू हाथी-घोड़े या पालकी पर न चढ़ें, हिन्दू धर्म मानने के लिए एक प्रकार का टैक्स दें, इत्यादि। किन्तु प्रश्न यह है कि क्या इन क़ानूनों से प्रजा की भलाई हो सकती है या हुई है ? ख़ासकर वह गवर्नमेण्ट जो अपने को न्यायी और प्रजावत्सल बतलाती है वह क्या इन क़ानूनों का समर्थन कर सकती है ? सच बात तो यह है कि इन क़ानूनों से प्रजा की प्रारम्भिक स्वतन्त्रता भी छिन जाती है, अतः लोकमत कभी इनके पक्ष में नहीं रह सकता। किन्तु पूछा जा सकता है कि नमक के क़ानून को क्यों तोड़ा जाता है ? यह तो कोई नया क़ानून नहीं है। यह तो आन्दोलन को दबाने की नीयत से नहीं बनाया गया है ? फिर इसको भङ्ग करना कैसे सह्य हो सकता है ? किन्तु इसके इतिहास पर काफ़ी प्रकाश डाला गया है, अतः इसके विषय में अधिक लिखना व्यर्थ है। एक शब्द में यही कहना चाहिए कि देश आजकल जिस सत्याग्रह पर चल रहा है, जिन-जिन क़ानूनों को तोड़ा जा रहा है या जो कुछ भी अवज्ञा की जाती है उसको किसी ऐसे क़ानून के भङ्ग से सरोकार नहीं है जिससे देश की शान्ति या व्यवस्था को कुछ धक्का लगे, प्रत्युत शान्ति और व्यवस्था को स्थिर रखने की ही पूरी चेष्टा की जाती है। सत्याग्रही न तो चोरी करते, न डाका डालते, न किसी के ऊपर हस्तक्षेप करते, न किसी का अपमान करते हैं, बल्कि वे लोग सभी प्रकार के अत्याचार ख़ुद सहते हैं। वे लोग देश-सेवा के अभिप्राय से स्वदेशी वस्त्रों का प्रचार, विदेशी वस्त्रों और मादक पदार्थों का बहिष्कार तथा अन्यान्य देशोपकारी काम बहुत शान्तिपूर्वक करते हैं। यही नहीं, वे लोग उन कार्यों के अतिरिक्त और सब क़ानूनों को औरों की अपेक्षा अधिक मानते हैं। जेल जाते हैं, अपनी सम्पत्तियों को नीलाम होने देते हैं, मार खाते हैं, यहाँ तक कि अपनी जान भी खोते हैं, किन्तु कोई ऐसा काम नहीं करते जिससे शान्ति या व्यवस्था भङ्ग होवे। यह सब क्यों होता है ? केवल इसीलिए कि शान्ति और व्यवस्था क़ायम रहे। ऐसी स्थिति में पिकेटिङ्ग करने के लिए, या पुलिस आदि की मनमानी आज्ञा नहीं मानने के लिए एक ओर जहाँ वे लोग डण्डों की मार खाते रहते हैं, जेल में ठूँसे जाते हैं, उनके घर-बार की बार-बार तलाशी ली जाती है जिसमें बहुधा उनकी सम्पत्ति और प्रतिष्ठा बर्बाद कर दी जाती है और दूसरी ओर कोरे शान्ति और व्यवस्था के नाम पर केवल राष्ट्रीय

आन्दोलन को दबाने या लोगों को भयभीत करने के अभिप्राय से तरह-तरह की ज़्यादतियाँ की जाती हैं तो निष्पक्ष जनता की सहानुभूति स्वभावतः सत्याग्रहियों की ओर होती है। आख़िर सत्य और न्याय भी कोई चीज़ है जिसे हर एक मूर्ख और विद्वान अनायास समझता है। ऐसी स्थिति में गवर्नमेण्ट को भले ही पता न हो या हो भी तो गवर्नमेण्ट भले ही उसकी उपेक्षा करे, किन्तु दिनानुदिन अधिक लोग राष्ट्रीय आन्दोलन के पक्ष में आ रहे हैं और यह कहना बहुत यथार्थ है कि इस आन्दोलन का प्रचार जितना सरकारी दमन से हुआ है उतना कॉङ्ग्रेस के उपदेशों या प्रस्तावों से नहीं हुआ है।

अब हम इस द्वितीय श्रेणी की दलील का खोखलापन कुछ-कुछ समझ सकते हैं। क़ानून और व्यवस्था वस्तुतः बड़ी अच्छी चीज़ हैं, और उनका भङ्ग होना बड़ा बेजा है। केवल गवर्नमेण्ट ही क्यों सारी प्रजा-मण्डली और सारे संसार की जनता यही कहेगी कि इन्हें अच्छी तरह क़ायम रखिए और ख़ूब रखिए, किन्तु सत्यासत्य के विचार से, न्याय और अन्याय के ख़्याल से काम कीजिए। तभी दमन का अर्थ सार्थक होगा, अन्यथा उल्टा अर्थ प्रत्यक्ष ही हो रहा है। भला ऐसे दमन से भी राष्ट्रीय आन्दोलन दब सकता है, जिससे सच्चे देश-सेवक तो जेल में ठूँसे जायँ और चोर-बदमाश असली सज़ावार आदमी जेल से आज़ाद किए जायँ? इस अन्याय और अत्याचार का भी कोई ठिकाना है? इसका जो परिणाम होना उचित है, वह भी होता ही जा रहा है। जब वे बदमाश जेल से निकलते हैं तो महात्मा गाँधी की दुहाई देते हुए निकलते हैं और उनमें से बहुत तो कॉङ्ग्रेस के वालण्टियरों में भर्त्ती हो जाते हैं। बात भी यथार्थ है क्योंकि न तो महात्मा जी का आन्दोलन बढ़ता और न जेलें सत्याग्रहियों से ठसाठस भरतीं। उनका यह ख़्याल करना बहुत यथार्थ है कि उनको छुड़ाने वाली यथार्थ में गवर्नमेण्ट नहीं है, बल्कि गाँधी-आन्दोलन है। कल की बात है कि मेरे एक मित्र जो यहाँ वकील हैं, उनके घर को पुलिस ने लूट लिया है। बात यह है कि उनके भाई कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ता हैं और उनके नाम शायद वारण्ट निकल चुका है, किन्तु वे अन्यत्र कार्य करते थे जिससे उन्हें शायद मालूम नहीं हुआ। अतः वे हाज़िर न हो सके थे। ऐसी स्थिति में पुलिस का ज़्यादा से ज़्यादा कर्त्तव्य यह था कि उन्हें खोज कर गिरफ़्तार कर लेती। किन्तु ऐसा न करके दिन-दहाड़े उनके घर पर मानो डाका डाला गया। ४०-५० सिपाही बिना कुछ कहे-सुने उनके घर में घुस गए जिससे स्त्रियाँ डर के मारे भाग गईं। घर पर न तो वकील साहब थे और न उनके कार्यकर्ता भाई थे। भला कहिए तो उन स्त्रियों की दशा क्या हुई होगी। पुलिस ने पकाई हुई रसोई मज़े में भोजन कर ली और सब चीज़ों को तितर-बितर कर दिया। कहते हैं कि कुछ स्त्रियों के ट्रङ्क जिनमें कपड़े-ज़ेवर आदि थे तथा और भी कितनी ही चीज़ें दो-तीन गाड़ियों पर लाद कर पुलिस समस्तीपुर थाना ले गई। ४०-५० हज़ार की जनता शान्तिपूर्वक पुलिस की ज़्यादती देखती रही। यह तो एक उदाहरण मात्र है—वस्तुतः ऐसी घटनाएँ नित्य ही होती रहती हैं। भला इस दमन से भी कोई दमन हो सकता है। इससे तो साफ़ तौर से गवर्नमेण्ट जनता की आँखों में नीची गिर रहा है। जिस गवर्नमेण्ट से लोग न्याय की आशा करते हैं, उसका यह अन्याय देख कर कौन आदमी ऐसा होगा जो सरकार के प्रति अपनी सहानुभूति प्रगट कर सके? सब लोग जहाँ-तहाँ यही कहते हैं कि बड़ा भारी अन्याय हुआ, गवर्नमेण्ट हमें डराना चाहती है, इत्यादि। किन्तु लोग शान्तिपूर्वक तमाशा देखते रहे, इससे क्या यह पता नहीं चलता है कि लोगों में पूरी निर्भयता और आत्म-त्याग की मात्रा आ गई है?

किन्तु गवर्नमेण्ट यह समझती है कि इससे और कुछ नहीं तो लोग कम से कम डर जायँगे और राष्ट्रीय काम करना छोड़ देंगे। यह भी एक भारी भूल है क्योंकि लोगों को निर्भय बनाना, ख़ासकर अत्याचार का निर्भयतापूर्वक विरोध करना ही इस आन्दोलन का मूल-मन्त्र है। सब प्रकार की ज़्यादती और मुसीबत सह करके भी अपने व्रत पर अटल रहना इसकी पहली सीढ़ी है। ऐसी स्थिति में गवर्नमेण्ट का यह ख़्याल नितान्त भ्रम-मूलक है। यहाँ तक कि जो लोग इन अत्याचारों से वस्तुतः डर भी जायँगे, वे भी इसे अत्याचार ही समझेंगे और भीतर-भीतर उनकी श्रद्धा गवर्नमेण्ट के प्रति एकदम उठ जायगी। महात्मा गाँधी ने समझौते की चिट्ठी में ठीक ही कहा है कि अहिंसात्मक अस्त्र का सच्चा अर्थ गवर्नमेण्ट को नहीं मालूम है, क्योंकि उसने इसका कभी उपयोग ही नहीं किया है। क्या गवर्नमेण्ट को अपने दमन और राष्ट्र के अहिंसात्मक अस्त्र की ख़ूबी तब ज़ाहिर होगी जबकि गवर्नमेण्ट के ऊपर से सब की श्रद्धा उठ जायगी और सारा देश उसके विरुद्ध हो जावेगा?

अब कुछ इस बात के ऊपर भी विचार करना चाहिए कि इस आन्दोलन के पक्ष में कुछ सत्याधार है या नहीं। सत्याग्रही लोग केवल हुल्लड़बाज़ी मचाते हैं या वस्तुतः किसी सत्य के लिए लड़ रहे हैं। गवर्नमेण्ट ने यदि इस देश को तलवार के ज़ोर से जीता होता या आरम्भ में ही यह कह देती कि हम जैसे होगा आप्रलय हिन्दुस्तान को अपने क़ब्ज़े में रक्खेंगे तो बात दूसरी थी। गवर्नमेण्ट ने इसके प्रतिकूल बार-बार यह प्रतिज्ञा की है कि हम भारत को स्वराज्य के योग्य बनावेंगे और उसे स्वराज्य देंगे। लगभग १५० वर्ष बीत गए अङ्गरेज़ी शासन से न तो देश में आज तक सैकड़े दस से अधिक लोग शिक्षित हो सके और न कोई स्वराज्य मिला। शासन और सुव्यवस्था जो देख पड़ती है, उसे भारत ने बहुत महँगा ख़रीदा है। जो देश संसार में सब से धनी था जहाँ किसी को अन्न-वस्त्र का कष्ट नहीं था, जहाँ घी-दूध की धारा बहती थी, जो सब कारीगरी और उद्योग-धन्धों का गुरु था, जहाँ की विद्या, कला, और सभ्यता संसार में सब से प्राचीन और उत्तम मानी जाती थी उस देश में आज अविद्या, दरिद्रता, व्याधि और कुरीतियों का घोर अन्धकार छाया हुआ है। वस्त्र तक बनाना लोग भूल गए—सब सामानों के लिए विदेशों के मुहताज हो रहे हैं। भारतवासी अब अपने को मनुष्य कह कर परिचय देने योग्य नहीं रहे। ऐसी स्थिति में यदि देश के नेताओं ने बारम्बार प्रार्थना, प्रस्ताव और लोकमत प्रगट किया तो गवर्नमेण्ट ने उसको ठुकरा दिया। लोगों की चार आना माँग भी पूरी नहीं की गई। माण्टफ़ोर्ड स्कीम से देश के ख़र्च का भार और भी बढ़ गया और साइमन रिपोर्ट तो उससे भी गई-गुज़री है जिससे स्पष्ट विदित है कि जनता जितना ही अपने अधिकारों की माँग उपस्थित करती है, गवर्नमेण्ट उतना ही उसको टालती जाती है, बल्कि राष्ट्रीय आन्दोलन को और भी निर्दयतापूर्वक दबाना चाहती है। ऐसी स्थिति में सत्य और न्याय किसके पक्ष में है कहने की आवश्यकता नहीं। इसलिए राष्ट्रीय आन्दोलन को दबाने का यथार्थ और एक मात्र मार्ग यही है कि गवर्नमेण्ट यथासम्भव जनता को उसकी माँग पूरी करके सन्तुष्ट करे न कि उसका उल्टे दमन करे।

अब हम लोग दमन के समर्थन करने वाले उस उच्च विचार वाले विद्वानों की कोटि में पहुँचते हैं, जो न केवल भारत और विलायत में, वरन अमेरिका, जापान आदि अन्यान्य देशों में भी गवर्नमेण्ट से यह सिफ़ारिश करते हैं कि भारत को स्वराज्य देकर आन्दोलन के मूल कारण को हटाइए और भारत तथा विलायत का चिर-सम्बन्ध विच्छेद होने से बचाइए। कहना नहीं होगा कि यही श्रेणी गवर्नमेण्ट की सच्ची हितेच्छु है और सौभाग्य से ऐसे लोगों की संख्या इङ्गलैण्ड में भी बढ़ती जा रही है। अमेरिका में भी कम नहीं है और भारतीय तो प्रायः सभी इस विषय में एकमत हैं। यद्यपि कॉङ्ग्रेस ने विवश होकर स्वतन्त्रता की घोषणा की है तथापि कुछ दिन पहले भारतीय सर्वदल सम्मेलन ने एक राय होकर, जो नेहरू रिपोर्ट तैयार की थी, उसके अनुसार यदि औपनिवेशिक स्वराज्य दे दिया गया तो अवश्यमेव शान्ति स्थापित हो जायगी और कॉङ्ग्रेस भी अपना प्रोग्राम बदल सकेगी। किन्तु जहाँ तक हमारा अनुमान है गवर्नमेण्ट को यह बात मञ्ज़ूर नहीं है—वह माण्टफ़ोर्ड रिपोर्ट से भी पीछे जाना चाहती है—ऐसी स्थिति में शान्ति की आशा करना निराशा मात्र है। तब देखना यह है कि दमन क्या रङ्ग लाता है।

हमारे जानते अङ्गरेज़ों की यह भारी भूल है कि औपनिवेशिक स्वराज्य दे देने से भारत या इङ्गलैण्ड की कोई क्षति होगी। चीन, जापान, इटली की भाँति भारत भी अपना अधिकार पाकर शीघ्र उन्नत होगा और जीवन का आदर्श जितना ही ऊँचा होगा उतना ही वह इङ्गलैण्ड के व्यापार को अधिक लाभ पहुँचाने की शक्ति लाभ करेगा। इस समय सैकड़े में नब्बे, जो पढ़े-लिखे नहीं हैं, उन्हें बहुत कम चीज़ों की ज़रूरत है, किन्तु यदि उनका जीवन उन्नत होगा तो उनकी माँग बढ़ जायगी और उससे विलायत को भारी लाभ होगा। इसके अतिरिक्त उन्नत और धनी भारत इङ्गलैण्ड की जितनी सहायता समय पड़ने पर कर सकेगा, दरिद्र और दुखी भारत कदापि नहीं कर सकता। उसके न्याय और उदारता की धाक ऐसी चिरस्थायी होगी जो दमन या रक्त-शोषण से कभी नहीं हो सकती है। किन्तु सरकारी दमन-नीति इन सब धारणाओं को चूर-चूर कर रही है। ऐसी स्थिति में दमन के बढ़ने से स्वतन्त्रता की लहर और भी ज़ोर पकड़ेगी—इसमें सन्देह नहीं रह जाता। क्या गवर्नमेण्ट अब भी चेतेगी?

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

बड़ा ग़ज़ब हुआ ! बड़ा अन्धेर हुआ ! मौलाना शौकतअली गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में आख़िर नहीं बुलाए गए ! इतने भारी-भरकम लीडर और कॉन्फ्रेन्स से अलक़त ! यह माना कि वह दो आदमियों का स्थान घेरते और शायद इसीलिए बुलाए भी नहीं गए कि वहाँ गिनी हुई सीटें हैं—यदि एक आदमी दो आदमियों की जगह घेर ले तो एक आदमी कम हो जाय। परन्तु फिर भी उन्हें बुलाना ज़रूर चाहिए था। वह तो इतने सीधे-सादे आदमी हैं कि जगह न होती तो खड़े ही रहते। और अब भी वह जायँगे अवश्य, चाहे कॉन्फ्रेन्स-भवन की परिक्रमा ही करते रहें। क्योंकि वह बड़े हठी और दृढ़-प्रतिज्ञ हैं। कोई आश्चर्य नहीं जो वहाँ सत्याग्रह ठान दें। यद्यपि सत्याग्रह के वह विरोधी हैं और मुसलमानों को यही शिक्षा दिया करते हैं कि सत्याग्रह से अलग रहो। और अधिकांश मुसलमानों ने उनकी यह बात मानी भी ख़ूब। लीडर की बात मानना ही चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि मौलाना सोचते बड़ी दूर की हैं। वह जानते थे कि सत्याग्रह करने से जानवरों की तरह जेल में बन्द कर दिए जायँगे और गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में नहीं जा सकेंगे। इसलिए सत्याग्रह से अलग रहना ही ठीक है। जेल के बाहर रहेंगे तो कॉन्फ्रेन्स में पहुँच ही जायँगे—सरकार नहीं बुलाएगी तो स्वयम् चले जायँगे। क्या उनके पास सफ़र-ख़र्च नहीं है। या उन्हें रास्ता नहीं मालूम ! सरकार ने उनके साथ थोड़ा-सा अन्याय किया। उन्होंने तो यह नेकी की कि मुसलमानों की एक बड़ी तादाद को सत्याग्रह से अलग रक्खा—केवल इसलिए कि सरकार उन्हें अपना दोस्त समझे; परन्तु सरकार ने उन्हें मौक़े पर पूछा तक नहीं। इसीसे कहना पड़ता है कि नेकी का ज़माना ही नहीं रहा। यदि मौलाना चाहते तो सब मुसलमानों को सत्याग्रह में जुटा देते। तब सरकार को मजबूरन स्वराज्य देना पड़ता। और अब भी मौलाना चाहें तो लेटे-लेटे स्वराज्य ले सकते हैं। और कॉन्फ्रेन्स में पहुँच जायँ तो खड़े-खड़े स्वराज्य दहला दें; क्योंकि वहाँ बैठने के लिए उन्हें जगह मिलेगी ही नहीं।

मुसलमानों में जितना आदर मौलाना का है उतना किसी का नहीं है। कुछ मुसलमान कॉङ्ग्रेस से रुपया लेकर कॉङ्ग्रेस का राग अलापने लगे; परन्तु मौलाना पर कॉङ्ग्रेस का जादू नहीं चल सका। इसीलिए उनका इतना आदर है कि मुसलमानों में जितने बहादुर और समझदार लोग हैं वे सब मौलाना के अनुयायी हैं। ठेले वाले, ताँगे वाले, क़साई, कुँजड़े, सब मौलाना की बात मानते हैं। और मानें क्यों नहीं ? मौलाना उनके मन की जो कहते हैं। मौलाना कहते हैं सत्याग्रह मत करो, जेल मत जाओ। कितनी प्यारी बात है। कॉङ्ग्रेस वाले कहते हैं, जेल जाओ, गोली खाओ, मर जाओ। ओफ़ ! कितनी दिमाग़ परेशान करने वाली बात है। स्वराज्य जब मिलेगा तो सबको मिलेगा। यह तो होगा नहीं कि हिन्दुओं को मिले और मुसलमानों को न मिले, अतएव मुफ़्त में मुसीबत उठाने से क्या लाभ ? जब स्वराज्य की हँडिया पक कर तैयार होगी तो हिस्सा बँटाने के लिए मुसलमान भाई दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए आ ही धमकेंगे। तब हिन्दुओं को मजबूर होकर हिस्सा देना ही पड़ेगा। अब कहिए—होशियार कौन है ? यह मौलाना के दिमाग़ की उपज है। फिर भी कुछ लोग मौलाना को बेवक़ूफ़ समझते हैं। हालाँकि वह जितने बेवक़ूफ़ समझे जाते हैं, उतने कदापि नहीं हैं।

दूसरे एक बात यह भी है कि शासन करने वाले ही शासकों की कठिनाइयों को समझ सकते हैं। ग़ुलाम लोग क्या समझेंगे। मुसलमान लोग उन्नीसवीं शताब्दी तक शासक रहे हैं—हिन्दुओं को ग़ुलामी करते सदियाँ बीत गईं। अतएव मुसलमान लोग अङ्गरेज़ों की कठिनाइयों को समझ कर उनसे सहानुभूति रखते हैं। मौलाना शौकतअली का भी यही कहना है कि हिन्दोस्तान में केवल मुसलमान ही शासन कर सकते हैं; क्योंकि उनके शरीर में हुकूमत का ख़ून अभी तक मौजूद है। कदाचित इसीलिए मुसलमान लोग सत्याग्रह से अलग रहते हैं कि सत्याग्रह में मार पड़ेगी, गोली चलेगी तो उसमें शरीर का रक्त निकलेगा। यदि यह हुकूमत से भरा हुआ ख़ून निकल गया तो फिर हुकूमत काहे से की जायगी। जब हुकूमत का रक्त ही न रहेगा तो हुकूमत करेगा कौन ? इसलिए मुसलमान भाई अपने रक्त की बड़ी हिफ़ाज़त कर रहे हैं। यदि यह डौल भी होता कि यह रक्त निकल जाने से इसकी फिर पूर्ति हो सकेगी तब भी ग़नीमत था; परन्तु ऐसा होता दिखाई नहीं देता। यदि तुर्किस्तान यह वचन दे दे कि जितना रक्त आवश्यक होगा उतना वहाँ से भेज दिया जायगा, तब तो मुसलमान भाई आँखें मीच कर सत्याग्रह में जुट पड़ें। परन्तु अब तुर्किस्तान वह तुर्किस्तान नहीं रहा—वह रक्त तो क्या, खारा पानी भी नहीं भेजेगा। इसलिए मुसलमान बेचारे मजबूर हैं।

इसके अतिरिक्त शासकों का काम क़ानून बनाना और उसे मनवाना होता है। सत्याग्रह में क़ानून तोड़ा जाता है। मुसलमान लोग जो अभी परसों तक शासक रहे हैं और अपनी तबीयत से अब भी हैं—वे क़ानून तोड़ना क्या जानें। न जानते ही हैं, और न उनकी इच्छा ही होती है। जहाँ क़ानून का नाम आया, वहीं उन्हें याद आ गया कि कभी हम भी इसी प्रकार क़ानून बनाते थे। यह याद आते ही उन्हें क़ानूनों से इतनी सहानुभूति उत्पन्न होती है कि वह उन्हें तोड़ने का ध्यान तक नहीं ला सकते। जिसके कभी सन्तान रही हो वही सन्तान की क़द्र समझ सकता है—निस्सन्तान नहीं समझ सकता।

विदेशी बॉयकॉट के सम्बन्ध में भी मुसलमान भाइयों का दृष्टि-कोण अपने राम की समझ में बहुत ठीक है। विदेशी का बॉयकॉट तो तब करें जब स्वदेशी मिले। सो हिन्दुस्तान में उन्हें स्वदेशी वस्तुएँ मिल कहाँ सकती हैं। हिन्दू हिन्दुस्तान की बनी हुई वस्तुओं को स्वदेशी समझते हैं; परन्तु मुसलमानों के लिए वह स्वदेशी नहीं है। उनके लिए तो वही वस्तु स्वदेशी हो सकती है, जो तुर्किस्तान अथवा अरब की बनी हुई हो।

सम्पादक जी, आप कदाचित सोचें कि अरब और तुर्किस्तान वाले तो इन्हें टके को नहीं पूछते और ये इनके विचार हैं। परन्तु आप मुसलमानों की सुशीलता को नहीं समझते। अपना भाई यदि नालायक़ निकल जाय और अपने को भाई न समझे तो अपना यह कर्त्तव्य नहीं है कि हम उसे भाई न समझें। अपना कर्त्तव्य तो यह है कि वह अपने को चाहे जूतों से पीटे, परन्तु हम उसे अपना भाई ही समझते रहें। मुसलमान लोग इसी सिद्धान्त पर जमे हुए हैं।

और सब से बड़ी बात तो धर्म की है। इसलाम धर्म कहता है कि इस मर्त्यलोक में जो वस्तु त्याग दी जायगी वह स्वर्ग लोक में प्रचुर परिमाण में और उत्तमोत्तम मिलेगी। शराब पीना इसलाम धर्म में हराम है। अतएव जो यहाँ शराब नहीं पीते, उन्हें स्वर्ग में बड़ी उत्तम शराब मिलती है और पेट भर मिलती है। जो लोग इस लोक में स्त्रियों का त्याग करते हैं उन्हें स्वर्ग में हूरें मिलती हैं। इसी प्रकार सब पदार्थों को समझ लीजिए। अतएव मुसलमान भाई इस लोक में स्वराज्य लेने की आकांक्षा इसीलिए नहीं रखते कि ऐसा करने से स्वर्ग में उन्हें अखण्ड स्वराज्य की प्राप्ति होगी। स्वर्ग के स्वराज्य के आगे इस लोक के स्वराज्य की क्या हस्ती है। इस लोक का स्वराज्य तो बहुत थोड़े दिनों भोगने को मिलेगा, परन्तु परलोक का स्वराज्य स्थायी वस्तु होगा। स्थायी वस्तु को छोड़ कर अस्थायी चीज़ के पीछे पड़ना महामूर्खता है। मुसलमान लोग यह भी समझते हैं कि वे संख्या में हिन्दुओं की अपेक्षा बहुत थोड़े हैं, इसलिए उन्हें सच्चा स्वराज्य कभी नहीं मिल सकता। सच्चा स्वराज्य मिलेगा भी तो केवल हिन्दुओं को। अतएव स्वयम् मर-खप कर हिन्दुओं को स्वराज्य दिलाना कहाँ की बुद्धिमानी है। यह तो अपने पैर में आप ही कुल्हाड़ी मारना है। सो जनाब, मुसलमान ऐसे बेवक़ूफ़ नहीं हैं जो ऐसा करें। ईश्वर ने यह बात हिन्दुओं को ही दी है कि पैर में क्या, ये लोग अपने हाथों से अपने सिर में कुल्हाड़ी मार लें। जो मुसलमान मुसलमानों से सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के लिए कह रहे हैं, वे नासमझ हैं, दूर की बातें सोचने का उनमें माद्दा ही नहीं। दूर की बात वे सोचते हैं जो राउण्डटेबुल कॉन्फ्रेन्स में जायँगे—विलायत की सैर करेंगे, अपने अधिकारों के लिए लड़ेंगे और लौटते हुए हज भी करते आवेंगे। बतलाइए—यह बुद्धिमानी है या यहाँ सत्याग्रह के पचड़े में पड़ कर लाठियाँ खाना और जेल में बन्द होना ? इसमें सन्देह नहीं, मुसलमान लोग बड़े बुद्धिमान हैं, क्यों सम्पादक जी, आपका क्या विचार है ?

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

स्त्रियों का ओज

पतिव्रत-धर्म

[लेखक—???]

(जोधपुर दुर्ग का अन्तःपुर—नेपथ्य में कोलाहल)

राजमहिषी—यह कैसा कोलाहल है, क्या सेना आ रही है? दासी, किसी से कहो, बुर्ज पर जाकर देखे।

(सैनिक का जल्दी से प्रवेश)

सैनिक—(मुजरा करके) महारानी की जय हो। श्रीमहाराजाधिराज युद्ध-क्षेत्र से पीछे पधार रहे हैं।

रानी—(खड़ी होकर) दुर्ग-रक्षक से कहो, महाराज की अभ्यर्थना की तैयारी करे, अभिवादन की तोपें दागना प्रारम्भ कर दो, दासी, तू मङ्गलाचरण और स्वस्ति उपचार की व्यवस्था कर; और देख आज दुर्ग के परिकोटा पर दीपावली होगी। कमला, पुत्री—वीर-पूजा का आयोजन कर, देखती नहीं, महाराज प्रतापी शत्रु को पद्दलित करके लौट रहे हैं। तलवार की पूजा तो तुझे ही करना है। तेरा थाल तैयार है न? (सैनिक से) ठाकराँ, श्रीमहाराज अधिक घायल तो नहीं हैं?"

सैनिक—राजमाता की जय हो, श्रीमहाराज के प्रत्येक अङ्ग में अनगिनत घाव हैं।

रानी—आह, अरी, बनिता, मन्त्री से कह, जल्दी राजवैद्य अपने उपचारों सहित उपस्थित हों। (सैनिक से) ठाकराँ, सेना की अधिक हानि तो नहीं हुई?

सैनिक—घणी खमा, उङ्गली पर गिने हुए योद्धा बचे हैं, सभी सिर से पैर तक घायल हैं।

रानी—विमला, सभी सैनिकों की सुश्रूषा तेरे सुपुर्द है, सावधान, बेटी—प्रमाद न करना। (सैनिक से) ठाकराँ, भला महाराज ने कैसा लोहा लिया?

सैनिक—माता, जैसे केसरी मृगों के झुण्ड में विचरता हो, किसी की सामर्थ्य थी कि श्रीमहाराज की शमशेर के सम्मुख जीवित रहे, परन्तु शत्रु की सेना असंख्य थी, महाराज का दोष नहीं?

रानी—(चमक कर) तुम्हारा वर्णन सन्दिग्ध है, तुम क्या कहना चाहते हो?

सैनिक—(धरती में घुटने टेक कर) घणी खमा अन्नदाता! सेवक का अपराध क्षमा हो?

रानी—झटपट निर्भय होकर सब कुछ ख़त्म करो।

सैनिक—माता, श्रीमहाराज युद्ध से विमुख होकर लौट रहे हैं।

रानी—(गर्ज कर) क्या कहा, विमुख होकर?

सैनिक—हाँ, महारानी।

रानी—ठाकराँ, क्या तुम पागल तो नहीं......?

सैनिक—(घुटने बैठ कर) राजमाता क्षमा हो।

रानी—तब राजा युद्ध में हार कर लौट रहा है?

सैनिक—शत्रु बहुत प्रबल था। और महाराज को समय पर सहायता न मिली।

रानी—(क्रुद्ध सर्पिणी की तरह फुफकार कर) राजा हार कर लौट रहा है?

सैनिक—(भयभीत होकर) परन्तु महाराज की वीरता...

रानी—(धरती पर पैर पटक कर) राजा हार कर लौट रहा है?

सैनिक—(धरती में लोट कर) हाँ माता हाँ,......

रानी—जीवित?

सैनिक—हाँ माता हाँ,......

रानी—और तुम लोग भी?

सैनिक—(चुप)

रानी—और तुम लोग राजपूत हो? (हटो सामने से)

२

दासी—महारानी, पूजा का थाल प्रस्तुत है।

"उसे फेंक दो"

"मङ्गलाचार?"

"बन्द कर दो।"

"क्या दीपावली न होगी?"

"नहीं, वे तोपों की ध्वनि कैसी है?"

"श्रीमती की आज्ञा से महाराज की अभ्यर्थना हो रही है।"

"उन्हें बन्द कर दो।"

"जो आज्ञा।"

"प्रधान दुर्गाध्यक्ष को अभी यहाँ भेज दो।"

"जो आज्ञा।"

"महारानी, राजवैद्य उपस्थित है।"

"उनसे कह दो, लौट जायँ, कोई काम नहीं है।"

"महारानी की जय हो; दुर्गाध्यक्ष उपस्थित है।"

"दुर्गाध्यक्ष, अभी क़िले के फाटक बन्द किए जायँ।"

"किन्तु महारानी, महाराज पधार रहे हैं।"

"वे खेत में काम आए।"

"वे चिरायु हैं।"

"वे मर गए हैं।"

"वे पधार रहे हैं।"

"वे महाराज नहीं।"

"वे महाराज हैं।"

"वे भूत अथवा पिशाच हैं।"

"महारानी, मेरी प्रार्थना...।"

"दुर्गाध्यक्ष, मेरी आज्ञा है, क़िले के फाटक बन्द कर दिए जायँ।"

"क्या महाराज क़िले में न घुसने पावेंगे?"

"नहीं।"

"सैनिक?"

"एक भी नहीं।"

"जो आज्ञा" (प्रस्थान)

३

"पुत्री, वे तेरे पति हैं, उन्हें क्षमा करो।"

"माता, तुम क्यों आईं?"

"पुत्री, महाराज छः मास से दुर्ग के बाहर घायल पड़े हैं, उन पर दया करो।"

"वे मेरे पति नहीं।"

"बेटी, ऐसा न कहो।"

"माता, आप मेवाड़ की लक्ष्मी हैं, आपकी पुत्री का पति कायर है—यह कह कर मेरा अपमान न करो।"

"बेटी, युद्ध में हार-जीत तो होती ही है।"

"मैं नहीं सह सकती।"

"उन्होंने शक्ति भर अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया।"

"वहीं खड़े-खड़े कट मरना उनका कर्त्तव्य था।"

"बेटी, वे फिर जीतेंगे।"

"कुल की आन तो गई।"

"वे बदला लेंगे।"

"राजपूती का तेज नष्ट हो गया।"

"फिर भी बेटी—तू क्षमा कर, मेरे कहने से।"

"नहीं माता, वे मेरे दुर्ग में न आने पावेंगे।"

"वे आरोग्य होते ही युद्ध करेंगे, और बिना विजय किए न फिरेंगे।"

"मैं उनका मुँह न देखूँगी।"

"अच्छा, परन्तु दुर्ग का द्वार खोल दे।"

"वे मेरे सम्मुख न आने पावेंगे।"

"न आवेंगे।"

"अच्छा, यह लो दुर्ग की चाबियाँ।"

४

"महारानी, मैं तुम पर गर्व करता हूँ।"

"स्वामिन्! दासी को यथेच्छ दण्ड दीजिए; मैं हाज़िर हूँ।"

"तुम मारवाड़ की प्रतिष्ठा हो।"

"मैंने महाराज का तिरस्कार किया।"

"तुमने कायरता का तिरस्कार किया।"

"मैंने इतना घायल होने पर भी आपको छः मास दुर्ग में न घुसने दिया!"

"मेरा अपराध ही ऐसा था। राठोरों के सिंहासन की राजमहिषी को यही उचित था।"

"आप मारवाड़ के स्वामी हैं।"

"वह काम इस पद के योग्य न था।"

"महाराज को कितना कष्ट हुआ—वह भी अपनी पत्नी के द्वारा।"

"महारानी, यही तुम्हारा पतिव्रत है, पति की अन्धी ग़ुलामी नहीं। तुम्हारी जैसी पतिव्रता जब देश में हों तो क्या कोई भी पुरुष कायर हो सकता है।"

"तब स्वामी, क्या दासी को क्षमा किया?"

"महारानी, मैं स्वयं तुम्हारे हाथ बिका हूँ।"

"तब इस विजय के उपलक्ष में रास-रङ्ग की आज्ञा दें।"

"प्रिये, यथेच्छ रास-रङ्ग करो, शत्रु के तुम्हारे पति ने ऐसे दाँत खट्टे किए हैं कि वह सदा याद रक्खेगा।"

* * *

सह-शिक्षा

[श्री० उमाशङ्कर जी उप-सम्पादक "आज"]

लड़के-लड़कियों को एक ही दर्जे में एक साथ पढ़ाने की बात अनेक सज्जनों को इतनी भयङ्कर और हानिकर मालूम होती है कि वे इस पर विचार करना भी नहीं चाहते। फिर जब कि बहुत थोड़े ही समय से लड़कियों को पढ़ाने की कुछ आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है तो बहुत से लोग लड़के-लड़कियों की सह-शिक्षा के प्रश्न पर विचार करना समय से पूर्व समझ सकते हैं।

कुछ समय पहले हमारे देश में लड़कियों को स्कूल भेजना भी सामान्यतः बड़ा भयङ्कर और हानिकर समझा जाता था। कहा जाता था कि स्कूल जाने से बाहर की हवा लगने से लड़कियाँ ख़राब हो जायँगी। उन्हें मकान के अन्दर रखने में ही उनकी रक्षा है। लड़कियों का काम घर के अन्दर ही है। वे पढ़-लिख कर क्या करेंगी? क्या उन्हें दफ़्तरों में काम करना है? अब लड़कियों को स्कूल भेजने के सम्बन्ध में ऐसी बातें नहीं कही जातीं। अब स्त्री-शिक्षा का महत्व बताने और इसके पक्ष में तर्क-वितर्क करने की सामान्यतः आवश्यकता नहीं रह गई है।

इसी तरह सह-शिक्षा प्रणाली पर बराबर विचार करते रहने से इस प्रश्न की भयङ्करता जाती रहेगी। इस प्रथा के प्रचलित होने पर इसके सम्बन्ध में जो नाना प्रकार के भ्रम फैले हुए हैं, वे दूर हो जायँगे। यह बात भी स्पष्ट हो जायगी कि इस प्रणाली से समाज की हानि नहीं है, बल्कि उसकी उन्नति में सहायता मिलेगी। बहुत ज़माने से हम लड़के-लड़कियों को अलग ही पढ़ते देखते आए हैं। उनके एक साथ पढ़ने के बारे में हम मुश्किल से ही कभी विचार करते हैं। इसलिए उनकी सह-शिक्षा हमें सर्वथा नई और अनोखी बात मालूम होती है। पर किसी नई बात से घबराने की आवश्यकता नहीं है। कम से कम हमें इस नई प्रणाली पर विचार करना चाहिए तथा इसकी परीक्षा करके सत्य का निश्चय करना चाहिए। बिना इस पर पर्याप्त विचार किए और बिना इसकी पर्याप्त परीक्षा किए इसके विरुद्ध राय क़ायम कर लेना उचित नहीं है।

सह-शिक्षा के ख़िलाफ़ जो मुख्य बात कही जाती है वह यह है कि इस प्रणाली के प्रचलित होने से लड़के-लड़कियों का चरित्र भ्रष्ट हो जायगा, उनकी ज़िन्दगी चौपट हो जायगी, उनके जीवन की सारी आशाओं पर पानी फिर जायगा और उनका भविष्य अन्धकारमय हो जायगा। इस सम्बन्ध में अङ्गरेज़ लेखक श्री० सेसिल-ग्राण्ट और श्री० नॉरमन हाजसन अपनी सह-शिक्षा विषयक पुस्तक में अपने अनुभव के आधार पर लिखते हैं :—

(१) स्कूल में लड़कियों की उपस्थिति से दुराचरण के सर्वथा प्रतिकूल वातावरण, उसी तरह उत्पन्न हो जाता है, जिस तरह शुद्ध वायु बीमारी के कीड़े के लिए प्रतिकूल है।

(२) अगर सह-शिक्षा वाले स्कूल ठीक तरह से चलाए जायँ, अच्छे स्कूलों में चरित्र के सम्बन्ध में जैसी देख-रेख होनी चाहिए वैसी ही सह-शिक्षा वाले स्कूलों में भी हो, तो ये स्कूल दुराचरण से उसी तरह बरी होंगे जिस तरह अच्छे स्कूल चेचक की बीमारी या चोरी की बुराई से बरी होते हैं।

(३) उक्त प्रकार के स्कूल गन्दी बातों और गन्दे क़िस्सों जैसी बुराइयों से भी बरी होंगे।

(४) उक्त प्रकार के स्कूल दुराचरण से बरी तो होंगे ही। इसके साथ ही वे उन लाभों से वञ्चित न होंगे जो उच्च श्रेणी के पृथक स्कूलों से हो सकते हैं।

(५) सह-शिक्षा प्रणाली के स्कूलों से लड़के-लड़कियों के आचरण बिगड़ते तो हैं ही नहीं, बल्कि उनसे उनके अनेक लाभ होते हैं।

इस प्रकार उक्त अङ्गरेज़ शिक्षण विशेषज्ञों के मतानुसार सह-शिक्षा प्रणाली से हानि तो बिलकुल है ही नहीं, उलटे इससे बड़ा लाभ है। उनका यह स्पष्ट मत है कि यदि सह-शिक्षा वाले स्कूलों में लड़के-लड़कियों की पर्याप्त देख-रेख रक्खी जाय तो उनका चरित्र बिगड़ नहीं सकता। उनका यह भी मत है कि इस प्रणाली से शिक्षा पाने वाले लड़के-लड़कियों की स्वाभाविक शक्तियों के विकास में बड़ी सहायता मिलेगी।

एक बार बम्बई के "इण्डियन डेली मेल" पत्र के प्रतिनिधि ने बम्बई के कुछ शिक्षण-वशेषज्ञों से शिक्षा विषयक अनेक प्रश्नों पर बातें कीं। प्रतिनिधि ने अन्य प्रश्नों के साथ सह-शिक्षा के प्रश्न पर भी मत प्राप्त किए। ट्यूटोरियल हाई स्कूल के प्रिन्सिपल श्री० एम० एस० बैनर्जी ने कहा कि—"मैं सह-शिक्षा के प्रश्न पर कुछ अधिकार के साथ अपना मत प्रकट कर सकता हूँ, क्योंकि मैं सह-शिक्षा प्रणाली से चलने वाले भारत के सब से बड़े स्कूल में कुछ वर्षों तक रह चुका हूँ। सह-शिक्षा प्रणाली से कई लाभ हैं। सह-शिक्षा वाले स्कूल में लड़कियों की उपस्थिति से लड़कों में शिष्टता आती है। लड़कियों के साथ पढ़ने से लड़के झगड़ालू और उपद्रवी नहीं होते और गन्दी बातें नहीं बकते। उनका आचार-विचार, रहन-सहन तथा व्यवहार भी अच्छा होता है। लड़कियों की उपस्थिति से लड़के ज़्यादा मेहनत करते हैं, क्योंकि वे लड़कियों के सामने अपमानित होना पसन्द नहीं करते।" इसके साथ ही श्री० बैनर्जी ने कहा कि "सह-शिक्षा प्रणाली से कुछ बड़ी भयङ्कर हानियाँ भी । एक बड़ी हानि यह है कि लड़के और लड़कियाँ ऐसी उम्र में एक साथ पढ़ने से, जब कि उनके चरित्र दृढ़ नहीं हुए रहते, चरित्र-भ्रष्ट हो सकते हैं। यह प्रणाली यूरोप और अमेरिका में असफल प्रमाणित हुई है और भारत में भी कुछ वर्षों तक इसके सफल होने की सम्भावना नहीं है।"

स्पष्ट है कि श्री० बैनर्जी सह-शिक्षा के लाभ स्वीकार करते हैं, पर आपको लड़के-लड़कियों के एक साथ रहने से उनका चरित्र भ्रष्ट होने का भय है। अगर छोटे-छोटे शिक्षालय खोले जायँ और उनमें माता-पिता तुल्य शिक्षक-शिक्षिकाओं के पर्याप्त निरीक्षण में लड़के-लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त करें तो उनके चरित्र-भ्रष्ट होने की सम्भावना न होनी चाहिए।

यहाँ पर यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि पृथक शिक्षालयों में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों के भी चरित्र भ्रष्ट पाए जाते हैं; यही नहीं, बल्कि जो लड़कियाँ या युवतियाँ ऐसी कोठरियों के अन्दर बन्द रक्खी जाती हैं, जहाँ बाहर की हवा पहुँच नहीं पाती, चरित्र-भ्रष्ट पाई जाती हैं। लोग आश्चर्य करके रह जाते हैं, लेकिन इसके प्रतिकार के उपाय पर विचार नहीं करते। वह उपाय यही है कि उन्हें अन्धकार से प्रकाश में लाकर अच्छे वातावरण में रक्खा जाय, उनकी अज्ञानता दूर की जाय, उनकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया जाय और उन्हें अच्छे कामों में लगाया जाय।

बम्बई के कैथडरल हाई स्कूल के प्रिन्सिपल श्री० डब्लू० एच० हैमण्ड ने उक्त पत्र-प्रतिनिधि से सह-शिक्षा के विषय में अपना मत देते हुए कहा कि "मैं सह-शिक्षा प्रणाली के पक्ष में नहीं हूँ, पर इसके समर्थकों के पक्ष में कुछ अच्छे तर्क हैं। मैं लड़के-लड़कियों को उनके आत्म-सम्मान और आत्म-संयम पर छोड़ने के विचार को पसन्द करता हूँ। लेकिन अभी लड़के-लड़कियों की ये योग्यताएँ आरम्भिक अवस्था में हैं। उनके चरित्र की काफ़ी उन्नति हो जाने से जब इन योग्यताओं की उन्नति हो जायगी तब सह-शिक्षा के प्रश्न पर विचार करने का समय होगा, इस समय उनके आत्म-सम्मान और आत्म-संयम पर अधिक निर्भर नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे लाभ होने की अपेक्षा, हानि ही अधिक होगी।"

वस्तुतः श्री० हैमण्ड सह-शिक्षा के विरुद्ध नहीं हैं, पर आपके मत से इसके लिए अभी अनुकूल समय नहीं है। प्रश्न यह है कि इस तरह विचार करने से सह-शिक्षा के अनुकूल समय कैसे आ सकता है? लड़के-लड़कियों को अलग रखने से उनमें आत्म-सम्भान का भाव और और आत्म-संयम की शक्ति कैसे आ सकती है? सच बात तो यह है कि सह-शिक्षा के अनुकूल स्थिति आप ही आप उत्पन्न न हो जायगी, बल्कि ऐसी स्थिति हमें लानी होगी। और अगर हम सह-शिक्षा के अनुकूल स्थिति लाना चाहते हों तो हमें लड़के-लड़कियों को आपस में मिलने और एक साथ पढ़ने का अवसर देना होगा। अगर लड़के-लड़कियों को मिलने-जुलने और एक साथ पढ़ने का अवसर न मिलेगा, तो सह-शिक्षा के अनुकूल स्थिति उत्पन्न नहीं हो सकती।

इस स्थान पर काशी-विद्यापीठ के सुयोग्य अध्यापक श्रीप्रकाश जी का मत उद्धृत करने से उक्त विषय पर कुछ अधिक प्रकाश पड़ेगा। आपने एक बार सह-शिक्षा के प्रश्न पर विचार करते हुए प्रयाग के "लीडर" पत्र में लिखा था—"उत्तर भारत के पुरुषों को समाज की स्त्रियों से मिलने-जुलने की आदत डालनी चाहिए। इसी प्रकार स्त्रियों को भी समाज के पुरुषों से मिलने-जुलने की आदत डालनी चाहिए। स्त्रियों और पुरुषों को शताब्दियों से एक-दूसरे से मिलने का अवसर नहीं मिला है। इससे स्त्रियों के बीच में पड़ने पर पुरुष उनके साथ उपयुक्त व्यवहार करना भूल गए हैं। दोनों का साथ होने से स्त्रियों से उचित प्रकार से मिलने का तरीक़ा पुरुष शीघ्र ही सीख लेंगे। यदि हमें सीखने का अवसर न मिलेगा तो यह निश्चित है कि हम कभी भी सीख न सकेंगे। अगर स्त्रियों और पुरुषों को घर, स्कूल, कॉलेज, समाज और सर्वत्र अलग रक्खा जाय, तो वे एक-दूसरे के साथ रहना उसी तरह न सीख सकेंगे जिस तरह कोई पानी में प्रवेश किए बिना तैरना नहीं सीख सकता। स्त्रियों और पुरुषों को परस्पर शिष्ट व्यवहार करना एक-दूसरे के सामने ही सीखना होगा।"

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि सह-शिक्षा प्रणाली प्रचलित करने में ख़तरा है। यदि हम सह-शिक्षा के अनुकूल स्थिति उत्पन्न करना चाहते हों तो हमें यह ख़तरा मोल लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में एक ग्रेजुएट महिला ने उक्त पत्र में लिखा था—"इससे (सह-शिक्षा से) निःसन्देह ख़तरा है, लेकिन कौन बड़ा और अच्छा काम ख़तरा उठाए और असुविधाएँ सहे बिना कभी पूरा हुआ है? साहसी लोगों का नहीं, बल्कि कायरों का यह काम है कि ख़तरा मोल लेने और ज़िम्मेदारी उठाने से भागें।"

उक्त महिला ने सह-शिक्षा के समर्थन में अपना यह मत प्रकट किया था—"सह-शिक्षा से लाभ है और इसकी ज़रूरत भी है। अगर अध्ययन और परीक्षा के विषय एक ही जैसे हों तो शिक्षा भी एक साथ ही मिलनी चाहिए। पृथक रहने वाले स्त्री-पुरुषों की अपेक्षा ऐसे युवक और युवतियाँ, जो अपनी भलाई-बुराई समझ सकें, आदरणीय और योग्य अध्यापकों से शिक्षा प्राप्त करने के उच्च उद्देश्य के लिए एक ही स्थान पर मिलें तो स्त्रियाँ अधिक उदार और कम शोर व ग़ुल मचाने वाली होंगी और पुरुष अधिक शिष्ट व्यवहार करने वाले और बुरी भावनाओं से ज़्यादा बरी होंगे।"

अक्सर कहा जाता है कि प्रकृति ने स्त्री-पुरुषों में भिन्नता रक्खी है; उनकी मनोवृत्ति में भेद होता है और उनके कार्यक्षेत्र अलग-अलग होते हैं। इसलिए उनका कहना है कि लड़के-लड़कियों की शिक्षा भिन्न होनी चाहिए तथा उनकी शिक्षा के लिए अलग-अलग स्कूल होने चाहिएँ। बम्बई के मारदा न्यू हाई स्कूल के प्रिन्सिपल श्री० के० बी० मर्जबान ने बम्बई के "इण्डियन डेली मेल" पत्र के प्रतिनिधि से सह-शिक्षा के विषय में बातें करते समय भी उक्त प्रकार का मत प्रकट किया था। आपने कहा था—"मैं सह-शिक्षा लाभदायक नहीं मानता। कई स्कूलों में सह-शिक्षा प्रणाली का प्रयोग हुआ, लेकिन उनमें सफलता नहीं मिली। मैं नैतिक अधःपात के भय से सह-शिक्षा प्रणाली का विरोधी नहीं हूँ, बल्कि मैं इसके विरुद्ध इसलिए हूँ कि मेरा विचार है कि लड़के-लड़कियों की शिक्षा में भिन्नता होनी चाहिए। लड़कों को कड़े मिज़ाज का और लड़कियों को कोमल मिज़ाज का होना चाहिए। लड़कों को पुरुषोचित और लड़कियों को स्त्रियोचित गुणों से युक्त होना चाहिए। एक ही स्कूल में ये दोनों बातें नहीं हो सकतीं। दोनों जाति के विद्यार्थियों के पाठ्य-विषय, पुस्तकें, खेल और भवन भी भिन्न होने चाहिएँ। मेरे मन से लड़कों के स्कूल में स्त्री-शिक्षिका का और लड़कियों के स्कूल में पुरुष-शिक्षक का होना ठीक नहीं है। स्त्री-शिक्षा उतनी ही उच्च होनी चाहिए, जितनी पुरुष-शिक्षा, लेकिन दोनों की शिक्षा में भिन्नता होनी चाहिए।"

पहले तो यह समझ लेने की बात है कि प्रकृति ने स्त्रियों और पुरुषों को एक साथ ही जीवन बिताने के लिए बनाया है। दोनों से एक-दूसरे को सहायता मिलती है और एक के बिना दूसरे में अपूर्णता रह जाती है। दोनों को ज़बर्दस्ती अलग रखने का प्रयत्न करना प्रकृति के विरुद्ध चलना है। वस्तुतः शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य यह भी है कि स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के साथ रहने और एक-दूसरे की सहायता करने के योग्य हों। जिस तरह माता-पिता अपने लड़के-लड़कियों का पालन-पोषण एक साथ ही करते हैं और उन्हें एक-दूसरे से पृथक नहीं रखते, उसी तरह माता-पिता तुल्य शिक्षकों और शिक्षिकाओं के पर्याप्त निरीक्षण में भाई-बहिन की तरह लड़के-लड़कियों की शिक्षा होनी चाहिए।

यह ठीक है कि कुछ ऐसे विषय हैं, जो विशेषतः लड़कों के सीखने के लायक़ होते हैं और कुछ ऐसे विषय हैं, जिनके सीखने की आवश्यकता मुख्यतः लड़कियों को होती है। लेकिन अन्य कई विषय ऐसे हैं, जो लड़के-लड़कियाँ दोनों के पढ़ने के होते हैं। पृथक स्कूलों और कॉलेजों में सब लड़के-लड़कियाँ सब विषय नहीं पढ़ते। उनके कुछ विषय समान होते हैं, और कुछ विशेष। इसी तरह सह-शिक्षा प्रणाली के स्कूलों में भी लड़के-लड़कियों के समान तथा विशेष विषयों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है। इन स्कूलों में धर्म, साहित्य, इतिहास, भूगोल, गणित आदि की शिक्षा लड़के-लड़कियों दोनों को समान रूप से मिल सकती है। लड़कों को कृषि, व्यापार, राज्य, और सेना आदि तथा लड़कियों को गृह-प्रबन्ध, पाक-शिक्षा, मातृत्व, शिशु-पालन, सीना-पिरोना, और गाना-बजाना आदि की विशेष शिक्षा दी जा सकती है। समान विषयों की शिक्षा एक ही साथ, एक ही दर्जे में और विशेष विषयों की शिक्षा पृथक दर्जों में हो सकती है। इस तरह समान और विशेष विषयों की शिक्षा एक ही स्कूल में हो सकती है। जो खेल केवल लड़कों के शरीर के अनुकूल हों, उनमें लड़कियाँ सम्मिलित न की जायँ।

हिन्दू-विश्वविद्यालय के आचार्य श्री० आनन्दशङ्कर ध्रुव के सह-शिक्षा विषयक विचार पाठक ज़रूर जानना चाहेंगे। आपने 'श्रीमती नाथीबाई दामोदर थैकरसी इण्डियन वीमेन्स यूनीवर्सिटी' के कनवोकेशन के अवसर पर अपने विचारपूर्ण भाषण में कहा था—"कहा जायगा कि लड़कों के कॉलेजों में लड़कियाँ भी पढ़ सकती हैं और इस प्रकार की सह-शिक्षा प्रणाली भारत के स्त्री-पुरुषों के वर्तमान पार्थक्य का अन्त करने के लिए वाञ्छनीय है। मैं सह-शिक्षा का लाभ मानता हूँ, क्योंकि मैं संसार से पृथक रहने से प्राप्त विशिष्ट प्रकार के सदाचार में विश्वास नहीं करता। लेकिन मेरे तुच्छ विचार में स्त्रियों के पृथक कॉलेजों के न होने से जो हानि होगी उसकी पूर्ति सह-शिक्षा वाले कॉलेजों के लाभ से न होगी। अगर समय-समय पर ऐसे व्याख्यान, वाद, खेल तथा उत्सव आदि किए जायँ जिनमें लड़के-लड़कियाँ दोनों सम्मिलित हो सकें, तो सह-शिक्षा के लाभ प्राप्त हो सकते हैं। लेकिन इस समय स्त्री-शिक्षा का प्रचार बढ़ाने की ज़रूरत है और यह स्त्रियों के लिए विशेष कॉलेज खोलने से ही हो सकता है।"

उक्त मत से पाठक समझ सकते हैं कि आचार्य ध्रुव सह-शिक्षा के लाभ मानते हैं। आपका कहना केवल यह है कि इस समय स्त्री-शिक्षा के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है और यह स्त्रियों के लिए विशेष कॉलेज खोलने से ही हो सकता। वर्तमान स्थिति में आप व्याख्यानों, खेलों और उत्सवों आदि में लड़के-लड़कियाँ दोनों को सम्मिलित करने के पक्ष में स्त्री-शिक्षा प्रचार बढ़ाने के उद्देश्य से पृथक स्कूल और कॉलेज खोलने के विचार का विरोध करने की आवश्यकता नहीं है। इस उद्देश्य से पृथक स्कूल और कॉलेज खोले जा सकते हैं। तत्काल लड़कों के स्कूलों और कॉलेजों के अधिकारियों को इतनी बात तो ज़रूर ही मान लेनी चाहिए कि जो लड़कियाँ लड़कों के स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ना चाहें, उनके लिए कोई रुकावट न रहे। इसके साथ ही ऐसे छोटे-छोटे स्कूल और कॉलेज भी खुलने चाहिएँ जहाँ योग्य शिक्षकों और शिक्षिकाओं के निरीक्षण में सह-शिक्षा प्रणाली का उपयुक्त प्रबन्ध हो तथा जहाँ लड़के-लड़कियाँ एक साथ पढ़ने और खेलने के लिए उत्साहित की जायँ।

श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे प्रसिद्ध शिक्षण-विशेषज्ञ भी सह-शिक्षा प्रणाली के समर्थक हैं, क्योंकि उनके 'शान्ति-निकेतन' में यह प्रणाली प्रचलित है। श्री० अमूल्य सी० सेन वहाँ साल भर रह चुके हैं। आपने वहाँ के सह-शिक्षा सम्बन्धी अपने अनुभव कलकत्ते के "फ़ॉरवर्ड" पत्र में लिखते हुए अपना यह मत प्रकट किया था—"सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि स्कूल की पढ़ाई तक सह-शिक्षा से लड़के-लड़कियों को लाभ है। लड़के-लड़कियों का साथ होने से उनके चरित्र में दृढ़ता आती है। इससे छोटी उम्र और अपरिपक्व बुद्धि के लड़के लड़कियों में गन्दी बातें जानने की इच्छा उत्पन्न होने में रुकावट होती है। इससे स्त्री-पुरुष सम्बन्धी भाव दबते हैं। इससे अपरिपक्व बुद्धि के लड़के-लड़कियों में गन्दे ख़्याल नहीं आने पाते। इतना ही नहीं, बल्कि इससे लड़के-लड़कियों में एक दूसरे के प्रति पवित्र भाव उत्पन्न होता है। शान्ति-निकेतन के स्कूली लड़कों में लड़कियों के या स्त्री-पुरुष-सम्बन्ध के बारे में जानने की इच्छा नहीं पाई जाती। शान्ति-निकेतन के लड़कों में बङ्गाल के किसी अन्य स्कूल के लड़कों की अपेक्षा स्त्री-पुरुष सम्बन्धी बुरे भाव कहीं कम होते हैं।"

श्री० अमूल्य सी० सेन ने तो सह-शिक्षा का पूर्ण समर्थन किया है, लेकिन आपका मत है कि यह शिक्षा-प्रणाली स्कूल तक ही होनी चाहिए। कुछ लोगों का मत है कि बड़ी उम्र के ऐसे युवकों और युवतियों की ही सह-शिक्षा होनी चाहिए जो अपनी भलाई-बुराई समझ सकें। वस्तुतः सब उम्र के लड़के-लड़कियों की सह-शिक्षा से लाभ है, और आवश्यक भी है; यही प्राकृतिक शिक्षा-प्रणाली है। इस शिक्षा-प्रणाली से लड़के-लड़कियों की विशेषताओं के विकास में सहायता मिलेगी और समाज अधिक उन्नत हो सकेगा। बहुत छोटी उम्र के लड़के-लड़कियों के लिए तो पृथक स्कूलों की कोई आवश्यकता ही नहीं मालूम होती। इन छोटे बच्चों के स्कूलों में शिक्षा देने का कार्य सुशिक्षित महिलाओं के सुपुर्द रखना उत्तम होगा। सह-शिक्षा वाले अन्य स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा का काम स्त्रियों और पुरुषों दोनों के सुपुर्द होना चाहिए। लड़कियों के विशेष विषयों की शिक्षा स्त्रियों द्वारा और लड़कों के विशेष विषयों की शिक्षा पुरुषों द्वारा सामान्यतः ज़्यादा अच्छा होगा। स्पष्ट है कि मातृत्व और शिशु-पालन आदि विषयों की शिक्षा के लिए स्त्रियाँ ही, और कृषि और सेना आदि शिक्षा के लिए पुरुष ही उपयुक्त हो सकते हैं।

वर्तमान स्कूलों और कॉलेजों में विद्यार्थियों की संख्या बड़ी होती है। इसका परिणाम यह होता है कि लड़कों को उपयुक्त शिक्षा नहीं हो पाती। शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक का अपने विद्यार्थियों से अति निकट सम्पर्क हो। वर्तमान बड़े-बड़े स्कूलों और कॉलेजों में यह सम्पर्क सम्भव नहीं है। सह-शिक्षा के स्कूलों के सम्बन्ध में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि ये स्कूल बहुत छोटे-छोटे हों, जिससे लड़के-लड़कियों की पर्याप्त देख-रेख रक्खी जा सके।

इस समय स्त्रियों और पुरुषों में बड़ा पार्थक्य है। दोनों का समाज अलग है। सह-शिक्षा प्रणाली प्रचलित होने पर यह पार्थक्य दूर होगा और दोनों के सहयोग से समाज की उन्नति होगी। इसमें किसी नई बात के ग्रहण करने में व्यर्थ भय न करना चाहिए। उचित है कि शिक्षा से दिलचस्पी रखने वाले सज्जन स्वयं 'शान्ति-निकेतन' में रह कर सह-शिक्षा के परिणाम देखें और उन पर विचार करें तथा वहाँ की शिक्षा-प्रणाली के अनुसार नए-नए स्कूल स्थापित करें।

* * *

राउन्डटेबिल-कॉन्फ्रेन्स के तीन आशान्वित प्रतिनिधि

श्री० एम० आर० जयकर

डॉ० ऑम्बेडकर

डॉ० बी० एस० मुञ्जे

कारूर (मद्रास) के महिला-गवर्नमेण्ट ट्रेनिङ्ग स्कूल की शिक्षिकाएँ और छात्राएँ

मलिक लाल खाँ
पञ्जाब की प्रान्तीय 'वार-कौन्सिल' के
'डिक्टेटर', जो जेल में हैं।

प्रोफ़ेसर कृष्णनारायण
आप बाँसुरी बजाने में अद्वितीय हैं

श्री० सकलातवाला
जो इङ्गलैण्ड में रह कर सदैव भारत के हित की
चेष्टा करते रहते हैं।

भारतवर्ष में रेशम के व्यवसाय को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न

(ये चित्र ओल्लूर (कोचीन स्टेट, मद्रास) स्थित सेण्ट मेरी कॉन्वेण्ट के हैं, जहाँ पर कीड़ों से रेशम उत्पन्न करने के लिए एक फ़ॉर्म खोला गया है, और उससे सूत तथा कपड़ा भी तैयार किया जाता है)

रेशम के कीड़ों का भोजनालय

यहाँ रेशम के कीड़े पाले जाते हैं
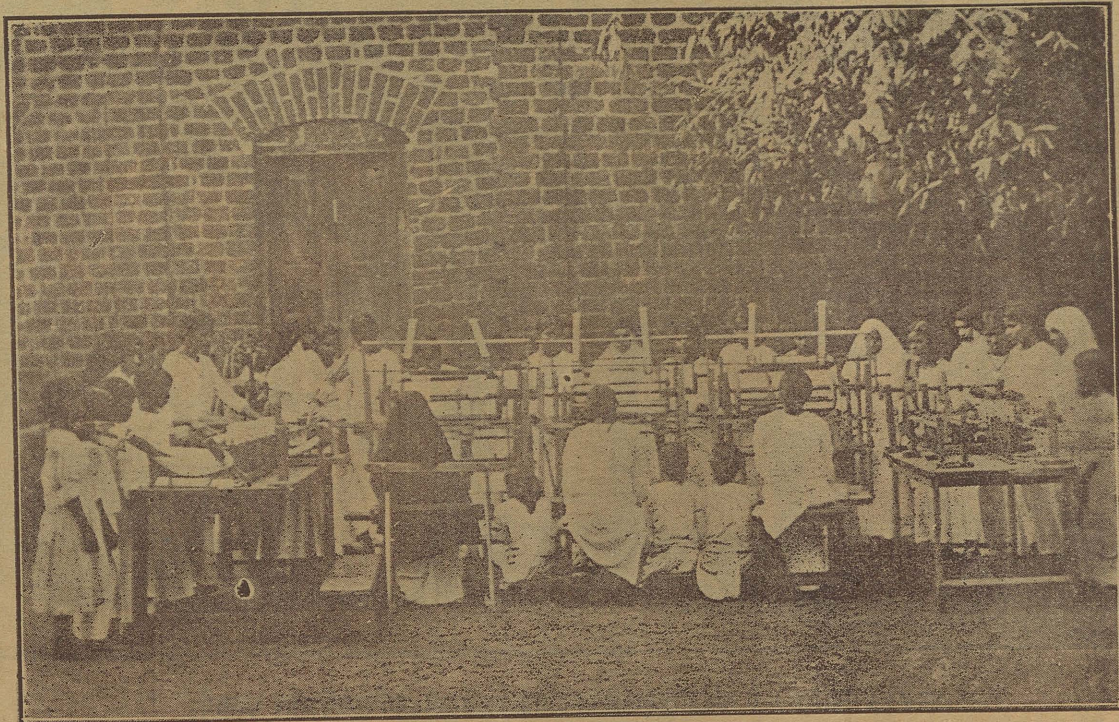
हैण्डलूमों पर रेशमी कपड़ा बुना जा रहा है

कच्चे सूत को धोने की प्रक्रिया

रेशम का सूत तैयार किया जा रहा है

उन्नति के मार्ग में महिलाओं की प्रगति

श्रीमती राजमानिकम अम्मल

ये मद्रास की अगमबादिया जाति की पहली हिन्दू-कन्या हैं, जो एस० एस० एल० सी० पास करके डॉक्टरी का अध्ययन कर रही हैं।

श्रीमती पी० जानकी अम्मल

आप ट्रावनकोर की निवासी हैं और हाल ही में सैलियर—महिला-सम्मेलन की सभापति नियुक्त की गई थीं।

मिस डोरोथी काल्डवेल्स

आपने विलायत की बुक-कीपिङ्ग और एकाउण्टैन्सी की परीक्षा में चार हज़ार प्रतियोगियों के होते हुए सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त किया है।
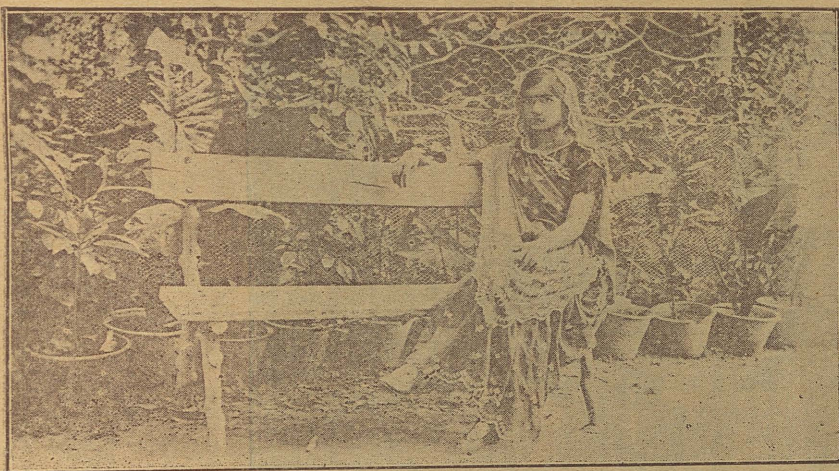
श्रीमती कृष्णाकुमारी सिन्हा

आप बनारस के हिन्दू विश्वविद्यालय की विद्यार्थिनी हैं। आजकल आप राष्ट्रीय आन्दोलन में बहुत अधिक भाग ले रही हैं।
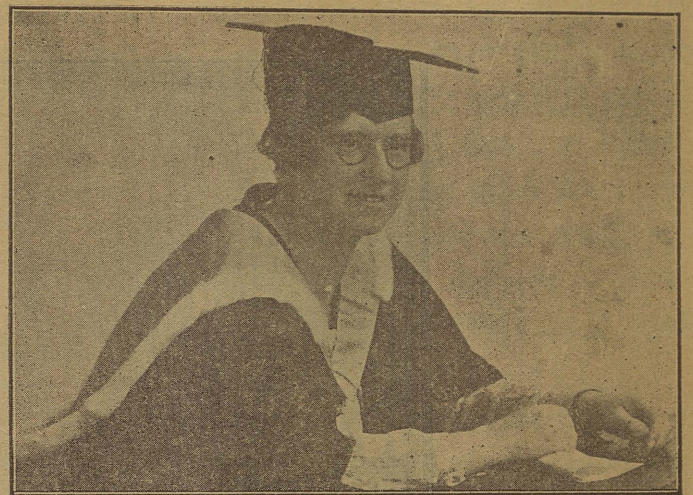
मिस ए० जी० गिलेस्पी

आप हसन (मैसूर) के अस्पताल में लेडी डॉक्टर हैं और हाल ही में स्थानीय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की मेम्बर नियुक्त की गई हैं।

श्रीमती पी० विशालाक्षी अम्मा

आप त्रिचूर (ट्रावनकोर) में ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियत की गई हैं।

मिस इक़बालुन्निसा बेगम

आप बङ्गलोर (मैसूर) के उर्दू स्कूलों की लेडी इन्स्पेक्टर हैं। हाल ही में आपने बी० ए० की परीक्षा पास की है।
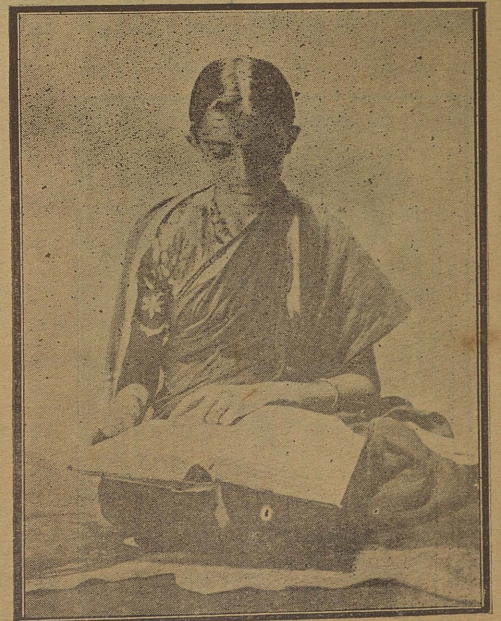
श्रीमती रत्नबाई

आप पुत्तूर (मद्रास) के 'भारतीय महिला-सङ्घ' की सेक्रेटरी चुनी गई हैं।

सत्याग्रह-संग्राम में महिलाओं का आत्मोत्सर्ग

श्रीमती सरोजिनी नायडू (जेल में)
जिनको एशियाई महिला-सम्मेलन की सभापति नियुक्त करने का प्रस्ताव किया गया है।

श्रीमती मनी बहिन पटेल
आप सरदार वल्लभ भाई पटेल की सुयोग्य पुत्री और गुजरात के सत्याग्रह-संग्राम की एक प्रमुख कार्यकर्त्री हैं।

श्रीमती लावण्यप्रभा मित्र (कलकत्ता)
सत्याग्रह-आन्दोलन में आपको चार मास का दण्ड हुआ है।
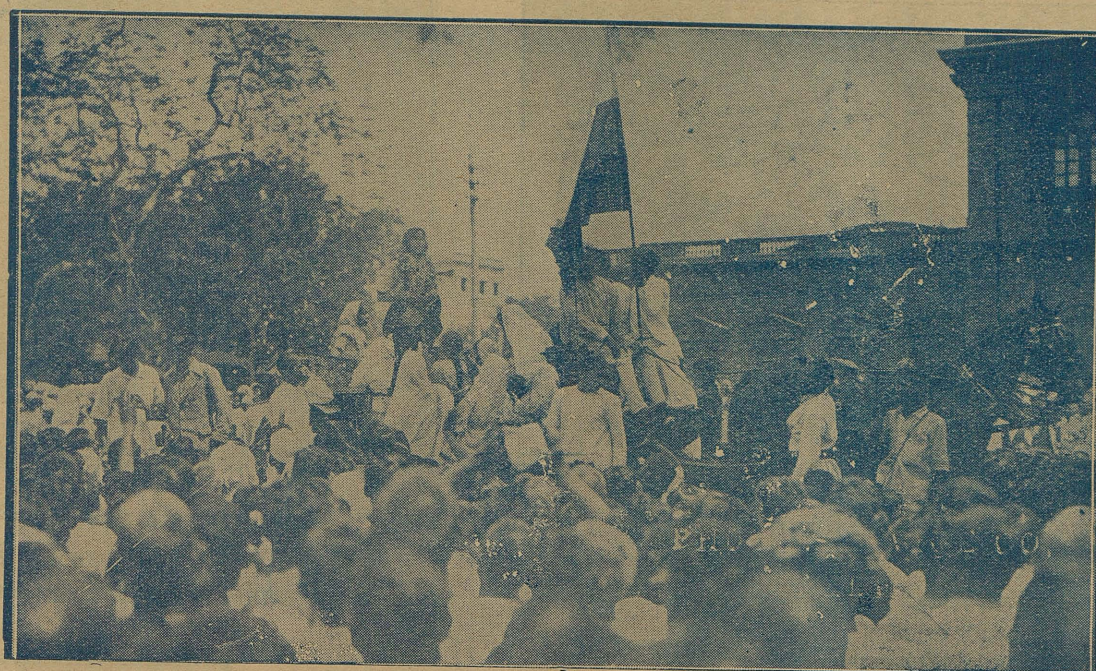
देहली में श्रीमती सत्यवती की जेल-यात्रा का दृश्य

श्रीमती अशोकलता दास (कलकत्ता)
आपको सत्याग्रह में चार मास की सज़ा मिली है।

श्रीमती शान्तिदास, एम० ए० (कलकत्ता)
आप श्रीमती अशोकलता दास की पुत्री हैं। आपको भी चार मास का दण्ड मिला है।

श्रीमती उर्मिला देवी, शास्त्री
मेरठ की महिला-स्वयंसेविकाओं की कप्तान, जिनको छः मास का दण्ड मिला है।
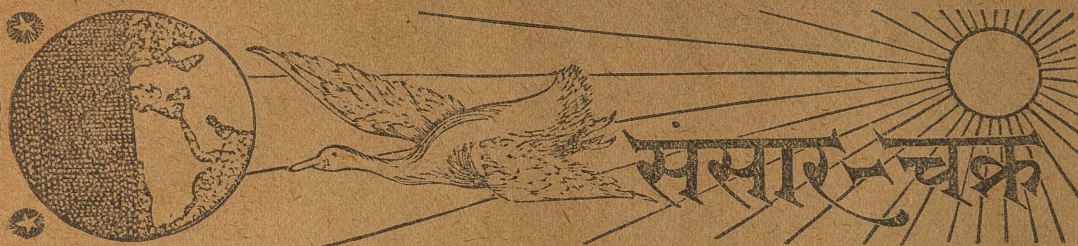
फ़िलीपाइन की स्वतन्त्रता का प्रश्न

[श्री० खण्डेलकर, एम० ए०]

फ़िलीपाइन लोगों की मनोवृत्ति का पता लगाना कोई आसान काम नहीं है; केवल पश्चिम के लोगों के लिए ही नहीं, स्वयं उनके लिए भी वह सदैव एक पहेली रहेगी। वहाँ की स्वतन्त्रता का प्रश्न लीजिए। जब से वहाँ के पूर्व-प्रेज़िडेण्ट मेकिन्ले ने इस बात का वचन दिया है कि एक दिन फ़िलीपाइन के लोग स्वतन्त्र होंगे, तब से स्वतन्त्रता वहाँ के लोगों की बातचीत का प्रधान विषय हो गया था। इससे पहले भी यह विषय उनके मस्तिष्क में घूमा करता था, परन्तु इतने वेग से नहीं। इसमें सन्देह नहीं कि वे लोग स्वतन्त्रता के सच्चे पुजारी हैं। पर इधर कुछ दिनों से यह भाव बहुत कुछ बदल गया है। बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि जो लोग रात-दिन स्वतन्त्रता का स्वप्न देखा करते थे, उन्होंने भी अब उसके पक्ष में बड़ी-बड़ी युक्तियों और प्रमाणों की चर्चा बन्द कर दी है। इसीसे उनकी इस विचित्र मनोवृत्ति के परिवर्तन का पता चलता है। परन्तु यह परिवर्तन क्यों हुआ, यह सदैव एक पहेली रहेगी।

फ़िलीपाइनों का नेता

फ़िलीपाइन की व्यवस्थापक कॉङ्ग्रेस के अधिवेशन के समय कमरा राजनीतिज्ञों से खचाखच भरा था और मीठे नम्र स्वर में एक मध्यम डील-डौल का पुरुष अपना भाषण दे रहा था; अपनी युक्तियों का महत्व दिखाने के लिए वह जोश से कभी दाईं ओर, और कभी बाईं ओर घूमता था। सभा और सीनेट के प्रतिनिधियों में सन्नाटा छाया हुआ था। वह उसका प्रेज़िडेण्ट था और उसका नाम था मैन्यूएल केज़न। उसकी वक्तृता के अन्तिम शब्द थे—"सभ्यगण, मैं फ़िलिपाइन लोगों के स्वतन्त्र राज्य में यहाँ के नरक में रहना पसन्द करता हूँ, परन्तु अमेरिका की परतन्त्रता में यहाँ के स्वर्ग में भी रहना नहीं चाहता।" केज़न के ये शब्द, जिनकी अभ्यर्थना सभासदों ने घण्टे भर तक करतल-ध्वनि से की थी, महीनों फ़िलीपाइन के वायु-मण्डल में प्रतिध्वनित होते रहे। इन शब्दों को केज़न के मुँह से निकले वर्षों व्यतीत हो गए, परन्तु वे अब भी वहाँ सुनाई देते हैं। परन्तु शब्दों की वह ध्वनि अब दिन प्रति दिन क्षीण होती जा रही है। इसमें कुछ भेद अवश्य छिपा है।

परिवर्तन

परिवर्तन का मुख्य कारण तो यह प्रतीत होता है कि वहाँ के भिन्न-भिन्न दलों के नेताओं की मनोवृत्ति 'अमेरिकन' हो गई है; अर्थात् वे लोग अमेरिका की शासन पद्धति से सहानुभूति दिखाने लगे हैं। अब 'शीघ्र और पूर्ण स्वतन्त्रता' की आवाज़ वहाँ नहीं गूँजती, उसके दिन निकल गए हैं। अब भी कुछ नेता पूर्ण-स्वतन्त्रता की आवाज़ उठाते हैं; परन्तु उसके साथ उनके हृदय की पूरी लगन नहीं रहती। इसका एक प्रधान कारण, इस बात की आशा मालूम होती है कि यदि वे एक बार अमेरिका से अपना दृढ़ सम्बन्ध स्थापित कर लें तो उन्हें अमेरिका जैसे धन-कुबेर देश से पूँजी की बहुत सहायता मिल जायगी।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति

डायर जैसे कॉङ्ग्रेस के कुछ सदस्य ऐसे हैं जो फ़िलीपाइन लोगों को यह सलाह देते हैं कि अमेरिकन कॉङ्ग्रेस के द्वारा वे अपने देश को स्वतन्त्र बना सकते हैं। परन्तु वास्तव में स्वतन्त्रता प्राप्ति का यह मार्ग उन लोगों को विशेष फलदायक नहीं है। साम्राज्यवादी राष्ट्रों में जो दोष स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं उनसे अमेरिका बच नहीं सकता। जब क़ानून बनाने का समय आता है तब कॉङ्ग्रेस गरम बहस करने के लिए तैयार अवश्य रहती है; परन्तु जब 'नीति' का प्रश्न उपस्थित होता है तब बड़े से बड़ा वक्ता और प्रभावशाली व्यक्ति उसके सदस्यों को अपने स्थान से एक सुई की नोंक के बराबर भी नहीं टल सकता। और उनकी दलील केवल यह रहती है कि 'वह उनकी नीति के विरुद्ध है।'

अमेरिका की उदासीनता

फ़िलीपाइन लोगों की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में अमेरिकनों की इस उदासीनता का पता उस समय लगता है, जब वहाँ की कॉङ्ग्रेस में इस सम्बन्ध का कोई प्रस्ताव आता है। उस समय पार्टियों का सङ्गठन हो जाता है—(इस प्रकार के प्रश्नों पर उनका सङ्गठन होते देर नहीं लगती)। और फिर संयुक्त राज्य जैसे दृढ़ जन-सत्तात्मक शासन यन्त्र में बिना छान-बीन के ही उसके भाग्य का निर्णय होने में देर नहीं लगती। प्रेज़िडेण्ट हर्बर्ट हूवर के ज़बरदस्त सङ्गठन और वहाँ के धन-कुबेरों की सहायता से यह एक पक्षीय निर्णय और भी अधिक दृढ़ हो जाता है। इस प्रकार फ़िलीपाइन की स्वतन्त्रता की बहुत सी समस्याओं में से एक भी समस्या हल नहीं होने पाती। परन्तु अब वह समय आ गया है जब अमेरिकन लोगों को समस्या का सहारा लेकर किनारा काटने के बदले, एक छोटी सी बात के आधार पर फ़िलीपाइनों से दृढ़ सौहार्द्य स्थापित कर लेना चाहिए।

इस प्रकार दो देशों में सम्बन्ध स्थापित हो जाने से अमेरिका की कुछ हेठी न हो जायगी; प्रत्युत एक तो इससे मित्रता दृढ़ हो जायगी और स्वतन्त्रताप्रिय अमेरिकनों की स्वतन्त्रता से सच्ची सहानुभूति प्रगट होने लगेगी। यदि अमेरिकन कॉङ्ग्रेस फ़िलीपाइन की स्वतन्त्रता पर पूर्ण रूप से विचार कर डाले और वहाँ के लोगों को अधिकार दे दे तो फ़िलीपाइन राष्ट्र से सच्चा और दृढ़ मित्र संसार में उसे कोई दूसरा राष्ट्र न मिलेगा।

फ़िलीपाइन के नेताओं का कर्त्तव्य

फ़िलीपाइन के नेताओं को इस बात का पूर्ण ज्ञान है कि यदि वे एक बार सब अमेरिकनों की कल्पना और मनोवृत्ति को जागृत कर दें तो उन्हें स्वतन्त्रता इतनी सरलता और शीघ्रता से प्राप्त हो जायगी कि किसी को उसका पता भी न लगने पावेगा। श्री केज़न कहते हैं कि—"इससे सरल उपाय और दूसरा नहीं है; इस अवसर को हाथ से मत चूको; श्री० ओसमेना का मत है कि इस समय ग़लती न करना, आदि-आदि।" वे सब फ़िलीपाइन के आदरणीय और अत्यन्त प्रभवशाली नेता हैं। यदि ये सम्मिलित होकर उपर्युक्त कार्य कर डालें तो कुछ ही दिनों बाद अमेरिका का राष्ट्रीय ध्वजा उस देश पर से अपने आप नीचे उतार ली जायगी और कभी दूसरे राष्ट्र के झण्डे के ऊपर उड़ने का साहस न करेगी। फिर अपने 'सूर्य और तीन सितारों' वाले झण्डे को सब से ऊपर चढ़ा कर फ़िलीपाइन संसार के स्वतन्त्र राष्ट्रों के साथ अपने पैर आगे बढ़ाएगा। स्वतन्त्रता का वह दिन फ़िलीपाइन लोगों के अभिमान का दिन होगा।

इतना साहस किसमें है कि वह मनुष्य को उसके ईश्वरदत्त और जन्म-सिद्ध अधिकारों से वञ्चित कर सके। मि० जेम्स का कहना है कि अमेरिकन लोगों में नहीं, केवल जनता और कॉङ्ग्रेस की मनोवृत्ति जगा दो और तुम देखोगे कि पत्थर का हृदय भी पिघल कर तुम्हारे अधिकार तुम्हें समर्पित करने के लिए तैयार हो जायँगे।

'चाँद' कार्यालय

की

अनमोल पुस्तकें

निर्वासिता

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्य-पूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। यह उन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, पृष्ठ-संख्या लगभग ५००, सजिल्द एवं तिरङ्गे कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य ३) रु०; स्थायी ग्राहकों से २।)

वीरबाला

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए, युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

सन्तान-शास्त्र

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

अनाथ पत्नी

इस उपन्यास में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें!

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्त-काल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनोमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं! मूल्य केवल २)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

तीसमार ख़ाँ की हजामत

(गताङ्क से आगे)

अङ्क—१, दृश्य—२

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

तीसमार ख़ाँ का ज़नानख़ाना

(तीसमार ख़ाँ की बीवी दिलारा बेगम)

दिलारा—आग लगे ऐसे अख़्तियार में कि निगोड़ी भङ्गिन तक भी बिला काम के झाँकने नहीं आती। माना कि मेरे मियाँ इतने बड़े दारोग़ा हैं और सारा काम हुकूमत के ज़ोर से करा लेते हैं। मगर हाय! डण्डों से हमदर्दी नहीं मिलती, मुहब्बत नहीं मिलती! जिसके लिए दिल रातों-दिन तरसा करता है। मेरे बाप एक मामूली आदमी हैं फिर भी जब तक वहाँ रहती हूँ, सारी दुनिया अपनी मालूम होती है। मगर यहाँ एक अदना पड़ोसिन भी मुझसे दिल खोल कर मिलने नहीं आती! और न कोई मुझी को अपने यहाँ किसी काम-काज में बुलाने की हिम्मत करती है। उफ़! ऐसे जीने पर लानत है। जानवर भी ऐसी ज़िन्दगी बसर नहीं कर सकते।... कौन है धोबिन?

(रमझारी का कपड़ों का गिट्ठर लिए स्टेज के कोने में दिखाई देना)

रमझारी—नाहीं। हम हन उनके बिटिया रमझारी। लो आपन कपड़ा। (वहीं से कपड़ों का गिट्ठर फेंक देती है)

दिलारा—कल ही तो चौकीदार तेरी माँ को कपड़े दे आया था। क्या एक ही दिन में सब धुल गए?

रमझारी—नाहीं। अब आपके कपड़ा न धोआ जाई। हमरे हीयाँ पञ्चाइत भवा है कि विदेसी कपड़ा कोऊ न धोवे। जे धोई वहके हुक़ा-पानी बन्द होइ जाई।

दिलारा—क्या-क्या दारोग़ा जी का तुम लोगों को कुछ भी डर नहीं है? जानती हो आफ़त कर देंगे?

रमझारी—बलइया से।

दिलारा—हमारे कपड़े न धोए जाएँगे तो क्या हम लोग मैले-कुचैले रहें?

रमझारी—तो सुदेसी काहे नाहीं पहनित है?

(लौट जाती है)

दिलारा—अरे! सुन-सुन-सुन तो।

रमझारी—(पलट कर) का होय?

दिलारा—तेरी माँ क्यों नहीं आई?

रमझारी—हमरे महतारी का पूछ कर का करब, आपका अपने कपड़वे से तो मतलब है।

दिलारा—सिर्फ़ कपड़ों ही से मतलब है? गोया मैं आदमी नहीं, मुझे आदमियों की सङ्गत पसन्द नहीं? क्यों? जा उसको भेज दे। मैं उसे समझा दूँ। वह ऐसा न करे। वरना दारोग़ा जी के कानों तक ख़बर पहुँचेगी तो......

रमझारी—तो का होई? सजा कराय देहैं। बस? अब बड़े-बड़े आदमी जेलखाना जात हैं। हम लोगन के कौन गिनती? एका अब हम सभे नाहीं डिराइत है।

दिलारा—(अलग) ग़ज़ब ख़ुदा का। जिस अख़्तियार के ज़ोम में हमारे मियाँ अन्धे हो रहे हैं। दीन-दुनिया भूले हुए हैं, आज उसकी यह हालत हो रही है कि इसकी परवा एक धोबिन की छोकड़ी भी नहीं करती। सच है अख़्तियार की शान जभी तक है जब तक इसका दबदबा रहता है। और दबदबा ज़ुल्म और बदी से नहीं, बल्कि हमदर्दी और इन्साफ़ से क़ायम रहता है। जहाँ यह बातें नहीं, तहाँ अख़्तियार काहे को, वह ख़ासी ज़िल्लत है। (रमझारी को जाते हुए देख कर) अरे! फिर चली। बात तो सुन ले। तू तो बड़ी तर्रार मालूम होती है। तेरी माँ से मुझे कुछ कहना है। जा उसे जल्दी से भेज दे। भूलना मत।

रमझारी—(पलट कर) वह नाहीं आय सकत है। आज हीयाँ के सब मेहररुवे गाँधी बाबा के झण्डा निकाले हैं। सुदेसी के परचार करिहैं। दीदी हुवाँ जइहैं कि आपके हीयाँ आइहैं?

दिलारा—क्या औरतें भी झण्डा निकालेंगी?

रमझारी—काहे? मेहररुवे मनई न होंय कि खाली मर्दने में दुम-पोंछ लाग है? अब तो मेहररुवे वह काम करते हैं कि मर्द का खाय के करिहैं? आपका का मालूम? आप तो पर्दे के बू-बू बनी घर माँ घुसरी रहित हैं।

दिलारा—उसमें कौन-कौन औरतें शामिल होंगी?

रमझारी—हिन्दू मुसलमान छोट बड़ी सभे। कोई घर बाक़ी न रही।

दिलारा—क्या पर्दे वाली भी जायँगी?

रमझारी—बड़ी-बड़ी रानी-महारानी तक जब सुदेसी के खातिर घर से बाहर निकस पड़ीं तो अब पर्दा कहाँ रह गवा?

दिलारा—हाँ? औरतें इतनी आज़ाद हो गईं? अच्छा ज़रा अन्दर आकर इतमीनान से बैठ, ताकि मैं—

रमझारी—नाहीं दादा। आपके कपड़ा धोवब बन्द कै दीन हैं। कहूँ लोटा थरिया पकड़ाय के सजा कराय देव। कौन ठीक? आपके बड़ा अख़्तियार है।

(भाग जाती है)

दिलारा—(अकेली) भाग गई? उफ़! ऐसे अख़्तियार को झाड़ू मारूँ। जिसने मुझे दुनिया की निगाहों में ऐसी ज़लील कर रक्खा कि मैं एतबार की क़ाबिल भी नहीं समझी जाती। जैसा सलूक़ मियाँ दुनिया के साथ करते हैं, उसी का बदला आज दुनिया भी देने को तैयार हो गई। यह उसको ठोकर मारते थे और आज वही इनसे ठोंकरों से बातें करती है। मगर हाय! उसकी चोट वह नहीं, मैं सह रही हूँ। वह अपनी जा-बेजा काररवाइयों से बुरे थे तो मैं उनके साथ क्यों बुरी समझी जाती हूँ? इसीलिए कि हिन्दुस्तानी औरतों की कोई हस्ती और कोई वक़अत नहीं है। हम लोग जानदार आदमी नहीं, बल्कि अपने-अपने मर्दों की महज़ बेजान दुम मानी जाती हैं। तभी तो हम लोग लाख अच्छी होने पर भी गेहूँ के साथ घुन की तरह अपने-अपने मर्दों की बुराइयों में पीसी जाती हैं। अल्लाह का शुक्र है कि यहाँ की औरतों को अपने निजी रुतबे का कुछ ख़्याल आया और पर्दा तोड़ कर अपनी आज़ादी की बुनियाद डाली। बस चले तो मैं भी उनका साथ दूँ। जब तक मैं दुनिया का साथ न दूँगी तब तक वह मुझे क्यों पूछने लगी? मियाँ दारोग़ा हैं मैं तो दारोग़ा नहीं हूँ। उन्हें सुदेसी से नफ़रत है। मगर मैं नफ़रत क्यों करूँ? तो क्या मैं भी झण्डे वाली औरतों के साथ जाऊँ? कहीं मियाँ बुरा न माने—

(मुनुवा का तकली लिए आना)

मुनुवा—अम्मी तिकुली लाया। तिकुली लाया। यह देखो।

दिलारा—अरे! इसे कहाँ से लाया?

मुनुवा—एक लड़के से एक पैछे में मोल लिया है। अब्बा ने पैछा दिया था। अब हम बी छूत बनाएँगे।

दिलारा—तो तुझे यही ख़रीदना था बेवक़ूफ़ फेंक दे इसे। मकान से दूर जाकर फेंकना।

मुनुवा—काहे अम्मा?

दिलारा—तेरे अब्बा! इसे देखते ही तुझे फाड़ खाएँगे। जानता नहीं कि उन्हें सुदेसी बातों से इतनी नफ़रत है कि इसके बरतने वालों तक से बहुत ख़फ़ा होते हैं।

मुनुवा—नहीं अम्मा! अब्बा नहीं ख़फ़ा होंगे। अब तो वह बी हलामी हो गए।

दिलारा—क्या?

मुनुवा—छचमुच अम्मा। हमने अपने कानों छे छुना है। अब्बा भी कहते थे कि छराब पीना हलाम है विदेछी माल लेना हलाम है।

दिलारा—हाँ? सच?

मुनुवा—बिल्कुल छच अम्माँ। बले जोल से कहते थे।

दिलारा—वाह! तब तो जो हिचक थी जाती रही, अब मैं ज़रूर जाऊँगी।

मुनुवा—कहाँ अम्मा?

दिलारा—शहर भर की औरतों के साथ गाँधी बाबा का झण्डा निकालने।

मुनुवा—क्यों?

दिलारा—नहीं जानती। मगर जैसा सब करेंगी वैसा मैं भी आज से करूँगी। क्योंकि मैं भी दुनिया में रहती हूँ, अलग नहीं।

मुनुवा—तो अम्माँ हम बी चलेंगे।

दिलारा—नहीं बेटे। थक जावगे, यहीं खेलो।

मुनुवा—नहीं अम्माँ।

दिलारा—फिर नहीं मानते। जाओ खेलो।

(जाती है)

मुनुवा—(अकेला) अच्छा जाओ। हम बी पीछे-पीछे जाँयगे। जब घूम के ताकोगी तो भाग आएँगे।

(उसी तरफ़ जाता है)

अङ्क—१, दृश्य—३

(तीसमार ख़ाँ के मकान का सामना)

(तीसमार ख़ाँ का बड़बड़ाते हुए आना)

तीसमार ख़ाँ—वह साला चौकीदार गारद वालों के पास नहीं गया। न जाने कहाँ चला गया। मैं अब तक उसी की इन्तज़ार में थाने पर गारद लिए बैठा था।

(बटेर ख़ाँ का घबड़ाया हुआ आना)

बटेर—हुज़ूर ग़—ग़—ग़—ग़—ग़ज़ब हो गया।

तीसमार ख़ाँ (घबड़ा कर) क—क—क—क—क्या हुआ।

बटेर—अभी मुख़बिरों से ख़बर मिली है कि धरना देने के लिए तमाम शहर की औरतें फट पड़ी हैं।

तीसमार ख़ाँ—औरतें?

बटेर—जी हाँ औरतें! मगर इन्हें औरतें न समझिएगा। मर्दों की भी चची हैं चची!

तीसमार ख़ाँ—अरे बाप रे! क्या यह लोग रोक-टोक करने से कहीं हाथ तो नहीं चला बैठती हैं?

बटेर—नहीं। बस इतनी ही तो ख़ैरियत है।

निर्मला

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १।॥=) मात्र !

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉल्सटॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "लॉ मिज़रेबुल" इब्सन के "डॉल्स हाउस" गोस्ट और ब्रियो का "डैमेज्ड गुड्स" या "मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर सर्वथा अवलम्बित होती है। उपन्यास नहीं, यह सामाजिक कुरीतियों और अत्याचारों का जनाज़ा है !!

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। मू० २॥) स्था० ग्रा० से १।॥=)

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल ॥।); स्थायी ग्राहकों से ॥-)

नायक और नायिका के पत्रों के रूप में यह एक दुःखान्त कहानी है। हृदय के अन्तःप्रदेश में प्रणय का उद्भव, उसका विकाश और उसकी अविरत आराधना की अनन्त तथा अविच्छिन्न साधना में मनुष्य कहाँ तक अपने जीवन के सारे सुखों की आहुति कर सकता है—ये बातें इस पुस्तक में अत्यन्त रोचक और चित्ताकर्षक रूप से वर्णन की गई हैं। आशा-निराशा, सुख-दुख, साधन-उत्कर्ष एवं उच्चतम आराधना का सात्विक चित्र पुस्तक पढ़ते ही कल्पना की सजीव प्रतिमा में चारों ओर दीख पड़ने लगता है। मूल्य केवल ३); स्थायी ग्राहकों से २)

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ॥)

हिन्दू-त्योहार इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी, लोग इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इन्हें मनाती हैं, वे भी अपने त्योहारों की वास्तविक उत्पत्ति से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। कारण यही है कि हिन्दी-संसार में अब तक एक भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। वर्तमान पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने छः मास कठिन परिश्रम करने के बाद यह पुस्तक तैयार कर पाई है। शास्त्र-पुराणों की खोज कर त्योहारों की उत्पत्ति लिखी गई है। इन त्योहारों के सम्बन्ध में जो कथाएँ प्रसिद्ध हैं, वे वास्तव में बड़ी रोचक हैं। ऐसी कथाओं का भी सविस्तार वर्णन किया गया है। प्रत्येक त्योहार के सम्बन्ध में जितना अधिक खोज से लिखा जा सकता था, लिखा गया है। सजिल्द एवं तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी-सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-साहित्य को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सङ्गीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुवन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुवन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट काव्य-कला का परिचय देती हैं।

अधिक प्रशंसा न कर, हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। एक बार हाथ में लेते ही आप बिना समाप्त किए नहीं छोड़ेंगे। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो-रङ्गों में छप रही है। मूल्य केवल १); स्थायी ग्राहकों से ॥।)

तीसमार ख़ाँ (ऐंठ कर) तब कुछ परवा नहीं। गारद लेकर फ़ौरन आओ। और सुनो—(कान में कहता है)

बटेर—क्या औरतों पर भी ?

तीसमार ख़ाँ—हाँ जी, मर्द, औरत, बच्चे सबको एक ही काठी से हम तो हाँकना जानते हैं। ऐसा न करें तो पबलिक हमको तीसमार ख़ाँ नहीं, गाजर-मूली ख़ाँ समझने लगेगी।

बटेर—मगर हुज़ूर, कहीं बड़े साहब जान गए तो हम लोगों की जान आफ़त में पड़ जायगी।

तीसमार ख़ाँ—अरे ! हम क्या कोई चीज़ ही नहीं हैं। हम सब सँभाल लेंगे, किसकी मजाल है जो हमारी शिकायत उनसे करे। बस वही बात। समझे ?

बटेर—तब हुज़ूर आप भी चलें। औरतों का मामला ठहरा। कहीं आफ़त न बरपा हो जाय।

तीसमार—अजब बेवक़ूफ़ हो। वह विलायती मेमें

तीसमार—अबे यह गारद है उल्लू के पट्ठे ?

कल्लू—यू हम नाहीं जानित है, जेहका आप बुलावे कहेन रहा तेहका हम बुलाय लायन। सहर के कौनौ नाऊ नाहीं आए। तब देहात से एहका लायन हैं। बहुत नीक मूड़त है। एहके बाप बम्बई होय आवा है।

तीसमार—अबे गदहे तू तो गारद बुलाने गया था ?

कल्लू—तो का नाऊ के जरूरत नाहीं है ? (नाई से) अच्छा जाओ भाई।

तीसमार—यह क्या करता है ? जो पूछता हूँ उसका क्यों नहीं जवाब देता ?

कल्लू—(नाऊ से) डोल जाओ हो। तूका देख के केतिक गुस्सा होत हैं।

(नाई जाता है)

तीसमार—अबे ! आयँ ! उसे क्यों भगाए देता है ? बुलाओ उसे। (कल्लू दूसरी तरफ़ जाने लगता है) और तू कहाँ चला ?

तीसमार—अबे गारद गई ऐसी तैसी में। नाई को जल्दी बुला। उसे देखते ही मेरी दाढ़ी में खुजली मच गई है।

कल्लू—जुआँ पड़ गवा होई सरकार। अच्छा सबुर करो। अब्बै बुलाए देइत है।

(कल्लू जिधर नाई गया है उधर जाता है)

तीसमार—उफ़ ! बड़ी खुजली मची है। क्या करूँ।

(नाई के साथ कल्लू एक कुर्सी लिए आता है)

कल्लू—लो हजूर यह कुर्सी और यह नाऊ।

तीसमार—क्यों बे नाई के बच्चे हरामज़ादे ! तुम लोगों को बड़ा मिज़ाज हो गया है। साले बुलाने से नहीं आते हो ?

कल्लू—(अलग) अब दादा हमार हीयाँ गुजर नाहीं।

(चुपके से भाग जाता है)

नाई—हम तो हजूर हीयाँ रहतो नाहीं हन, हमका
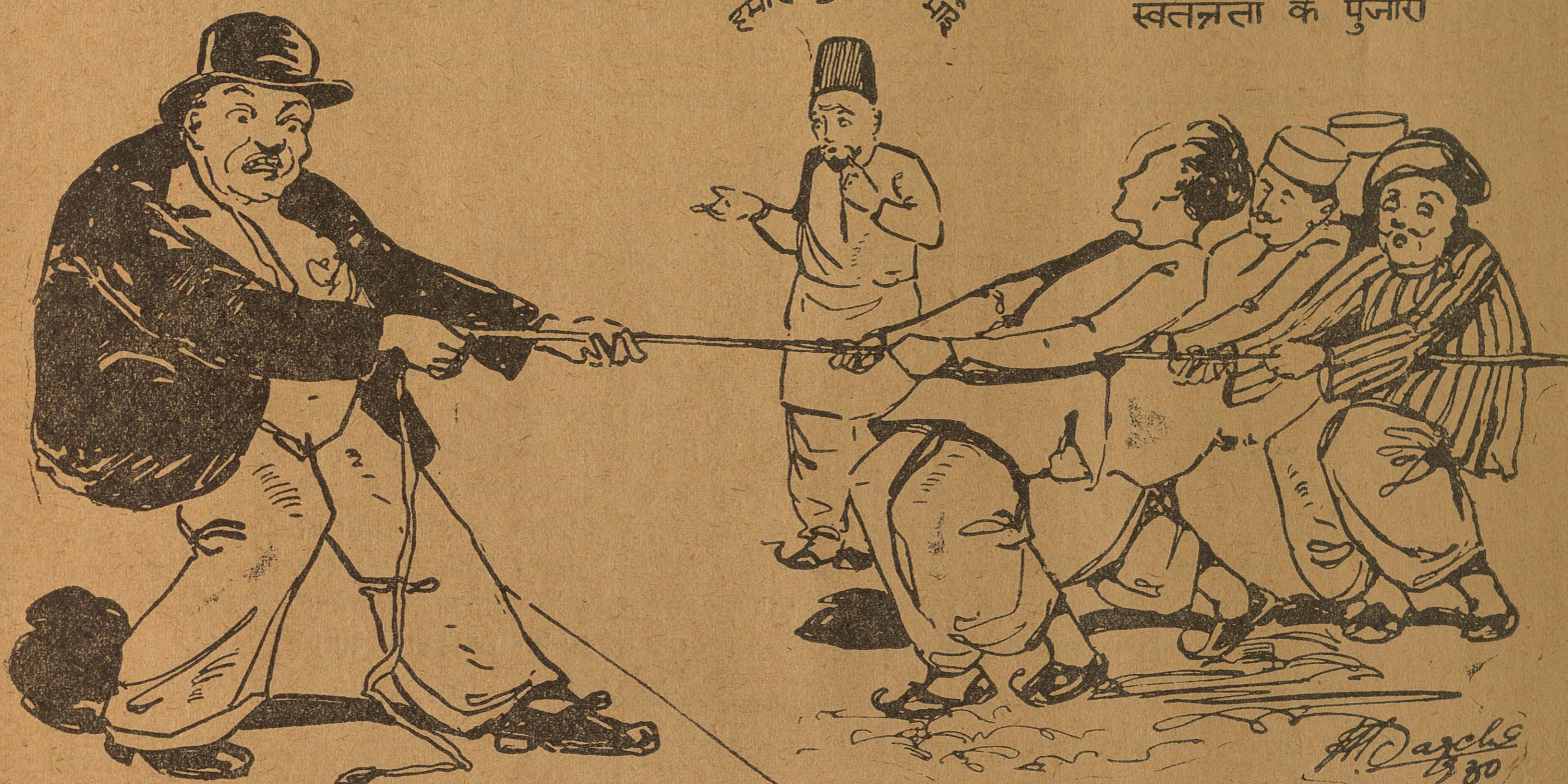
टग ऑफ़ वार

थोड़े ही होंगी ? हिन्दुस्तानी औरतें होंगी, हिन्दुस्तानी। समझे ? जिनके लिए हिन्दुस्तानियों का ख़ून कभी जोश ही नहीं खा सकता। यह हमने आज़मा कर ख़ूब देख लिया है।

बटेर—मगर हुज़ूर चलें ज़रूर।

तीसमार—हाँ, तुम आगे चल कर कार्रवाई करो, मैं अभी आता हूँ। ज़रा नाश्ता कर लूँ। दिन भर हो गए, घर के अन्दर क़दम रखने की मुहलत नहीं मिली।

(बटेर ख़ाँ जाता है, दूसरी तरफ़ से कल्लू आता है)

कल्लू—अरे ! हजूर लायन लायन लायन। बड़े मुश्किल से मिला है।

तीसमार—क्या गारद ?

कल्लू—हाँ ! देखो। (जिधर से आया था उधर घूम कर) आओ हो नाऊ भाई।

(एक देहाती नाई का आना)

कल्लू—जाइत है गारद बुलावे।

तीसमार—अबे गारद के बच्चे। पहिले नाई को बुला ले।

कल्लू—(अपना कान पकड़ कर) नाहीं सरकार, अब अस गल्ती नाहीं होय सकत है। एक बाजी नाऊ बुलाए के भर पाएन।

तीसमार—हाय ! हाय ! तू तो बड़ा हुज्जती है हरामज़ादा ! जब वह दूर निकल जायगा तब कहाँ बुलाने जाएगा ?

कल्लू—हजूर हम अकेल जीव हन। चाहे हमसे आप गारद बुलवाए लेईं चाहे नाऊ, दूनो काम नाहीं होय सकत है।

तीसमार—अच्छा नाई को तो बुला कम्बख़्त !

कल्लू—मुल पाछे गारद बुलवाए के तो न कहब ? यू आप सोच लेइ।

आज के पहिले कब्बो नाहीं आप बुलवाएन हैं। नहके आप रिसिया होइत है।

तीसमार—मैं नाहक़ ख़फ़ा होता हूँ ? क्यों ? यह तुम्हीं लोगों की बदमाशी से मेरी दाढ़ी की यह हालत है। साले एक-एक को भून के खा जाऊँगा। तेरी ऐसी तैसी करूँ—(मारता है)

नाई—अरे ! अरे ! बाप रे बाप ! हम का बिगाड़ेन हैं।

तीसमार—चुप बदमाश ! चल इधर। बनाओ हजामत।

नाई—(अपना बदन झाड़ता हुआ अलग) अच्छा हमहूँ अस हजामत बनाइब कि तू हूँ याद करिहो। पन्छी में कउवा अऊर आदमी में नउवा सभै जानत हैं। एहकर कसर हम जो न निकारेन तो हम नाऊ नाहीं, चमार।

तीसमार—(कुर्सी पर हजामत बनाने की तैयारी में बैठा हुआ) अबे बनाता क्यों नहीं ?

नाई—(हाथ जोड़ कर) हजूर हम नाऊ हन, घास नाहीं छोलित है।

तीसमार—यह क्या ?

नाऊ—हजूर हम खुर्पी नाहीं लायन है।

तीसमार—अरे ! यह कैसा गँवार नाई पकड़ लाया जो खुर्पी से दाढ़ी बनाता है। क्यों बे तू उस्तुरा नहीं रखता ?

नाई—हजूर हमारे पास सामान तो सब बम्बइया है। छूरा साबून बुरुस सब चीज़। मुल कहा मानी, आप यू दाढ़ी न मुड़वाई।

तीसमार ख़ाँ—तब क्या अपनी शकल रीछ सी ख़ब्बीस बनाए रहें ?

नाई—तौन नीक, मुल जहाँ आप दाढ़ी मुड़वाए देब तहाँ यह सूरत बानर अस निकस आई। यही तो अस दाढ़ी में खराबी है। हम कइयू बनाए के देख चुकेन है।

तीसमार ख़ाँ—तेरा सर ! बदमाश कहीं का। बहानेबाज़ी करता है।

नाई—बहाना नाहीं सरकार, साँचो कहित है। (दाढ़ी टटोल कर) बाप रे बाप ! यू दाढ़ी है कि ससुर झाऊ के जङ्गल। हजूर हाथ जोड़ित है, हम बहुत ग़रीब हन। हमरे छूरा के धार टूट जाई।

तीसमार ख़ाँ—अबे पहिले साबुन से भिगो ले तब देख बाल कैसे मुलायम पड़ जाते हैं।

नाई—साबुन कूची तो है, मुल सरकार हमरे बापी के होय। हम कब्बो साबुन से बनावा नाहीं है।

तीसमार ख़ाँ—अजब गँवार से पाला पड़ा। अबे गदहे ! कूची को पानी में डुबो कर साबुन से रगड़, उसके बाद उसे मेरी दाढ़ी पर लगा।

नाई—बहुत अच्छा। ऐसे सरकार बतावत जाई। हम गँवार मनई हन।

(कूची में साबुन लगा दूर खड़ा होता है। और जिस तरह से आतशबाज़ी में आग लगाई जाती है, उसी तरह से हाथ बढ़ा कर कूची को तीसमार ख़ाँ की दाढ़ी से एक जगह छुलाता है।)

तीसमार ख़ाँ—अबे इसको मेरी दाढ़ी पर रगड़।

नाई—नाहीं सरकार। यू हमसे न होई, हमार जीव बहुत डरात है। कहूँ आपके मुहें में हमार कूची घुसड़ जाई तो मिलब मुसकिल होय जाई। आपे ऐह पर आपन गाल रगड़ी।

तीसमार—मैं किस तरह रगड़ूँ बेवक़ूफ़ ?

नाई—आप आपन मूड़ी गिरगिट अस नीचे-ऊपर हलाई तो। हम समनवा कूची किए हन। हाँ हलाई।

तीसमार—अबे तू तो बड़ा उल्लू मालूम होता है। अच्छा यह ले। (अपना सर हिला कर कूची से अपना गाल रगड़ता है।)

नाई—अउर हाली-हाली। अस नाहीं अस। (दूसरे हाथ से तीसमार ख़ाँ का कान पकड़ कर ख़ूब कस-कस के झटका देता है।)

तीसमार—अबे यह क्या बेहूदा नाला × × ×

नाई—(तीसमार ख़ाँ का गाली देने के लिए मुँह खुलते ही अपनी साबुन की कूची उसमें गप से डाल देता है।) हाय ! हाय ! सरकार हमार कूची खाय लेब का ? हम गरीब आदमी हन। मुँह अउर खोली, नाहीं हम बिलाय जाब। (एक हाथ से तीसमार ख़ाँ की नाक में दो उँगलियाँ डाल कर मुँह ऊपर को उठाता है, तब दूसरे हाथ से कूची उसके मुँह से अलग करता है।)

तीसमार—आख़ थू ! आख़थू—आँक छी ! आँक छी ! उफ़ ! मार डाला। यह साला नाई नहीं, पूरा क़साई है। उस पर से कम्बख़्त कभी कान पकड़ता है और कभी नाक !

"नाक-कान न पकड़ी तो यह डेढ़ पसेरी के मूड़ कोन चीज़ पकड़ के हलाइत। खोपड़ी में कहूँ खूँटी थोड़े गड़ी है।"

तीसमार—आ—आ—आक छीं ! अबे तूने मेरी नाक में उँगली क्यों खोंस दी ?

नाई—तो आपके मुहाँ खुलत कसस ? आपे तो हमार कुचिया सगरो भछ लीन रहा। हम आपके कनवा न पकड़े होइत तो आप हमार हथवो लील लेइत।

तीसमार ख़ाँ—चुप रह। ला कूची हमें दे। हम इधर लगा लेंगे।

नाई—नाहीं सरकार। पहिले हम एक अलङ्ग बनाए लेई तब बाहर साबुना लगावा जाए, नाहीं तो चेहरा सब लसर-फसर होए जाई तो हम आपन चुटकी के टेक कहाँ लगाइब (दाढ़ी बनाता हुआ) हाँ सरकार, तनी आप मुँह खोली तेहमा गलुक्का के भीतर हवा जाए के बार के जड़ मुलायम कै दे। अब बन्द कै देई। फिर खोली। खूब फैलाई। अब बन्द करी। मूड़ी अस करी ? (कान पकड़ कर) अस नाहीं अस। अब एहर। अच्छा सरकार अब आप आपन नाक हाथ से पकड़ लेई। जोखिम जगह पर छूरा चलत है। हाँ कहूँ दाढ़ी के साथ नाको न साफ़ होए जाए। मुँह खोले रही। जेहमा ठुढी लटक के नकुवा से दूरे रहे। हजामत बनाइब खेल नाहीं है। बस एक अलङ्ग होय गवा अब सीसा में आपन मुँह तो देख लेई।

(एक तरफ़ की दाढ़ी मय उस तरफ़ की मूँछ के साफ़ कर देता है।)

तीसमार ख़ाँ—(शीशा देख कर) हाय ! हाय ! तूने इधर की मूँछें क्यों बना दीं ? हाय ग़ज़ब ! यह क्या किया ?

नाई—का मूछो बन गवा ? यही लिए कहा रहा सरकार कि साबुन न लगवाई। का कही एहर के दाढ़ी मूँछ दूनो एक्के में लीप-पोत रहे। हमार छूरा न चीन्ह पाइस होई कि कौन मूँछ है अउर कौन दाढ़ी।

तीसमार ख़ाँ—तेरे उस्तुरे की ऐसी-तैसी करूँ सूअर के बच्चे। साले ने सूरत बिगाड़ दी।

नाई—हमार कौन दोस सरकार ? हम तो पहिलवें बताय दीन रहा कि अस दाढ़ी जहाँ बनाइ जात है वैसे बनरे अस मुँह निकर आवत है !

तीसमार खाँ—(उसी धुन में) हाय ! हाय ! अब इधर की भी मूँछ बनवानी पड़ी।

नाई—काहे कौनो जबरदस्ती थोड़े है। एहर वाली मुछिया रहे देई।

तीसमार ख़ाँ—ऊपर से बातें बनाता है ? अच्छा ज़रा हजामत बन जाए तो बताता हूँ। ला इधर ला कूची।

नाई—(कूची देते हुए कूची तीसमार ख़ाँ की गोद में गिरा देता है।) च ! च ! च ! आपके कपड़ा खराब होय गवा, नाहीं नाहीं बच गवा। (तीसमार ख़ाँ की पोशाक का कपड़ा ग़ौर से देखता और टटोलता हुआ) भला यह बिदेसी तो न होय ?

तीसमार ख़ाँ—तब क्या हम सुदेसी पहनेंगे गदहे ? जानता नहीं हम दरोग़ा तीसमार ख़ाँ हैं।

नाई—तो फुरे यू सुदेसी न होय ?

तीसमार ख़ाँ—नहीं बे। अब ख़बरदार जो सुदेशी का नाम लेगा तो मारे जूतों के खोपड़ी फ़र्राश कर दूँगा,

नाई—(चिल्ला कर रोता हुआ) हाय ! दादा करम फाट गवा। हम बिलाय गएन।

तीसमार ख़ाँ—अबे क्या हुआ क्या ?

नाई—(जल्दी-जल्दी अपना सामान समेटता हुआ) का बताई। धोखा होय गवा। हम जानित रहन कि आप सुदेसी पहने हन। सरकार हाथ जोड़ित है, गोड़े गिरित है, आप कोई से न बताइब कि हम आपके दाढ़ी बनायन हैं, नाही तो हमें रोटी पड़ जाई।

(अपना सामान लेकर जल्दी-जल्दी जाता है)

तीसरा—अबे-अबे आधी ही दाढ़ी बना कर चल दिया ? अबे ओ नाई के बच्चे, आधी वह भी बनाता जा कम्बख़्त।

नाई—(जाते-जाते कोने के पास से) नाहीं सरकार। अनजाने जौन खता होय गई, तौन होय गई। अब हाथ जोड़ित है, हमार कीन न होई।

(भाग जाता है)

तीसमार—हाय ! हाय। हरामज़ादा चला गया। अब क्या करूँ। कैसे उसके पीछे दौड़ूँ या किसी को अपने सामने बुलाऊँ ? हाय कम्बख़्त ने मुँह दिखाने लायक़ भी तो मुझे नहीं रक्खा। किस तरह सूरत छिपाऊँ ? एक तरफ की मूँछ भी तो नदारद है। कहीं कोई आ पड़ा तो क्या करूँगा। मकान के भीतर भी तो जाते नहीं बनता ! उफ़ ! उस नामाक़ूल ने बड़ा ही पाजीपन किया है। मिल जाता तो उसे कच्चा चबा जाता। (अपने बदन के कपड़ों से अपनी दाढ़ी और मूँछें छिपाने की कोशिश करता है।) नहीं ठीक बनता। हाय ! अब क्या करूँ ? वह लो, मुनुवा भी आ रहा (अपने मुँह को एक तरफ़ रूमाल से छिपा कर मुँह फेर कर खड़ा होता है।)

मुनुवा—ऊँ-ऊँ-ऊँ। अम्माँ ! हाय ! अम्माँ ! कहाँ गई ?

तीसमार—(मुँह फेरे हुए) क्यों बे मुनुवा, क्या हुआ ?

मुनुवा—अम्माँ की हलामिन बन के सब औलतों के साथ झण्डा उठाने गई थीं—

तीसमार—आयँ ? यह क्या ?

मुनुवा—सचमुच अब्बा। वह बी गई थीं। बजाल में बहुत बहुत औलतें थीं। अम्माँ भी थीं। बछ छिपाई लोग उनके पीछे दौले। फिल नहीं मालूम अम्माँ किधल गायब होगईं। हाय ! अम्माँ ! ऊँ-ऊँ-ऊँ !

तीसमार—(मुँह फेरे हुए) हाय ! ग़ज़ब ! यह क्या हुआ। अरे ! मुनुवा ! तू थाने पर जा और जल्दी से बटेर ख़ाँ को ढूँढ़ कर बुला ला। (मुनुवा जाता है)।

मुनुवा को तो मैंने किसी तरह अपने सामने से हटाया। जानता हूँ कि बटेर ख़ाँ वहाँ नहीं है। मगर अब करूँ क्या ? या मेरे अल्लाह ! मेरे सर पर यह कैसी आफ़त फट पड़ी ? उफ़ ! मैंने भी बटेर ख़ाँ को औरतों के साथ कैसा सलूक़ करने का हुक्म दे दिया है। क्या जानता था कि यह मुसीबत मेरे ही सर पड़ेगी। ख़ुद मेरी ही बीवी इसका शिकार होगी। सोचते ही अब रोंगटे खड़े होते हैं और कलेजा फटा पड़ता है। हाय ! बीवी और आबरू दोनों गईं। मैं कहीं का भी न रहा। उस कम्बख़्त औरत का यकायक यह क्या सूझी ? मगर ख़ैर ! अब उसे इस तबाही से किस तरह बचाऊँ ? वह हमेशा पर्दे में रही। कोई उसे पहचानता भी तो नहीं है। और मैं यह शक्ल लेकर कैसे जाऊँ ? हात तेरे नाई की !......

अच्छा एक तरकीब सूझी। अपनी बीबी का बुर्क़ा पहन लूँ। बस-बस यही ठीक है। (मकान के भीतर जाता है। बुर्क़ा लेकर निकलता है और उसे पहन कर एक तरफ़ तेज़ी से जाता है।)

(क्रमशः)

* * *

जात-पाँत तोड़ डालो

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

अकेले ब्राह्मणत्व का नाश करके ही हिन्दुओं का उद्धार नहीं हो सकता। उन्हें जात-पाँत के कोढ़ को भी जड़-मूल से दूर करना होगा। ब्राह्मणत्व ही इस जात-पाँत के बखेड़े की जड़ है यह तो स्पष्ट है, परन्तु जात-पाँत ने स्वयं भी एक ऐसा कुसंस्कार हिन्दू जाति में उत्पन्न कर दिया है, कि जो उसे पनपने ही नहीं देता। कोई भी जाति चाहे भी जितनी नीच या निम्न श्रेणी की हो—पर जब कभी उसकी जातीय पञ्चायत होती है, तब उसकी अकड़-एंठ और खींच-तान की बहार देखने ही योग्य होती है। जाति के चौधरी और पञ्च अपने को धन्नासेठ का ससुर समझ कर इस तरह अकड़-अकड़ कर बातें करते हैं कि उनकी बलिहारी पर वाह! कहने को जी चाहता है। जाति के लोग शराब पीकर मतवाले हो जाते हैं या मांसाहारी, व्यभिचारी और कुमार्गी हो रहे हैं, यह इन पञ्चों का विचारणीय विषय नहीं। इन पञ्चों का विचारणीय विषय तो यही है अमुक ने अमुक विभिन्न नीच-ऊँच जाति की स्त्री या पुरुष से सम्बन्ध स्थापित कर लिया। अमुक ने अमुक का हुक्का पी लिया, इत्यादि!

ये चौधरी और पञ्च प्रायः मूर्ख और लालची एवं स्वार्थी होते हैं। और प्रायः दलबन्दी के कीचड़ में लतपत होते हैं। ऐसी दशा में इनके फ़ैसले में न्याय की गुञ्जाइश होना सम्भव ही नहीं। ये लोग बिरादरी के लोगों को अपनी पालतू भेड़ समझते हैं और उन्हें अपनी पञ्चायत के बाड़े में बन्द करके मनमाने ढङ्ग से उन्हें दाना-पानी दिया चाहते हैं। कभी-कभी तो इनके अत्याचारों से ग़रीब व्यक्ति का सर्वनाश ही हो जाता है। पर बहुधा यही देखने को मिलता है कि इन मूर्ख चौधरियों का इन बेचारे जाति के मनुष्यों पर वैसा ही असाध्य एकाधिपत्य रहता है, जैसा कि ब्राह्मणत्व का हिन्दुत्व पर है।

जाति की दीवारें बनीं कैसे? इसका इतिहास बड़ा मनोरञ्जक है और जहाँ तक मैं समझता हूँ—वह बहुत ही गुप्त भी है। आमतौर से लोग उसके अस्तित्व को नहीं जानते। इसलिए यहाँ संक्षेप में इसकी चर्चा चलाना अनुचित न होगा।

परन्तु जातियों के निर्माण और उनकी व्यवस्था का वर्णन करने से पूर्व मुझे वर्णों के सम्बन्ध में अपनी विवेचना पाठकों के सम्मुख रखनी है—क्योंकि जैसा कि पाठक देख चुके हैं कि मैं ब्राह्मणत्व के विनाश का पक्षपाती हूँ* उससे आप समझ गए होंगे कि मैं वर्ण-विभाग का भी उसी भाँति नाश कर देना चाहता हूँ, जिस भाँति ब्राह्मणत्व का और जातित्व का। और चूँकि वर्णों ने ही जातियों के भेद किए हैं, इसलिए वर्णों पर मैं प्रथम प्रकाश डाल कर तब जातियों के इतिहास की ओर झुकूँगा। प्राचीन वर्ण वेद के आधार पर हैं यह प्रायः कहा जाता है, परन्तु ऋग्वेद भर में चारों वर्णों की गन्ध भी नहीं पाई जाती। ऋग्वेद के अध्ययन से हम इस निश्चित परिणाम पर पहुँचते हैं—

१—'वर्ण' शब्द जिसका आधुनिक अर्थ जाति है। ऋग्वेद में केवल 'आर्यों और अनार्यों' में भेद प्रगट करने को आया है। आर्यों में भिन्न-भिन्न जातियाँ या वर्ण थे, ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं मिलता।

—मं० ३। सू० ३४। ऋ० ९ आदि

२—'विप्र' शब्द जिसका अर्थ आजकल ब्राह्मण किया जाता है 'मन्त्रद्रष्टा' के अर्थ में आया है। अथवा 'बुद्धिमान' के अर्थ का द्योतक है और वह देवताओं के विशेषण के तौर पर काम में लाया गया है।

३—'ब्राह्मण' शब्द जो आजकल एक जाति-विशेष या वर्ण-विशेष का द्योतक है, मन्त्र या पुरोहित के अर्थ में आया है।

—मं० ७। सू० १०३। ऋ० ८ आदि

४—'क्षत्री' शब्द कहीं नहीं आया है, 'क्षत्र' शब्द आया है और उसका अर्थ 'बलवान' है और वह देवताओं के विशेषण के तौर पर काम में लाया गया है।

—मं० ७। सू० ६४। ऋ० २ आदि

५—'वैश्य' शब्द कहीं भी नहीं है। 'विश' शब्द आया है और वह प्रजा के अर्थ में आया है, किसी वर्ण विशेष के अर्थ में नहीं।

६—'शूद्र' शब्द कहीं भी नहीं है। 'दस्यु' है, मगर वह अनार्यों के लिए है। आर्य और दस्यु इन शब्दों के आगे 'वर्ण' शब्द पाया जाता है।

७—केवल पुरुष सूक्त में प्रसिद्ध "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्" मन्त्र है। यह पुरुष सूक्त ऋग्वेद का बहुत पिछला भाग है।

८—ऋषियों की कोई पृथक जाति या वर्ण न था। 'ऋषि' शब्द साधारणतया काम में लाया जाता था। और न ऋषिगण संसार से विरक्त होकर तप, ध्यान, ज्ञान आदि में समय व्यतीत करते थे, बल्कि वे संसार के साधारण मनुष्य जैसे ही होते थे। वे गृहस्थी रखते थे। खेती करते थे। युद्ध करते थे। अपने खेतों, पशुओं, शत्रुओं के नाश, शस्त्रों आदि के लिए प्रार्थनाएँ करते थे। प्रत्येक कुटुम्ब का एक मुखिया होता था और वही अपने घर में समस्त धर्म-कृत्य और संस्कार आदि करता था।

९—कुछ लोग बड़े-बड़े यज्ञ कराते थे। राजा आदि इन्हें बदले में धन देते थे, परन्तु इनकी भी कोई पृथक जाति, या वर्ण न था! इनके रोटी-बेटी के सम्बन्ध सर्वसाधारण से थे। और उनके साथ युद्धादि में भी शरीक होते थे! उदाहरण सुनिए—

(क)—एक योद्धा ऋषि ऐसे पुत्र की कामना करता है कि वह युद्ध में शत्रुओं पर विजयी हो।

—मं० ५। सू० २३। ऋ० २

(ख)—एक ऋषि धन, खेत और वीर पुत्र की कामना करता है।

—मं० ६। सू० २७। ऋ० १

(ग)—एक ऋषि धन, घोड़ा, रथ, गौ, अन्न और सन्तान की कामना करता है। दूसरा अपने पशुओं पर ही सन्तुष्ट है।

—मं० ६। सू० २८। ऋ० ५

एक ही घर में कई वर्ण रहते थे, इसका उदाहरण देखिए—

"मैं सूक्त रचना करता हूँ, मेरा पिता वैद्य है, मेरी माता पत्थर का काम करती है। हम सब पृथक-पृथक कामों में लगे हुए हैं। जैसे गौएँ चारागाह में आहार के लिए घूमती हैं, वैसे ही हे सोम! हम भिन्न-भिन्न रीति से धन-सञ्चय करते हैं?

—मं० ९। सू० ११२। ऋ० ३

विश्वामित्र प्राचीन वैदिक ऋषि हैं। और वे उस प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र के द्रष्टा हैं, जिसे ब्राह्मण अत्यन्त पवित्र और गोपनीय गुरुमन्त्र समझते हैं। ये एक योद्धा ऋषि थे। पीछे पुरोहित का कार्य करने लगे थे। पर पौराणिक उपाख्यान में इनके प्रथम क्षत्रिय और पीछे ब्राह्मण होने की मनोहर कथा गढ़ दी गई है, हालाँकि वे न ब्राह्मण थे, न क्षत्रिय—प्रत्युत उस काल के ऋषि थे, जब कि ब्राह्मण और क्षत्रिय उत्पन्न ही नहीं हुए थे!

इन तमाम घटनाओं पर विचार करके यूरोप के तीन प्रकाण्ड वेद-विद्यार्थी इस विषय पर अपना नीचे लिखा मत प्रकट करते हैं:—

"तब यदि हम लोग इन सब प्रमाणों पर ध्यान देकर यह प्रश्न करें कि जाति, जैसा कि मनु के ग्रन्थों में अथवा आजकल है, वेद के प्राचीन धर्म का अङ्ग है या नहीं—तो हमको इसके उत्तर में निश्चय करके 'नहीं' कहना पड़ेगा।"*

"अब तक जातियाँ नहीं थीं। लोग अब तक एक में मिल कर रहते थे। और एक ही नाम से (अर्थात विसस्) पुकारे जाते थे।"†

डॉ० रॉथ, जो प्रख्यात वेद-व्याख्याता—यूरोप भर में प्रसिद्ध हैं, बताते हैं कि उस काल में राजाओं के घराने के पुजारी ब्राह्मण कहाने लगे थे, पर उनकी कोई जाति नहीं बन गई थी। आगे चल कर इस विद्वान ने बताया है कि महाभारत के काल में पहुँच कर यह पुजारियों का दल कितना प्रबल हो गया था। और उनकी एक पृथक जाति बन गई थी।‡

आर्य-जाति के मूल उत्पादक हम आठ ऋषियों का नाम यहाँ उल्लेख करना आवश्यक समझते हैं, जो कि हिन्दू-जाति मात्र के उत्पादक, आदि-पुरुष और गोत्र-उत्पादक हैं:—

१—वशिष्ठ
२—कुशिक (विश्वामित्र)
३—अङ्गिरा
४—वामदेव
५—भारद्वाज
६—भृगु
७—कण्व
८—अत्रि

इनका परिचय इस प्रकार है:—

विश्वामित्र—तीसरे मण्डल के ऋषि
वशिष्ठ—सातवें मण्डल के ऋषि
अङ्गिरा—नवम मण्डल के ऋषि

इनके विषय में विष्णु-पुराण (अं० ४। अ० २। श्लो० २) में लिखा है कि नभाग का पुत्र नाभाग। उसका अम्बरीष, उसका विरूप, उसका पृषदश्व हुआ और उसका रथीनर। ये लोग जो क्षत्रिय वंश के उत्पादक और अङ्गिरस गोत्र के थे व रथीनरों के सरदार थे।

वामदेव और भारद्वाज ऋग्वेद के चौथे और छठे मण्डल के ऋषि हैं। मत्स्य-पुराण (अध्याय १३२) में इन्हें अङ्गिरा ही का वंशज बताया गया है।

---

* 'भविष्य' के गताङ्क में लेखक महोदय का "ब्राह्मणत्व का नाश" शीर्षक एक विचारपूर्ण लेख प्रकाशित हो चुका है।

—सम्पादक 'भविष्य'

*Maxmullar's, *'Chips' from a German workshop' Vol. ii (1867) p. 307.*

†Weber's *'Indian Literature'* (translation) p. 38.

‡As Quoted in *Muir's Sanskrit Texts Vol I (1872) p. 291.*

उत्तमोत्तम पुस्तकों का भारी स्टॉक

- माधुरी ... ... ।)
- विचित्र ख़ून ... ।)
- विधाता की लीला ... ।)
- विद्याधरी ... =)
- मीराबाई ... ≡)
- विक्रमादित्य ... -)
- सभाविलास ... ।)
- बालोपदेश ... ।)
- कुसुमकुमारी ... १॥)
- सुनहला विष ... ।=)
- सत्य हरिश्चन्द्र ... ।=)
- सूर रामायण ... ।=)
- बदरुन्निसा की मुसीबत ... ≡)
- भाषा सत्यनारायण कथा =)
- भारत की देवियाँ ... ।-)
- मायाविनी ... =)
- बसन्त का सौभाग्य ... ।)
- वसुमती ... ≡)
- रसराज ... ।)
- कुलटा (उपन्यास) ... ≡)
- सरोजिनी (नाटक) ... ॥)
- अन्योक्ति कल्पद्रुम ... ।=)
- श्रृङ्गार दर्पण ... ॥)
- जय नारसिंह की ... =)
- कविराज लर्छीराम ... -)॥
- पुर असर जादू ... ॥)
- ललना-बुद्धि-प्रकाशिनी ... -)॥
- अनेकार्थ और नाममाला ।)
- अकबर ... ॥)
- राजस्थान का इतिहास ... (१-५ भाग) ... २॥)
- चन्द्रकान्ता ... १॥)
- सुरसुन्दरी ... १॥)
- प्रेम का मूल्य ... ॥।)
- कुसुमलता (दो खण्ड) ३॥)
- अभागिनी ... ॥)
- अमृत पुलिन ... ॥)
- क़िले की रानी ... ॥।)
- खोई हुई दुलहिन ... ।)
- हृदय-कण्टक ... ।-)
- सुलोचना ... ... =)
- वीरेन्द्रवीर या कटोरा भर ख़ून (दो भाग) १।)
- अत्याचार (उपन्यास) ।)
- सिद्धेश्वरी ... ।)
- चित्रकार ... ।)
- लैला-मजनू ... ।)
- विचित्र चोर ... ।)
- बङ्गाली बाबू ... ।)
- विष-विवाह ... ।)
- समझ का फेर ... ।)
- पकौड़ीमल ... ।)
- आत्मत्याग ... ।)
- श्यामा ... ।)
- ख़ूनी की आत्म-कथा ... ।)
- ग़रीब की लड़की ... ।)
- मित्र ... ... ।)

- माधुरी ... ... ।)
- रामरखा का ख़ून ... ।)
- रूप का बाज़ार ... ।)
- गर्म राख ... ।)
- कठपुतली ... ।)
- योगिनी-विद्या ... ।)
- संसार-विजयी ... ॥)
- ललिता ... ॥)
- हवाई डाकू ... १॥)
- अद्भुत भूत ... ।)
- छाती का छुरा ... -)
- अज्ञातवास (नाटक) ... १)
- अधःपतन ... ॥)
- वनकन्या ... ।=)
- दलित कुसुम ... ॥)
- सूर-रामायण ... ।=)
- विनय रसामृत ... -)
- किरण-शशि ... ।-)
- प्रेम का फल ... ।=)
- कुली-कहानी ... ।-)
- नागानन्द (नाटक) ... ।)
- कपटी मुनि (नाटक) ... ।)
- मदालसा ... ।-)
- बिना सवार का घोड़ा ... ।≡)
- मरता क्या न करता ... =)
- सौतेली माँ ... =)
- अब्दुल्ला का ख़ून ... =)
- अवध की बेगम (दो भाग) ॥=)
- साहसी डाकू ... १।)
- परिणाम ... १)
- ज़बर्दस्त की लाठी ... ॥)
- इन्द्र-सभा ... =)
- ईश्वरी लीला ... =)
- मजमुआ नज़ीर ... ।)
- कुण्डलिया गिरधरदास ... ॥-)
- क्या इसीको सभ्यता कहते हैं? ... =)
- चन्द्रकुमार ... =)
- हवाई नाव ... ।)
- पद्मिनी ... =)
- व्यङ्गार्थ कौमुदी ... १)
- स्वर्णबाई ... ।-)
- क़िस्मत का खेल ... ॥)
- लावण्यमयी ... =)
- नाट्य सम्भव (रूपक) ।=)
- जीवन-सन्ध्या ... १॥।)
- बजरङ्ग-बत्तीसी ... -)
- कोकिला ... ।)
- बालचर जीवन ... १)
- लक्ष्मण-शतक ... ≡)
- श्रृङ्गारदान ... ≡)
- पद्मावती (नाटक) ... ।=)
- दादाभाई नौरोजी ... -)॥
- सूरदास (जीवन-चरित) =)
- कलियुग-पचीसी ... =)
- दिल दिवाली ... -)॥
- अनुताप ... ।)

- चित्र ... ... ≡)
- गङ्गावतरण ... ॥)
- भक्त सूरदास ... ॥=)
- देश-दशा ... ॥।)
- दो ख़ून ... =)
- निर्धन की कन्या ... ॥)
- हँसाने की कल ... =)
- दुश्मने-ईमान ... ॥=)
- वीर कर्ण ... १॥)
- काला चाँद ... ।=)
- द्रौपदी-स्वयम्बर (नाटक) ।=)
- आतशी नाग ... ॥)
- धर्मोजय ... ॥।)
- कलियुग का बुख़ार ... =)
- सत्य हरिश्चन्द्र ... ॥=)
- सौभाग्य-सुन्दरी ... ॥।)
- शैदे-हवस ... ।≡)
- गौतम-अहिल्या ... ॥-)
- ख़ूने-नाहक ... ।≡)
- धर्मयोगी ... ॥।)
- नौलखा हार ... =)
- भूतों की लड़ाई ... -)॥
- विश्वामित्र ... ॥।)
- उषा-अनिरुद्ध ... ॥)
- सम्राट अशोक ... ॥।-)
- मेरी आशा ... १)
- ख़ून का ख़ून ... ।≡)
- एक प्याला ... १)
- सती सुलोचना ... ॥।)
- काली नागिन ... ॥=)
- शरीफ़ बदमाश ... ॥=)
- ख़ूबसूरत बला ... ॥)
- ख़्वाबहस्ती ... ।≡)
- सती सुनीति ... ॥।)
- आँखों का गुनाह ... ॥।)
- वीरबाला वा जयश्री ... ॥)
- चन्द्रशेखर ... १।-)
- सोने की कण्ठी ... १)
- तेग़ेसितम वा नर-पिशाच ॥।)
- रामप्यारी ... १।)
- राजदुलारी ... १)
- वीर वाराङ्गना ... ॥)
- रमणी-रहस्य ... ॥)
- दर्प-दलन ... ॥।=)
- भूखा मसख़रा ... -)
- दिल्लगी का ख़ज़ाना ... =)
- शिवाजी की चतुराई ... =)
- रानी दुर्गावती ... =)
- कालग्रास ... ।)
- क़हक़हे दीवार ... ≡)
- राजरानी ... ≡)॥
- श्रृङ्गार तिलक ... =)
- रणबाँकुरा चौहान ... १।)
- मेवाड़ के महावीर ... १॥।)
- नैतिक जीवन ... १)
- जेहाद ... ॥)
- मातृ-भाषा ... ॥)

- तक़दीर का फ़ैसला ... ॥)
- ऊषा-अनिरुद्ध ... ॥।)
- परिवर्तन ... १)
- मशरक़ी हूर ... १)
- रुक्मिणी मङ्गल ... ॥।)
- परम भक्त प्रह्लाद ... १)
- भारतमाता ... ।)
- छत्रपति शिवाजी ... १।)
- मीठी गुञ्जार ... =)
- पद्य पुष्पाञ्जलि ... -)
- मोहन गीतावली ... ≡)
- बसन्त-बाटिका ... =)
- राधेश्याम-कीर्तन ... ॥)
- कुसुमकुञ्ज ... =)
- रसीली तान ... =)
- मुसाफ़िर की पॉकेट बुक ... ॥)
- गृहिणी गीताञ्जलि ... ।)
- वियोग-कथा ... ।)
- शतलड़ी ... ॥।)
- अजायबघर ... ॥)
- बिजली ... १॥)
- विनयपत्रिका ... २)
- प्रेतलोक ... १)
- भक्त स्त्रियाँ ... ॥)
- योग-वाशिष्ठ-सार ... ।)
- भीष्म-प्रतिज्ञा ... ।)
- भीष्म-पराक्रम ... ।)
- पाण्डव-जन्म ... ।)
- महिषासुर बध ... ।)
- शुम्भ का उत्पात ... ।)
- चामुण्डा का पराक्रम ... ।)
- अर्जुन-मोह ... ≡)
- आत्मा की अमरता ... ≡)
- कर्मयोग ... ≡)
- विराट रूप दर्शन ... ≡)
- जीव-ब्रह्म विवेक ... ≡)
- अर्जुन का समाधान ... ≡)
- द्रौपदी-लीला ... ≡)
- ध्रुव-चरित्र ... ।)
- प्रह्लाद-चरित्र ... ।)
- सुदामा-चरित्र ... ।)
- सत्यनारायण की कथा ... ।)
- बोध-प्रकाशी ... ।)
- सीता-बनवास ... ।)
- रामाश्वमेध ... ।)
- लवकुश की वीरता ... ।)
- सतवन्ती सीता की विजय ।)
- अहिरावण-बध ... ≡)
- राधेश्याम विलास ... ॥।)
- काव्योपवन ... ॥।)
- उपासना-प्रकाश ... ॥)
- जाति-भेद ... ॥।)
- रजनी ... ... ॥)
- पुण्यकीर्तन ... १)
- आल्हा-रहस्य ... ॥=)
- मन की लहर ... ≡)॥
- निर्मला ... =)॥

- इतिहास-समुच्चय ... २)
- दशावतार कथा ... ॥)
- मृणमयी ... ॥।)
- चरित्र-सुधार ... ॥।=)
- उषाङ्गिनी ... १)
- कृष्णकान्त का दान-पत्र ... ॥।)
- भारतीय स्त्रियों की योग्यता (दो भाग) १।)
- रघुवीर रसरङ्ग ... ॥=)
- श्रीरघुवीर गुण-दर्पण ... ॥=)
- देवी चौधरानी ... ॥)
- दुर्गेशनन्दिनी ... ॥।=)
- सुख शर्वरी ... ।-)
- केला ... -)
- विज्ञान-प्रवेशिका (दो भाग) १।)
- सुवर्णकारी ... ।)
- लाख की खेती ... ।)
- कपास की खेती ... ॥)
- देशी खेल ... ॥)
- गृहिणी-गौरव १॥), २)
- पुनरुत्थान ... ॥।=)
- राजपथ का पथिक ... ।-)
- दरिद्रता से बचने का उपाय =)
- विधवा-प्रार्थना ... ।-)
- स्वदेशी धर्म ... ।)
- रोहिणी ... ।≡)
- मोहिनी ... ॥=)
- संसार सुख साधन ... ।≡)
- अनन्तमती ... ॥।=)
- गङ्गावतरण ... ॥)
- अमरकोष ... ।)
- गोरक्षा का सरल उपाय ...)॥
- गोपीचन्द भरथरी ... ।=)
- कुण्डलिया गिरधर राय ... -)॥
- कायाकल्प ... ३॥)
- प्रेम-प्रतिमा ... २)
- वैताल-पचीसी ... ।)
- मनुस्मृति (भाषा टीका) ३॥)
- प्रेम-सागर ... २)
- लोकवृत्ति ... १।)
- बदरीनाथ-स्तोत्र ... -)
- चन्द्रावली (नाटक) ... ।)
- भारतवर्ष का इतिहास ... २॥)
- कल्याण-मार्ग का पथिक १॥)
- प्राचीन भारत ३॥।-)
- जापान की राजनीतिक प्रगति ... ... २॥।=)
- संसार के व्यवसाय का इतिहास ... ॥=)
- अङ्गरेज़ जाति का इतिहास २॥)
- इटली के विधायक महात्मा-गण ... २)
- रोम साम्राज्य ... २॥)
- एब्राहम लिङ्कन ... ॥)
- गृह-शिल्प ... ॥)
- अवध के किसानों की बरबादी ।)
- कुसुम-संग्रह ... १॥)

(२)

शैलबाला ... १)
विसर्जन ... ॥)
राजारानी ... ॥।)
नल-दमयन्ती ... ॥।)
सत्य-हरिश्चन्द्र ... ।≡)
अनुराग-वाटिका ... ।-)
बनारस ... १॥)
स्वयं स्वास्थ्य-रक्षक ... ॥।=)
अजेय तारा ... १॥)
विश्राम बाग़ ... १॥)
पृथ्वीराज चौहान ... ॥।)
छत्रपति शिवाजी ... ॥।)
सहधर्मिणी ... ॥।)
रूपनगर की राजकुमारी... ३)
विचित्र डाकू ... १॥)
पाप की छाप ... २)
शैतान पार्टी ... ॥।)
रमणी-नवरत्न ... १)
विचित्र घटना ... ।)
सावित्री-सत्यवान ... ॥।)
अत्याचार का अंश ... ।)
सदाचार-दर्पण १॥),२), २॥)
भारत का इतिहास ...
(सजिल्द) ३)
मज़ेदार कहानियाँ ... १)
सूक्ति-सरोवर ... २॥)
कौतूहल भण्डार ... १॥)
अन्त्याक्षरी ... ॥)
पहेली बुझौवल ... ॥)
सच्ची कहानियाँ ... ॥)
इक्कीस खेल ... ।≡)
नवीन पत्र-प्रकाश ... ॥=)
वक्तृत्वकला ... १॥)
स्वदेश की बलिवेदिका ... ॥=)
शाहज़ादा और फ़क़ीर ... ॥।)
बाल नाटकमाला ... ।=)
गज्जू और गप्पू की मज़ेदार
कहानियाँ ... ≡)
इल-बिल की कहानियाँ ... ≡)
विद्यार्थियों का स्वास्थ्य ... ।=)
अदलू और बदलू की कहानियाँ
... ≡)
टीपू और सुल्तान ... ।)
नटखटी रीछू ... ≡)
भिन्न-भिन्न देशों के अनोखे
रीति-रिवाज ... ॥=)
परीक्षा कैसे पास करना ? =)
पत्रावली ... ।-)
पञ्चवटी ... ।=)
रङ्ग में भङ्ग ... ।)
आत्मोपदेश ... ।)
स्वाधीनता के सिद्धान्त ... ॥)
सन्त-जीवनी ... ॥)
अमृत की घूँट ... २॥)
विचित्र परिवर्तन ... २)
पौराणिक गाथा ... ।-)
गुब्बारा ... ॥=)
दस कथाएँ ... ।=)॥
अनूठी कहानियाँ ... ।=)
मनोहर कहानियाँ ... ।=)
हँसी-खेल ... ॥।)

डल्लू और मल्लू ... ≡)
विज्ञान-वाटिका ... ।=)
परियों का देश ... १)
खोपड़ेसिंह ... ।)
बालक ध्रुव ... ।)
बच्चू का ब्याह ... ।-)
नानी की कहानी ... ।=)
मज़ेदार कहानियाँ ... ।-)
बाल कवितावली ... १)
रसभरी कहानियाँ ... ॥)
बहता हुआ फूल २॥), ३)
मि० व्यास की कथा २॥), ३)
प्रेम-प्रसून १=), १॥=)
विजया १॥), २)
भिखारी से भगवान ... १)
मूर्खमण्डली ॥=), १=)
जीवन का सद्व्यय १), १॥)
साहित्य-सुमन ॥), १)
विवाह-विज्ञापन ... १॥)
चित्रशाला (दो भाग) ३),४)
देव और बिहारी १॥।), २॥)
मञ्जरी १), १॥।)
कर्बला १॥), २)
रावबहादुर ... ॥।)
प्राणायाम ॥।=), १।=)
पूर्व-भारत ॥।=), १।=)
बुद्ध-चरित्र ॥।), १॥)
भारत-गीत ... ॥।=)
वरमाला ॥।), १॥)
एशिया में प्रभात ॥), १)
कर्मयोग ॥), ॥।)
संक्षिप्त शरीर-विज्ञान ... ॥=)
लबड़धोंधों ॥।=), १।=)
हठयोग ... १।=)
कृष्णकुमारी १), १॥)
प्राचीन पण्डित और ...
कवि ॥।=), १।=)
जयद्रथवध ॥।), १।=)
तात्कालिक चिकित्सा १), १॥।)
किशोरावस्था ... ॥=)
अद्भुत आलाप ... १)
मनोविज्ञान ॥।), १॥)
अश्रुपात ... १)
ईश्वरीय न्याय ... ॥)
सुख तथा सफलता ... ।)
किसान की कामधेनु ... ।=)
प्रायश्चित्त (प्रहसन) ... ≡)
संसार-रहस्य ... १॥)
नीति रत्नमाला ... ।)
मध्यम व्यायोग ... =)
सम्राट चन्द्रगुप्त ... ।)
वीर भारत ... ॥।)
केशवचन्द्र सेन १≡),१॥=)
वङ्किमचन्द्र चटर्जी १≡),१॥=)
देशहितैषी श्रीकृष्ण ... =)
द्विजेन्द्रलाल राय ... ।)
भारत की विदुषी नारियाँ ॥)
वनिता-विलास ... ॥।)
पत्राञ्जलि ... ॥)
लक्ष्मी ... ॥=)
ज़च्चा ... ॥।=)

भगिनी-भूषण ... =)
सुघड़ चमेली ... =)
खिलवाड़ ... ।)
देवी द्रौपदी ... ॥)
महिलामोद ... ॥)
गुप्त सन्देश ... ॥)
कमला-कुसुम ... १)
मिश्रबन्धु-विनोद (तीन
भाग) ... ७।)
शिवराज विजय ... २॥।)
सत्य हरिश्चन्द्र (नाटक) ।=)
माधव निदान ... १॥)
अनङ्ग-रङ्ग ... २)
कुटुम्ब-चिकित्सा ... १॥)
रामायण का अध्ययन ... ॥।)
रचना नवनीति ... १)
प्रवेशिका व्याकरण बोध... १॥)
अयोध्याकाण्ड रामायण... ॥)
बाल महाभारत ... ।=)
अलङ्कार चन्द्रिका ... ॥)
बालबोध रामायण ... ॥)
अपर प्रकृति पाठ ... ।=)॥
मिडिल प्रकृति परिचय ...।-)॥
शिशुवर्ण परिचय ... -)
वर्णमाला और पहाड़े ... -)
शासन और सहयोग ... =)॥
शिशुकथा माला ... =)
कन्या-साहित्य ... =)॥
पत्र-चन्द्रिका ... ।)
बालक ... १)
स्वराज्य-संग्राम ... ॥।=)
आर्यसमाज और कॉङ्ग्रेस ।-)
हिन्दू-सङ्गठन ... १)
शिक्षा-प्रणाली ... १)
भारत-रमणी-रत्न ... ॥।=)
सन्ध्या पर व्याख्यान ... ।)
शिशु-सुधार ... ॥)
पुत्री-शिक्षक ... ॥)
स्त्री-शिक्षा ... ।=)
मनोहर पुष्पाञ्जलि ... ॥)
गृहिणी-शिक्षा ... ॥)
गुलदस्ता ... ॥।)
अक्षरबोध ... ॥।)
उर्वशी ... १)
ब्रह्मचर्य-शिक्षा ... ॥=)
तपस्वी भरत ... ।-)
दिलचस्प कहानियाँ ... ।=)
सूखा हुआ फूल ... ≡)
हितोपदेश ... ॥)
पृथ्वीराज रासो ... ॥)
नवीन बीन ... २)
बिहार का साहित्य ... १॥)
जयमाल ... ।=)
प्रेम ... ... ।=)
मधु-सञ्चय ... ।=)
अशान्त ... ॥)
लङ्गटसिंह ... ।)
विद्यापति ... ।)
अहिल्याबाई ... ।)
सौरभ ... १)
नवपल्लव ... १॥)

देहाती दुनिया ... १॥)
प्रेम-पथ ... २)
पुरुष-परीक्षा ... १)
सुधा-सरोवर ... १)
त्यागी भरत ... ।)
गुरु गोविन्दसिंह ... ।)
एकतारा ... १)
अशोक ... १॥)
निर्माल्य ... १)
बाल-विलास ... ।)
विपञ्ची ... ।)
दुलहिन ... ।)
शेरशाह ... ।)
शिवाजी ... ।)
माइकेल मधुसूदन ... ।)
भगवान बुद्ध ... १)
अक़्ल की मुलाक़ात ... -)
थार की अँगूठी ... =)
सूरजमुखी ... ।=)
आसमानी लाश ... =)
चोर की तीर्थ-यात्रा ... ।)
आशिक़ की कमबख़्ती ... =)
सूर्यकुमार सम्भव ... ।)
भयानक विपत्ति ... =)
श्रीदेवी ... =)
भीषण सन्देह ... ॥)
माधवी ... =)
पिशाच पति ... ॥)
अद्भुत हत्याकारी ... ≡)
कविता-कुसुम ... ।)
बगुला भगत ... ॥)
बिलाई मौसी ... ॥)
सियार पाँड़े ... ॥)
पृथ्वीराज ... १॥)
शिवाजी ... १॥)
राजर्षि ध्रुव ... ॥=)
सती पद्मिनी ... ॥=)
शर्मिष्ठा ... ॥=)
मनीषी चाणक्य ... १॥)
अर्जुन ... ॥=)
चक्रवर्ती बप्पाराव ... ॥=)
वेश्यागमन ... २)
नारी-विज्ञान ... २)
जनन-विज्ञान ... ३)
गृहिणी-भूषण ... ॥।=)
भारतीय नीति-कथा ... ॥।)
दम्पति शिक्षक ... ॥)
नाट्यकला दर्शन ... ॥।-)
शाही डाकू ... १॥।)
शाही जादूगरनी ... १॥)
शाही लकड़हारा ... २)
शाही चोर ... ।)
गृहधर्म ... ॥।)
बालराम कथा ... ॥।)
माता और पुत्र ... १॥=)
जातीय कविता ... १॥)
भागवन्ती २),२॥)
अनोखा जासूस ... २)
सुप्रभात ... १॥)
प्राचीन हिन्दू माताएँ ... १)
महाभारत ... १॥)

विधवाश्रम ... १॥)
चालाक बिल्ली ... =)
मुसाफ़िर की तड़प ... ।-)
यूरोपीय सभ्यता का दिवाला ।=)
अमृत में विष ... ।=)
मुसाफ़िर पुष्पाञ्जलि ... ।)
नया ... ... ।-)
मानवती ... ।-)
धर्म-अधर्म युद्ध ... ॥।)
नवीन भारत ... ॥।)
श्रीकृष्ण-सुदामा ... ।=)
ग़रीब हिन्दुस्तान ... १॥)
भारतीय सभ्यता ... १)
हरफ़नमौला ... १)
हरद्वार का इतिहास ... ।=)
बोल्शेविज़्म ... १।=)
मुसाफ़िर भजनावली ... ।≡)
असहयोग दर्शन ... १॥)
चेतावनी सङ्कीर्तन ... ।)
जन्मबधैया सङ्कीर्तन ... ।)
श्रीसतवानी सङ्कीर्तन ... ।=)
महात्मा गाँधी ... ≡)
गँवार मसला ... =)॥
सेवाश्रम ... २॥)
महात्मा विदुर ... १)
महामाया ... ॥=)
शकुन्तला ... १=)
कृष्णाकुमारी ... ।=)
क्षात्रधर्म ... -)
बलिदान ... ≡)
भारतीय देश ... ॥)
चित्रशाला ... ॥।)
दम्पति सुहृद ... १॥)
रानी जयमती ... ॥)
तपस्वी अरविन्द के पत्र ... ।)
सुभद्रा ... ... ॥)
हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास ।=)
ग्रीस का इतिहास ... १=)
श्रीबद्री-केदार यात्रा ... ।)
नवयुवको स्वाधीन बनो... ॥)
असहयोग का इतिहास ... ॥।)
सफलता की कुञ्जी ... ।)
पाथेयिका ... १)
रोम का इतिहास ... ॥।)
अपना सुधार ... ॥)
महादेव गोविन्द रानाडे... ॥।)
दिल्ली अथवा इन्द्रप्रस्थ ... ॥)
गाँधी-दर्शन ... १)
बिखरा फूल ... १॥)
प्रेम ... ... ।=)
इटली की स्वाधीनता ... ॥)
गाँधी जी कौन हैं ? ... ।-)
फ़्रान्स की राज्य-क्रान्ति का
इतिहास ... १=)
आकाश की बातें ... ≡)
जगमगाते हीरे ... १)
मनुष्य-जीवनकी उपयोगिता ॥=)
भारत के दस रत्न ... ।-)
वीरों की सच्ची कहानियाँ ॥।)
आहुतियाँ ... ।-)
वीर राजपूत ... १)

गृत्समद ऋग्वेद के दूसरे मण्डल के ऋषि हैं। ये भी अङ्गिरस की शाखा के बताए जाते हैं। परन्तु पीछे से भृगुवंश में सम्मिलित हो गए थे। इस घटना की एक कथा भी महाभारत में बयान कर दी गई है। वायुपुराण और विष्णुपुराण में भी इस घटना का उल्लेख है। विष्णुपुराण (४।८) में भी स्पष्ट लिखा है कि गृत्समद का पुत्र सैनिक हुआ, जिससे चारों वर्णों की उत्पत्ति हुई है।

कण्व और अत्रि ऋग्वेद के आठवें मण्डल के ऋषि हैं। विष्णुपुराण (४।१९) और भागवत (९।२०) में इन्हें पुरु की सन्तति बताया गया है—जो क्षत्रिय थे। पर फिर भी कण्व के वंशधर ब्राह्मण माने जाते हैं, विष्णुपुराण (४।१९) में लिखा है कि अजमीढ से कण्व और उससे मेधातिथि उत्पन्न हुआ, जिनके वंश में कन्वनए ब्राह्मण उत्पन्न हुए!

अत्रि का, जो ५ वें मण्डल के ऋषि हैं, विष्णुपुराण (४।६) में पुरुरवा का दादा कहा जाता है, जो प्रसिद्ध क्षत्रिय थे।

इन ऋषियों का यह परिचय जिन ग्रन्थों से दिया जा रहा है, वे निस्सन्देह उन वेदों से, जिनकी मण्डलों के वे ऋषि या बनाने वाले थे, कई हज़ार वर्ष बाद बने हैं। परन्तु और कोई उपाय उनके परिचय का है ही नहीं। इस परिचय से यह हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि उक्त ऋषियों के काल में जाति-भेद तो था ही नहीं। वैदिक काल के इतने पीछे ये पौराणिक लोग उस काल के यथार्थ जीवन को नहीं समझे। न उन कथाओं का असली तथ्य ही उन्होंने समझा। पर वे अपनी पुरातन भक्ति के कारण उनका मटियामेट भी न कर सके—कथाएँ तो रखनी ही पड़ीं। पर वे यह सोच भी नहीं सकते थे कि पुरोहित और योद्धा एक ही कुल में हो सकते हैं। या योद्धा भी पुरोहित और पुरोहित भी योद्धा हो सकता है। परन्तु मत्स्यपुराण में ९१ ऐसे ऋषियों की सूचना दी गई है जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य स्वीकार किए गए हैं (अध्याय १३२)। इससे क्या यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि वह काल जाति-भेद से रहित था और वशिष्ठ, विश्वामित्र, अङ्गिरा और कण्व के वंश में से चाहे जो ब्राह्मण और क्षत्रिय हो सकते थे। यह स्वाभाविक भी है कि जिन ऋषियों ने पूर्व-काल में वेदों की ऋचाएँ भी पढ़ी हों, उनकी सन्तानों को दस्युओं से युद्ध करने पड़े हों। ऋग्वेद के ऋषिगण तो सूक्त रचना करते थे, शत्रुओं से युद्ध भी करते थे और पशु भी पालते थे—पर वे न ब्राह्मण थे, न क्षत्रिय और न वैश्य ही। इसका एक प्रबल प्रमाण तो आज यही है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों में एक ही गोत्र प्रायः पाए जाते हैं—और जिसका झूठा उत्तर यह दिया जाता है कि ब्राह्मणेतर-जनों को गुरु ने गोत्र दिया था।

वैदिक काल की समाप्ति पर उपनिषद्-काल या ब्राह्मण काल आता है और वेद को अध्यात्म रीति से अध्ययन करने वाले क्षत्रियों और उन्हें कर्म-काण्ड के ढङ्ग पर पढ़ने वाले ब्राह्मणों की स्पष्ट दो शाखाएँ हमको देखने को मिल जाती हैं।

यह वह काल है कि जब गङ्गा-जमुना की घाटियों तक आर्यों ने विस्तार कर लिया था और उन्हें उपजाऊ और रमणीक बना कर कई बड़े-बड़े राज्य बना लिए थे। दर्शन, विज्ञान, शिल्प की उन्नति कर ली थी। इस समय पुत्र लोग पिता का व्यवसाय करने लगे थे, और वर्णों का पृथक्करण हो गया था। धार्मिक रीतियों का आडम्बर भी बढ़ गया था। और क्षत्रियगण अनेकों यज्ञों को आडम्बर से कराने की रुचि रखते थे, इसलिए ब्राह्मण लोग धीरे-धीरे पृथक सङ्गठित होते गए और वे अपना जीवन उन्हीं धर्म-कृत्यों के सीखने में व्यतीत करते गए। और अन्ततः यह समझा जाने लगा कि वे ही परम्परा के लिए उन पवित्र धर्म-क्रियाओं के करने के पात्र हैं और क्षत्रिय केवल युद्ध-कला के अधिकारी हैं। विवाह-मर्यादा की फिर श्रेणियाँ होने लगीं। पर ब्राह्मण अन्य वर्णों से भी कन्या ले लेते थे। उधर क्षत्रिय भर मनुष्यों के नायक और रक्षक समझे जाने लगे। और उनकी राजकन्याएँ भी अपने ही समव्यवसायियों में जाने लगीं। इस प्रकार ब्राह्मण और क्षत्रिय उल्लङ्घनीय नियमों द्वारा जुदे हो गए। यहाँ तक कि अति दरिद्र ब्राह्मण की कन्या भी अति धनी वैश्य को नहीं ब्याही जा सकती थी।

वायुपुराण में लिखा है कि सतयुग में जाति-भेद नहीं था, इसके बाद ब्रह्मा ने मनुष्यों के कार्य के अनुसार उनमें भेद किया। और पुराणों में भी ऐसे ही वर्णन पाए जाते हैं। रामायण के उत्तरकाण्ड में भी बताया गया है कि सतयुग में केवल तपस्वीजन होते थे। त्रेता में क्षत्रिय पैदा हुए और इसके बाद आधुनिक चार वर्ण बने।

महाभारत के शान्ति-पर्व (अ० १८८ के) में लिखा है—

"लाल अङ्ग वाले द्विज लोग जो सुख-भोग में आसक्त थे, क्रोधी और साहसी थे। यज्ञादि क्रियाओं को भूल गए थे, वे क्षत्रिय वर्ण हो गए। पीत रङ्ग वाले, जो गौ चराते और खेती करते थे, और अपनी धार्मिक क्रियाओं को नहीं करते थे वैश्य वर्ण में हो गए। काले द्विज लोग, जो अपवित्र, झूठे, दुष्ट और लालची थे और जो हर प्रकार के काम करके पेट भरते थे, शूद्र हो गए। इस प्रकार कर्मों से वर्ण-विभाग हुए।"

यह हम ऊपर बता आए हैं कि प्रथम चार वर्णों का विभक्तीकरण उस समय हुआ जब ब्राह्मण-ग्रन्थों का और उपनिषदों का निर्माण हो गया था और आर्य लोग गङ्गा की घाटी तक उतर आए थे! परन्तु यद्यपि उनके गुण कर्म पृथक हो गए थे, पर वह एक स्वतन्त्र जाति के स्वरूप में तब भी संयुक्त थे। अर्थात् उनके रोटी-बेटी के सम्बन्ध बराबर जारी थे। और मनुस्मृति के काल तक यह व्यवस्था रह गई थी कि उच्च वर्ण के पुरुष नीच वर्ण की कन्या ले लेते थे और रिश्तेदारियाँ हो जाती थीं।

यद्यपि क्षत्रियों और ब्राह्मणों के बढ़े-चढ़े वर्णन इस काल के ग्रन्थों में मिलते हैं और इनकी श्रेष्ठता की एक-एक से बढ़ कर डींग हाँकी गई है, परन्तु ब्राह्मण और क्षत्रिय बहुत ही कम, चुने हुए श्रेष्ठ पुरुष बन सके थे। शेष प्रजा में ज्यों-ज्यों राजव्यवस्था, समानता और सामाजिकता पैदा होती गई—एक तीसरे वर्ण में परिणत हो गई और यह तीसरा वर्ण वैश्य था, जो वास्तव में विश्व का विकृत रूप था—और जो वास्तव में साधारण प्रजा के अर्थ में ही आया था। क्योंकि मध्यम वर्ग के लोग, जो न पुरोहित हो सकते थे और न योद्धा, नाना प्रकार के वणिज-व्यापार तथा उद्योग में लग गए थे—उनका वर्ण वैश्य हुआ। इन्हीं तीनों की सङ्गठन शक्ति आर्य जाति के नाम से प्रख्यात रही। शूद्रों को केवल नाम मात्र को उन्होंने मिलाया—वास्तव में वे आर्यों के सभी सत्वों से हीन थे।

इस समय की जाति-व्यवस्था और पुरानी जाति-व्यवस्था में यही अन्तर पड़ गया है कि पुराने समय में जाति ने ब्राह्मणों को कुछ और तथा क्षत्रियों को कुछ विशेष अधिकार दिया था। पर ब्राह्मण, क्षत्री और साधारण लोग मिलकर अपने को एक ही जाति वाला समझते, एक ही धर्म की शिक्षा पाते थे। उनका साहित्य और कहावतें भी एक ही थीं। सब मिल कर एक साथ खाते-पीते, बेटी व्यवहार करते थे। परन्तु आजकल के जाति-सम्प्रदाय के भेदों ने उसे इस क़दर छिन्न-भिन्न कर दिया है कि शादी-व्यवहार की समानता तो दूर रही, हाथ का छुआ पानी और अन्न भी खाना अधर्म की बात समझी जाती है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐसे वाक्य मिलते हैं, जिनसे जान पड़ता है कि पहिले समय में जाति-भेद इतना कड़ा न था। ऐतरेय ब्राह्मण (६-२९) को देखिए :—

"जब कोई क्षत्रिय किसी यज्ञ में किसी ब्राह्मण का भाग खा लेता है तो उसकी सन्तान ब्राह्मण गुण वाली हो जाती है, जो दान लेने में तत्पर, सोम की प्यासी, और भोजन की भूखी होती है और अपनी इच्छा के अनुसार सब जगह घूमा करती है। और दूसरी व तीसरी पीढ़ी में वह ब्राह्मण हो जाती है। जब वह वैश्य का भाग खा लेता है तो उसकी सन्तान वैश्य गुण वाली होगी, जो दूसरे राजा को कर देगी और दूसरी व तीसरी पीढ़ी में वैश्य हो जाएगी। जब वह शूद्र का भाग खा लेता है तो उसकी सन्तान शूद्र गुण वाली हो जाती है, उन्हें उक्त तीनों वर्णों की सेवा करना होगी। और वे अपने मालिकों की इच्छानुसार निकाल दिए जावेंगे तथा पीटे जावेंगे। और दूसरी व तीसरी पीढ़ी में शूद्र हो जावेंगे।"

पाठक देखें कि परस्पर के अन्न खाने की परिपाटी को किस ढङ्ग से रोका गया है।

(शेष अगले अङ्क में देखिए)

* * *

केसर की क्यारी

क्यों चुराते हो देख कर आँखें,
कर चुकीं मेरे दिल में घर आँखें।
न गई ताक-झाँक की आदत,
लिए फिरती हैं दर बन्दर आँखें।
"दाग़" आँखें निकालते हैं वह,
उनको दे दो निकाल कर आँखें
—महाकवि "दाग़"

* * *

कुछ दिल की सुनाओ कुछ जिगर की—
बैठो तो कहूँ इधर-उधर की।
क्यों ज़ुल्फ़ छुएँ सिड़ी नहीं हम—
ले कौन बला पराए सर की!
दामन को ज़रा बचाए रहना,
दुनिया नहीं, गर्द है सफ़र की।
—"शौक़" लखनवी

* * *

दिल कहाँ हर किसी से मिलता है,
अच्छे ही आदमी से मिलता है।
जिस तरह आप मुझसे मिलते हैं,
यूँ भी कोई किसी से मिलता है?
दिल मिलाता है ख़ाक में सब को,
कौन अपनी ख़ुशी में मिलता है?
—"नूह" नारवी

* * *

बस हसीं को जा पा गईं आँखें,
क्या तमाशा दिखा गईं आँखें,
शोख़ नज़रों पे दिल मिटा अपना,
आँखों-आँखों में खा गईं आँखें!
लाख पर्दों में वह छुपे जाकर,
लेकिन इस पर भी पा गईं आँखें।
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

होती है देखने के लिए आँख में निगाह।
देखो तुम्हारी आँख है, मेरी निगाह में!
हम दूसरे को देख नहीं सकते उनके पास!
क्या आगया है फ़र्क़ हमारी निगाह में!!
—"दाग़" देहलवी

* * *

क्या ख़ुशी से हम आह करते हैं?
क्यों वह ऐसी निगाह करते हैं॥
अब अपने दिल की अक़ीदत पे रहम आता है।
यह देखता हूँ कि वह आपकी निगाह नहीं॥
—"अकबर" इलाहाबादी

आगाह कुछ तो आपका दिल भी हो चाह से।
मेरी नज़र को देखिए, मेरी निगाह से॥
मेरा भी हाल है सिफ़ते अक्से आइना।
मैं उनको देखता हूँ, उन्हीं की निगाह से॥
ग़म सैकड़ों मिलें तो मिलें, इसका ग़म नहीं!
लड़ती रहे निगाह, किसी की निगाह से॥
रुसवा हुआ, ज़लील हुआ, मैं बुरा हुआ!
अच्छों को देख-देख कर अच्छी निगाह से!!
—"नूह" नारवी

* * *

अपने पराए होगए, उलफ़त की राह में।
दुनिया बदल गई है, हमारी निगाह में॥
बैठा हूँ चुप लगाय, मुहब्बत की राह में।
तस्वीर उनकी फिरती है, मेरी निगाह में॥
आईना देखते हो जो तन-तन के बार-बार
देखो समा न जाओ ख़ुद अपनी निगाह में!!
तुम क्या समा गए हो, कि हमने समझ लिया।
दुनिया समा गई है, हमारी निगाह में॥
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

इस अदा से वह जफ़ा करते हैं,
कोई जाने कि वफ़ा करते हैं!
यह बताता नहीं कोई मुझको,
दिल जो आता है तो क्या करते हैं?
उसने एहसान जता कर यह कहा—
आप किस मुँह से गिला करते हैं?
—महाकवि "दाग़"

* * *

आपसे बेहद मुहब्बत है मुझे,
आप क्यों चुप हैं यह हैरत है मुझे।
दे दिया मैंने बिला शर्त उनको दिल
मिल रहेगी कुछ न कुछ क़ीमत मुझे।
बिरहमन से मैंने कर ली दोस्ती,
बुत भी अब कहने लगे हज़रत मुझे
—महाकवि "अकबर"

* * *

मैं किसी को देखते ही मर गया,
कुछ न करने पर भी सब कुछ कर गया!
हसरत आती है दिले-नाकाम पर,
आरज़ू की आरज़ू में मर गया!
कौन सी है यह बड़ी हैरत की बात,
मार डाला आपने, मैं मर गया!
—"नूह" नारवी

सामने तेरे हम जो रोते हैं,
बीज उलफ़त का दिल में बोते हैं!
रोऊँ भी मैं तो रो नहीं सकता।
मेरे आँसू मुझे डुबोते हैं!
बाद मरने के मेरी तुरबत पर
आप क्या याद करके रोते हैं?
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

न आया है, न आए उनके वादे का यक़ीं बरसों,
युहीं है आजकल, परसों; मगर मिलते नहीं बरसों!
यहीं रहना, यहीं सहना, यहीं मरना, यहीं भरना,
यही दर है, यही सर है, गुज़ारेंगे यहीं बरसों!!
—महाकवि "दाग़"

* * *

दोस्त मरने पे मेरे दादे-वफ़ा देते हैं,
हाय किस वक़्त मुहब्बत का सिला देते हैं!
दुशमनों से भी मुझे तर्के वफ़ा मुशकिल है,
दोस्त बन कर मुझे कमबख़्त दग़ा देते हैं।
—"चकबस्त" लखनवी

* * *

ए जाँ शबे फ़ुरक़त में मैं सो ही नहीं सकता,
तुझ बिन मुझे नींद आए, यह हो ही नहीं सकता!
ख़ाके-क़दम उसने मेरी आँखों से लगा दी,
अब और मुसीबत है कि रो ही नहीं सकता!!
—महाकवि "अकबर"

* * *

यह हो कि मुझसे न मिलने की कुछ सज़ा मिल जाय,
कहीं अँधेरे उजाले वह, ए ख़ुदा मिल जाय!
दिल उसकी राह में खोया है, तो मैं कहता हूँ,
ख़ुदा करे वह उसी को, कहीं पड़ा मिल जाय!
—"शौक़" लखनवी

* * *

यह समझते हैं, यह सुनते हैं, यह हम देखते हैं;
देखता है जो उन्हें, वह उसे कम देखते हैं!
ग़ौर से देखते हैं आप हमारे दिल को,
आपके देखने को ग़ौर से हम देखते हैं
—"नूह" नारवी

* * *

उगल के ख़ून दिले दाग़ दार देख लिया,
ख़िज़ाँ में हमने यह रङ्गे बहार देख लिया!
फ़लक दिखा के वह परदे में बैठ जाते थे,
हज़ार बार छुपे, एक बार देख लिया।
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

"हिन्दुस्तान-साम्यवादी प्रजातन्त्र-सेना" के कार्य

सॉण्डर्स-हत्याकाण्ड और एसेम्बली बमकाण्ड का रहस्योद्घाटन

लाहौर षड्यन्त्र केस का फ़ैसला

जब यह मुक़दमा आरम्भ हुआ था तो इसमें कुल मिला कर २४ अभियुक्त थे। इनमें से भगवानदास को भुसावल षड्यन्त्र केस में सज़ा हो चुकी है। पाँच अभियुक्त चन्द्रशेखर आज़ाद उर्फ़ पण्डित जी, कैलाशपति उर्फ़ कालीचरण, भगवतीचरण, यशपाल और सतगुरुदयाल पकड़े नहीं जा सके। शेष अट्ठारह में से तीन आज्ञाराम, सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय और बटुकेश्वरदत्त स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने मुक़दमा शुरू होने पर छोड़ दिए गए। तीन अभियुक्त फ़ैसला होने पर छोड़े गए हैं और बाक़ी बारह को दण्ड दिया गया है, जिसका विवरण 'भविष्य' के दूसरे अङ्क में प्रकाशित हो चुका है।

एप्रूवर

इस मुक़दमे में सात व्यक्ति एप्रूवर थे। इनमें से रामसरनदास और ब्रह्मदत्त ने बाद में अपने बयान वापस ले लिए। शेष पाँच एप्रूवर फनीन्द्रनाथ घोष, ललितकुमार मुकर्जी, मनमोहन बनर्जी, जयगोपाल और हंसराज बोहरा थे। फनीन्द्रनाथ घोष और मनमोहन बनर्जी ने विशेषकर बिहार और कलकत्ता की, ललितकुमार मुकर्जी ने इलाहाबाद और आगरा की, और जयगोपाल तथा हंसराज ने पञ्जाब की षड्यन्त्र सम्बन्धी कार्रवाइयों का वर्णन किया।

इनके सिवाय प्रेमदत्त, महावीरसिंह और गयाप्रसाद ने अदालत के सामने अपना दोष स्वीकार करके बयान दिया। गयाप्रसाद ने अपने को निर्दोष सिद्ध करने की चेष्टा की।

क्रान्तिकारी दल की वृद्धि

एप्रूवर फनीन्द्रनाथ के, जो बेतिया का निवासी है, बयान से मालूम होता है कि वह क्रान्तिकारी आन्दोलन में सन् १९१६ में सम्मिलित हुआ था। वह अनुशीलन समिति नाम की बङ्गाल की गुप्त सभा का मेम्बर था। १९१८ में उसे एक साल के लिए नज़रबन्द किया गया। १९१६ में उसकी पहिचान मनमोहन बनर्जी से हुई और उसके साथ वह तीन वर्ष तक बिहार में क्रान्तिकारी दल की स्थापना करने की चेष्टा करने लगा। १९२५ में उसने हिन्दुस्तानी सेवा-दल की स्थापना की, जिसका उद्देश्य राजनीतिक काम करना था।

काकोरी केस

१९२६ के आरम्भ में वह बनारस गया और संयुक्त प्रान्तीय क्रान्तिकारी दल के कुछ मेम्बरों से मिला। उस समय इस दल के कितने ही सदस्य काकोरी डकैती केस में पकड़े गए थे और उसकी हालत कमज़ोर थी। फनीन्द्रनाथ इलाहाबाद में शचीन्द्रनाथ सान्याल के भाई जतीन्द्रनाथ सान्याल से मिला और सन् १९२७ में उसे संयुक्त प्रान्तीय दल से कुछ रिवॉल्वर मिलीं। इसी वर्ष उसने कमलनाथ तिवारी को अपने दल का सदस्य बनाया।

बनारस में हत्या की चेष्टा

सन् १९२७ के अन्तिम भाग में जतीन्द्रनाथ सान्याल और विजयकुमार सिन्हा ने शिव वर्मा को बेतिया इसलिए भेजा कि वह फनीन्द्रनाथ से एक रिवॉल्वर माँग लावे। फनीन्द्रनाथ ख़ुद उसको लेकर बनारस आया और फिर वहीं १३ फ़रवरी १९२८ को सी० आई० डी० विभाग के राय बहादुर जे० एन० बनर्जी पर गोली चलाने के काम में लाई गई।

पञ्जाब

इधर पञ्जाब में सुखदेव ने सन् १९२६ में क्रान्तिकारी दल का सङ्गठन करना आरम्भ किया। उसका हेड-क्वार्टर लाहौर में था। उस समय एप्रूवर जयगोपाल नेशनल स्कूल का विद्यार्थी था। उसने अपने यहाँ के एक मास्टर यशपाल के मार्फ़त सुखदेव से जान-पहिचान कर ली और नवम्बर १९२६ में वह उसकी पार्टी का मेम्बर बन गया। उसने स्कूल की लायब्रेरी से स्फोटक पदार्थ बनाने की एक अङ्गरेज़ी किताब, दो थर्मामीटर, दो बैटरी और कुछ बम बनाने का मसाला चुरा कर सुखदेव को दिया। सुखदेव का दूसरा साथी हंसराज बोहरा था, जो उसका रिश्तेदार भी था।

पीला पर्चा

मेम्बर बनाते समय सुखदेव ने हंसराज को एक पीला पर्चा दिखलाया जिसमें उसकी पार्टी का कार्यक्रम और उद्देश्य बतलाए गए थे। इस संस्था का नाम उस समय 'हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र-समिति' था। इन सदस्य बनने वालों को सुखदेव क्रान्तिकारी पुस्तकें पढ़ने को दिया करता था। १९२७ में सुखदेव का परिचय भगतसिंह से भी हो गया।

क़ैदी को छुड़ाने की चेष्टा

३ री मार्च, १९२८ को फ़तेहगढ़ जेल में काकोरी केस के क़ैदियों से भेंट करने के लिए विजयकुमार सिन्हा और शिव वर्मा ने अर्ज़ी दी। इन क़ैदियों में से एक जोगेशचन्द्र चटर्जी था। जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट को शक हुआ कि ये लोग जोगेशचन्द्र के छुड़ाने के लिए कोई षड्यन्त्र रचना चाहते हैं और इसलिए उसने भेंट की आज्ञा न दी। इन दोनों का पीछा पुलिस ने किया और मालूम हुआ कि शिव वर्मा जलालाबाद में गयाप्रसाद नामक एक डॉक्टर के यहाँ गया है। इसके साथ शिव वर्मा की पहिचान थोड़े दिन पहले कानपुर में हुई थी।

छिपने का मुकाम

जुलाई १९२८ में कानपुर में एक मीटिङ्ग हुई, जिसमें गयाप्रसाद, शिव वर्मा और सुखदेव मौजूद थे। इसके फल स्वरूप सुखदेव, गयाप्रसाद को लाहौर ले गया। सुखदेव के कहने से गयाप्रसाद ने फ़ीरोज़पुर में डॉक्टरी की दुकान डॉ० बी० एस० निगम के नाम से खोली। जयगोपाल की गवाही से इस दुकान के खोलने के तीन उद्देश्य थे। पहला यह कि पञ्जाब से अन्य प्रान्तों को जाने वाले या अन्य प्रान्तों से पञ्जाब आने वाले षड्यन्त्रकारी वहाँ ठहर कर अपनी पोशाक आदि बदल सकें। दूसरा यह कि दुकान की मार्फ़त बम बनाने के मसाले ख़रीदे जायँ और तीसरा यह कि अगर कारबार जम जाय तो उससे पार्टी को आर्थिक सहायता भी प्राप्त हो सके।

गुप्त मीटिङ्ग

अगस्त १९२८ में विजयकुमार सिन्हा बेतिया जाकर फनीन्द्रकुमार से मिला। उसने कहा कि उसका इरादा भिन्न-भिन्न प्रान्तों की पार्टियों को मिला कर एक बड़ी पार्टी का सङ्गठन करने का है। उसने यह भी कहा कि इस कार्य के लिए ८ और ९ सितम्बर को दिल्ली में एक गुप्त मीटिङ्ग होने वाली है, इस मीटिङ्ग में पञ्जाब के कार्यकर्ता भगतसिंह और सुखदेव आदि, संयुक्त प्रान्त के शिव वर्मा और चन्द्रशेखर आज़ाद आदि सम्मिलित होंगे। उसने यह भी कहा कि वह अब जतीन्द्रनाथ की अध्यक्षता में काम नहीं करना चाहता, क्योंकि वह बहुत सुस्त आदमी है।

८ सितम्बर को फनीन्द्रनाथ दिल्ली पहुँचा, वहाँ विजयकुमार ने उससे कहा कि मीटिङ्ग कल होगी। ९ तारीख़ को सब सदस्य फ़ीरोज़शाह तुग़लक के क़िले में इकट्ठे हुए। उसमें षड्यन्त्रकारी आन्दोलन का सञ्चालन करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की गई, जिसमें सात मेम्बर थे—भगतसिंह, सुखदेव, विजयकुमार, शिव वर्मा, फनीन्द्रनाथ, कुन्दनलाल और चन्द्रशेखर आज़ाद।

इस मीटिङ्ग में यह भी निश्चित किया गया कि बङ्गाल की क्रान्तिकारी पार्टी से सम्बन्ध न रक्खा जाय, क्योंकि वह मार-काट के विरुद्ध है। सुखदेव पञ्जाब का इञ्चार्ज बनाया गया, शिव वर्मा संयुक्त प्रान्त का और फनीन्द्रनाथ बिहार का। चन्द्रशेखर सैनिक-विभाग का मुखिया बनाया गया और कुन्दनलाल को, जो झाँसी में रहता था, सेण्ट्रल ऑफ़िस का प्रबन्ध सौंपा गया। भगतसिंह और विजयकुमार विभिन्न प्रान्तों में सम्बन्ध स्थापित रखने के लिए नियुक्त किए गए। निश्चय हुआ कि डकैती, हत्या आदि के कार्य बिना सेण्ट्रल कमेटी की मञ्ज़ूरी के नहीं होंगे, पार्टी के हथियार और फ़ण्ड भी सेण्ट्रल कमेटी के अधिकार में रहेंगे।

क्रान्तिकारी योजनाएँ

इस मीटिङ्ग में काकोरी केस के क़ैदी जोगेशचन्द्र चटर्जी को, जो आगरा जेल में था, छुड़ाने का निश्चय किया गया और उसके लिए प्रबन्ध करने का भार विजयकुमार को सौंपा गया। शचीन्द्रनाथ सान्याल को छुड़ाने का प्रस्ताव भी किया गया, पर इस सम्बन्ध में कोई निश्चित-चेष्टा नहीं की गई। साइमन कमीशन के सदस्यों के विरुद्ध कार्रवाई करने का विचार भी किया गया और इसके लिए बङ्गाल से बम बनाने वालों को बुलाना सोचा गया। एक प्रस्ताव यह किया गया कि काकोरी केस के एप्रूवरों को मार डाला जाय। डाका डालने के लिए किसी जगह को ढूँढ़ने का प्रस्ताव किया गया और अन्त में बिहार में यह कार्य करना पक्का ठहरा।

बक्स में पिस्तौलें

१७ नवम्बर, १९२८ को लाला लाजपतराय का देहान्त हुआ। इसके कुछ समय पश्चात् पण्डित जी, (चन्द्रशेखर आज़ाद) एक बक्स लेकर लाहौर आया, जिसमें एक मौज़र पिस्तौल और चार रिवॉल्वरें थीं। उसी दिन सेण्ट्रल कमेटी के और भी कई मेम्बर आए।

४ दिसम्बर को पञ्जाब नेशनल बैङ्क पर डाका डालने का उद्योग किया गया। निश्चय हुआ कि भगतसिंह और महावीरसिंह टैक्सी गाड़ी लेकर शाम के तीन बजे बैङ्क पर पहुँचेंगे। कुछ मेम्बर चौकीदार और पहरे वालों को पकड़ लेंगे और जयगोपाल तथा किशोरीलाल ख़ज़ान्ची से रुपया छीन लेंगे। नियत समय पर लोग तैयार थे, पर भगतसिंह और महावीरसिंह जिस टैक्सी में बैठे वह रास्ते में रुक गई और महावीरसिंह उसे न चला सका। फल यह हुआ कि सारी योजना विफल हो गई।

सारण्डर्स की हत्या

९ या १० दिसम्बर को "मोज़ङ्ग हाउस" (जो क्रान्तिकारियों का अड्डा कहा जाता है) में एक मीटिङ्ग हुई, जिसमें लाहौर के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० स्कॉट को मारने की सलाह की गई, क्योंकि क्रान्तिकारी दल की सम्मति में उसीने लाला लाजपतराय को चोट पहुँचाई थी। जयगोपाल को मि० स्कॉट की गति-विधि का निरीक्षण करने को नियुक्त किया गया और इसके लिए वह कई दिन तक लगातार पुलिस के ऑफ़िस के अहाते के आस-पास चक्कर लगाता रहा। चन्द्रशेखर ने १७ दिसम्बर का दिन हत्या के लिए मुक़र्रर किया और उस दिन के दो बजे इस सम्बन्ध में फिर एक मीटिङ्ग हुई, जिसमें चन्द्रशेखर के अलावा भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु और जयगोपाल उपस्थित थे। इसके दो दिन पहले १५ दिसम्बर को भगतसिंह ने जयगोपाल और हंसराज को कुछ गुलाबी पोस्टर दिखलाए थे, जिनमें लिखा था—'स्कॉट मर गया।'

१७ तारीख़ को सुबह के दस बजे जयगोपाल पुलिस के ऑफ़िस की तरफ़ गया और उसने एक अङ्गरेज़ पुलिस अफ़सर को मोटर साइकिल पर भीतर जाते देखा था। उसने उसी को स्कॉट समझा और इसकी ख़बर चन्द्रशेखर को दी। दो बजे दोपहर को मीटिङ्ग में हथियार बाँट दिए गए। चन्द्रशेखर ने मौज़र पिस्तौल, भगतसिंह ने ऑटोमेटिक पिस्तौल और राजगुरु ने रिवॉल्वर लिया। यही तीनों व्यक्ति हत्या करने के लिए नियुक्त किए गए थे।

क़रीब ४ बजे शाम को मि० सॉण्डर्स मोटर साइकिल पर बाहर निकला। उसके साथ ही हेड कॉन्स्टेबिल चननसिंह था। जयगोपाल के इशारा करने पर राजगुरु सॉण्डर्स की तरफ़ बढ़ा और जैसे ही वह नज़दीक आया उसने गोली चलाई। सॉण्डर्स घायल होकर मोटर साइकिल के साथ ही नीचे गिर गया और उसकी एक टाँग दब गई। इतने में भगतसिंह भी दौड़ कर वहाँ पहुँचा और उसने कई गोलियाँ चलाईं। इसके बाद ये दोनों, जयगोपाल के साथ भागे और चननसिंह और ट्रैफ़िक इन्स्पेक्टर मि० फ़र्न उनको पकड़ने को दौड़े। भगतसिंह ने पीछे मुड़ कर गोली चलाई और मि० फ़र्न० बचने के लिए नीचे गिर पड़े। चननसिंह डी० ए० वी० कॉलेज के अहाते तक बराबर पीछा करता गया और वहाँ सम्भवतः चन्द्रशेखर ने उसे मौज़र पिस्तौल से मार दिया।

बम बनाए गए

जनवरी १९२७ में भगतसिंह और फनीन्द्रनाथ बम बनाना सीखने के लिए कलकत्ता गए। जतीन्द्रनाथ दास उनको कमलनाथ तिवारी के मकान में इस विषय की शिक्षा देता था। उन लोगों ने कितनी ही दुकानों से बम बनाने का बहुत सा मसाला भी ख़रीदा। १४ फ़रवरी को ये लोग आगरा आकर हींग की मण्डी में एक मकान में बम बनाने लगे। ये बम गणेशचन्द्र चटर्जी को छुड़ाने के उद्देश्य से बनाए गए थे, जो उन्हीं दिनों आगरे की जेल से लखनऊ भेजा जाने वाला था। १५ तारीख़ को जतीन्द्रनाथ दास ने एक बम बनाया। १६ तारीख़ की शाम को जोगेशचन्द्र चटर्जी आगरा से लखनऊ भेज दिया गया। भगतसिंह, विजयकुमार, चन्द्रशेखर आदि उसको हवालात से छुड़ाने के लिए कानपुर पहुँचे। पर वहाँ उनको पता लगा कि वे हवालात में से उसे नहीं छुड़ा सकते और इसलिए वे लौट आए।

एसेम्बली बम-काण्ड

क्रान्तिकारी दल ने साइमन कमीशन पर बम फेंकने का निश्चय किया था। पर बाद में ख़र्च की अधिकता के कारण यह स्कीम छोड़ दी गई और तय हुआ कि भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त एसेम्बिली में बम फेंकें। चन्द्रशेखर, जयगोपाल और राजगुरु उनको वहाँ से बचा कर लाने को नियुक्त किए गए थे। पर वे इसमें सफल न हो सके और भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ८ अप्रैल को बम फेंकने के बाद पकड़ लिए गए।

क्रान्तिकारियों की गिरफ़्तारी

१५ अप्रैल को जब सुखदेव, किशोरीलाल और जयगोपाल लाहौर में अपने स्थान "काश्मीर बिल्डिङ्ग" में बम बना रहे थे तो पुलिस ने धावा किया और उन तीनों को पकड़ लिया। जयगोपाल ने अपना क़सूर मन्ज़ूर कर लिया और एप्रूवर बन कर षड्यन्त्र का सारा भेद खोल दिया। २ मई को हंसराज वोहरा पकड़ा गया और वह भी एप्रूवर बन गया। १३ मई को सहारनपुर के अड्डे का पता लगा और वहाँ शिव वर्मा तथा जयदेव छः बम, तीन बम के खोल, तीन भरी हुई रिवॉल्वर और बहुत से बम बनाने के मसाले के साथ पकड़े गए। ७ जून को बिहार प्रान्त के मझोलियाँ नामक स्थान में क्रान्तिकारी दल के पूर्व निश्चय के अनुसार मनमोहन बनर्जी और उसके साथियों ने डाका डाला, जिसमें एक आदमी जान से मारा गया।

* * *

लाहौर कॉन्सपिरेसी केस का फ़ैसला, जिसका सारांश ऊपर दिया गया है, फ़ुल्सकेप साइज़ के ४०० पृष्ठों में टाइप से छापा गया है। इसकी कॉपियाँ अख़बार वालों को २२५) रु० में मिल सकती हैं। यह पुस्तकाकार छापा जा रहा है और सम्भवतः तैयार हो गया होगा।

* * *

"मैं अपना बचाव करना नहीं चाहता"

सरदार भगतसिंह का पत्र अपने पिता के नाम

लाहौर कॉन्सपिरेसी-केस के सुप्रसिद्ध अभियुक्त श्री० भगतसिंह ने अपने पिता की अर्ज़ी के सम्बन्ध में, जो स्पेशल-ट्रिब्यूनल को दी गई थी (और जो 'भविष्य' के गताङ्क में पूरी प्रकाशित की गई है), एक पत्र अख़बारों में प्रकाशित कराया है, जो नीचे दिया जाता है। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि यह पत्र स्पेशल ट्रिब्यूनल के फ़ैसले और भगतसिंह को फाँसी की सज़ा मिलने के पहले ही लिखा गया था—

"मैं यह जान कर आश्चर्य-चकित हो गया कि आपने स्पेशल ट्रिब्यूनल के जजों के पास मेरे बचाव के सम्बन्ध में एक अर्ज़ी भेजी है। यह समाचार मेरे लिए एक ऐसी असह्य-चोट के समान है, जिसे मैं शान्तिपूर्वक सहन नहीं कर सकता। इसने मेरे मस्तिष्क की समस्त शान्ति को भङ्ग कर दिया है। मैं यह समझ सकने में असमर्थ हूँ कि आपने इस अवसर पर और इस परिस्थिति में इस प्रकार की अर्ज़ी पेश करना किस तरह उचित समझा। एक पिता की हैसियत से मेरे प्रति आपके जो भाव और ममता होगी, उसका ध्यान रखते हुए भी मैं नहीं समझता कि आपको मुझसे सलाह लिए बिना ही इस प्रकार का कोई कार्य करने का क्या अधिकार था? आप जानते हैं कि राजनीतिक मामलों में मेरे विचार सदैव आप से भिन्न रहे हैं, और मैंने इस बात का विचार छोड़ कर, कि आप मेरे कामों को पसन्द करते हैं या नापसन्द, सदैव स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य किया है।

"सम्भवतः आपको स्मरण होगा कि इस अभियोग के आरम्भ से ही आप मुझे यह समझाने की चेष्टा करते रहे थे कि मुझे यह मुक़दमा गम्भीरतापूर्वक लड़ना चाहिए और अपना अच्छी तरह से बचाव करना चाहिए। साथ ही आपको यह भी याद होगा कि मैंने आपकी बात का सदैव विरोध किया था। मुझे अपने बचाव करने की इच्छा नहीं थी और न मैंने कभी इस विषय में गम्भीरतापूर्वक विचार किया, फिर चाहे मेरा यह काम आन्तिपूर्ण आदर्शवाद समझा जाय और चाहे मेरे पास इसको उचित सिद्ध करने के लिए युक्तियाँ हों; यह प्रश्न सर्वथा पृथक् है और इसे यहाँ उठाना अनावश्यक है।

कर्तव्य-पालन

"आप जानते हैं कि इस अभियोग में हम एक निश्चित नीति का पालन कर रहे हैं। मेरा हर एक काम उस नीति, मेरे सिद्धान्त और प्रोग्राम के अनुकूल होना चाहिए। वर्तमान समय में तो समस्त परिस्थिति ही भिन्न थी, पर यदि परिस्थिति अन्य प्रकार की भी होती, तो भी मैं अपना बचाव कदापि न करता। इस समस्त अभियोग-काल में मेरे सामने सिर्फ़ एक विचार रहा है, और वह यह कि अपने ऊपर गम्भीर आरोपों के होते हुए भी इस मुक़द्दमे की तरफ़ मुझे पूर्णतया उपेक्षा का भाव दिखलाना चाहिए। मेरी सदा से यही सम्मति रही है कि तमाम राजनीतिक कार्यकर्ताओं को अदालतों की क़ानूनी कार्रवाई की तरफ़ सदैव उपेक्षा का भाव रखना चाहिए, कभी उनके विषय में चिन्तित न होना चाहिए, और उनको जो कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाय उसको वीरतापूर्वक सहना चाहिए। वे अपना बचाव कर भी सकते हैं, पर केवल राजनीतिक कारणों से ऐसा करना उचित है, व्यक्तिगत कारणों से नहीं। इस अभियोग में हमारी नीति सदैव इस सिद्धान्त के अनुकूल रही है। हम इस कार्य में सफल हुए या नहीं, इसका निर्णय मैं नहीं कर सकता। हम सदैव निष्काम भाव से अपने कर्तव्य का पालन करते रहे हैं।

"वायसराय ने 'लाहौर कॉन्सपिरेसी केस ऑर्डिनेन्स' के साथ जो बयान प्रकट किया था, उसमें कहा गया है कि हम क़ानून और न्याय दोनों को बेइज़्ज़त करने की चेष्टा कर रहे हैं। वर्तमान परिस्थिति ने हमको एक ऐसा अवसर प्रदान किया कि जिससे हम जनता को दिखला सकते हैं कि क़ानून की बेइज़्ज़ती हम कर रहे हैं या दूसरे लोग ऐसा कर रहे हैं? इस विषय में लोग हम से असहमत हो सकते हैं और सम्भव है कि आप भी उन्हीं में से एक हों। पर इसका यह अर्थ नहीं हो सकता कि आप बिना मुझसे परामर्श किए, इतना ही नहीं, वरन् मुझे किसी प्रकार की इत्तला भी न देकर, ऐसा कोई काम कर सकें। मेरा जीवन कम से कम मेरे लिए इतना अधिक मूल्यवान नहीं है, जैसा कि सम्भवतः आप उसे समझते हों। वह इस लायक़ तो कभी नहीं है कि मैं उसे अपने सिद्धान्तों को बेच कर ख़रीदूँ। मेरे और भी कितने ही साथी ऐसे हैं, जिनका अभियोग मेरे

(शेष मैटर ४० वें पृष्ठ के दूसरे कॉलम में देखिए)

"आपको किसी नौकर की आवश्यकता तो नहीं है, यदि हो तो मैं हाज़िर हूँ।"

"हमें नौकर की आवश्यकता नहीं है, हम अपना सब काम ख़ुद कर लेते हैं।"

"तब तो बड़ी अच्छी बात है, मैं भी ऐसी ही जगह नौकरी करना चाहता हूँ।"

*　*　*

एक मुक़द्दमे में वादी के वकील ने बहस समाप्त करते हुए जज से कहा—इसी तरह का एक मुक़द्दमा अभी हाल ही में एक विख्यात जज ने जिताया है।

जज ने प्रतिवादी के वकील की ओर देख कर पूछा—कहिए, इस पर आप क्या कहते हैं?

प्रतिवादी का वकील बोला—मैं केवल इतना कहता हूँ कि जिस मुक़द्दमे के जीतने की बात मेरे लायक़ दोस्त (वादी के वकील) ने कही है वह मुक़द्दमा हाईकोर्ट में जाकर गिर गया।

वादी के वकील ने अपने मुवक्किल के कान में कहा—ओफ़ ओह! इस झूठ का भी कुछ ठिकाना है, मैंने जिस मुक़द्दमे की बात कही वह बिल्कुल बनावटी थी, ऐसा कोई मुक़द्दमा हुआ ही नहीं।

*　*　*

एक भिखारी एक मकान के द्वार पर खड़ा गा रहा था। मालिक मकान ने उसके कर्कश स्वर से तङ्ग आकर उसे दो पैसे दिए और पूछा—तुम दिन भर में कितना पैदा कर लेते हो।

"यही रुपया डेढ़ रुपया।"

"हैं! रुपया डेढ़ रुपया! और इस गाने की बदौलत!"

"जी नहीं, गाने की बदौलत नहीं, गाना बन्द करके चले जाने की बदौलत।"

*　*　*

एक व्यक्ति शराबख़ाने में गया और बोला—मुझे जल्दी से शराब पिला दो, आज यहाँ झगड़ा होगा।

शराब देकर दूकानदार ने कुछ घबराहट के साथ उससे पूछा—क्यों, झगड़ा होगा?

शराबी बोला—ठहरो अभी बताता हूँ।

यह कह कर उसने आराम से शराब पी। शराब पीने के पश्चात् दूकानदार से बोला—हाँ तुम क्या पूछते थे?

"यहाँ झगड़ा क्यों होगा?"

"इसलिए कि मेरे पास शराब के दाम चुकाने के लिए एक पैसा भी नहीं है।"

*　*　*

एक व्यक्ति एक तालाब के किनारे बैठा मछली मार रहा था। इसी समय एक सज्जन वहाँ पर आकर बोले—कहो कुछ मिला?

"जी हाँ, अभी तक पन्द्रह मछलियाँ पकड़ चुका हूँ।"

"अच्छा! परन्तु तुम्हें यह भी मालूम है कि यह जगह मेरी है, बिना मेरी आज्ञा के तुम यहाँ मछली क्यों पकड़ते हो?"

वह व्यक्ति बोला—तो आपको भी यह मालूम होना चाहिए कि मैं एक परले सिरे का गप्पी आदमी हूँ, अभी तक मैंने एक भी मछली नहीं पकड़ी।

*　*　*

पिता—(पुत्र से) तुम कुछ कमाते क्यों नहीं? मैं जब तुम्हारी उम्र का था तब मैंने एक दूकान में नौकरी की थी और पाँच बरस के अन्दर ही दूकान का मालिक हो गया था।

पुत्र—आजकल ऐसा होना असम्भव है। हिसाब-किताब की बहुत जाँच रक्खी जाती है।

*　*　*

"तुम बसन्तलाल के मित्र हो न?"

"मैं उस नालायक़ का मित्र क्यों हूँ? दो कौड़ी का आदमी है।"

"ऐसा मत कहो। तुम्हें पता नहीं, इधर उसने दो लाख रुपया पैदा किया है।"

"अच्छा! आदमी बड़ा चतुर है और मेरा तो बड़ा पुराना मित्र है।"

*　*　*

(३१ वें पृष्ठ का शेषांश)

बराबर ही सङ्गीन है। हमने एक ही नीति का अवलम्बन करना निश्चित किया है और अब तक उसी पर जमे हुए हैं, और अन्त तक उसी प्रकार जमे रहेंगे, फिर चाहे हमको व्यक्तिगत रूप से इसके लिए कितना भी अधिक मूल्य क्यों न चुकाना पड़े।

"पिता जी, मैं बहुत ही व्याकुल हो गया हूँ। मुझे भय है कि मैं सभ्यता के साधारण नियमों का भी उल्लङ्घन कर रहा हूँ और मेरी भाषा आपके इस कार्य की आलोचना करते हुए कुछ अधिक कठोर हो गई है। मैं साफ़ कहना चाहता हूँ कि मुझे ऐसा अनुभव होता है मानो किसी ने पीछे से छुरी मार दी हो। अगर किसी और व्यक्ति ने ऐसा काम किया होता तो मैं इसे घोर विश्वासघात से कम नहीं समझता। पर आपके लिए मैं यही कह सकता हूँ कि यह आपकी कमज़ोरी है—सबसे ख़राब कमज़ोरी।

"यह ऐसा समय है जब कि मनुष्य—हर एक मनुष्य—की असलियत की परीक्षा होती है। पर पिता जी, मैं स्पष्ट कहूँगा कि आप इसमें अनुत्तीर्ण हुए। मैं जानता हूँ कि आप वास्तव में एक सच्चे देशभक्त हैं। मैं जानता हूँ कि आपने अपने जीवन को भारत की स्वाधीनता के लिए अर्पित कर दिया है। पर आपने इस अवसर पर यह कमज़ोरी क्यों दिखलाई, मैं इसे समझ सकने में असमर्थ हूँ।

"अन्त में मैं आपको, अपने दूसरे दोस्तों को और उन तमाम लोगों को, जो इस मामले में दिलचस्पी रखते हैं, बतला देना चाहता हूँ कि मैंने आपके कार्य को स्वीकृत नहीं किया है! मैं अभी तक किसी तरह का बचाव पेश करने के पक्ष में बिलकुल नहीं हूँ। अगर अदालत ने उस अर्ज़ी को मञ्जूर भी कर लिया होता, जो मेरे कुछ साथी अभियुक्तों ने बचाव पेश करने आदि के सम्बन्ध में दी थी तो भी मैं अपनी तरफ़ से किसी तरह का बचाव नहीं करता। मैंने अपने अनशन के समय मुलाक़ात के सम्बन्ध में ट्रिब्यूनल को जो अर्ज़ी दी उसका ग़लती यह मतलब समझ लिया गया था कि मैं अपना बचाव पेश करना चाहता हूँ। पर वास्तव में मैं कभी किसी प्रकार का बचाव पेश करना नहीं चाहता था। मैं अब भी पूर्ववत् उसी विचार पर दृढ़ हूँ। मेरे दोस्त जो बोरस्टल जेल में बन्द हैं, आपकी इस अर्ज़ी से समझ रहे होंगे कि मैंने उनके साथ विश्वासघात किया। मुझे इसका अवसर भी नहीं मिलेगा कि मैं उनके सामने अपनी स्थिति को स्पष्ट कर सकूँ।

"मेरी आकांक्षा है कि जनता इस पेचीदा मामले की सब बातों से परिचित हो जाय और इसलिए मैं अपने इस पत्र को प्रकाशित करने की प्रार्थना करता हूँ।"

*　*　*

स्वागत

[श्री० शोभाराम जी धेनुसेवक]

स्वागत तेरा! हे स्वतन्त्रता—
के निर्भीक पुजारी!
आ! निर्भय कर्त्तव्य-क्षेत्र में,
बन भारत-हितकारी!!

तुझे सहायक लख कर,
तुझसे निर्बल बल पा जावें!
अत्याचारी त्याग 'पाप-पथ',
सत्पथ पर आ जावें!!

उतर पड़ा जब कार्यक्षेत्र में,
तो मत पीछे हटना!
रक्षित रखना शान, मान पर—
हँसते हो मर मिटना!!

तुझे विदित है, मार्ग कर्म—
का कण्टकपूर्ण गहन है!!
वहाँ विजय है, जहाँ अहिंसक,
बन कर कष्ट सहन है!!

चमके तू राष्ट्रीय गगन में,
भाग्य-सितारा बन कर!
सम्मानित हो बढ़े—
देश का वीर दुलारा बन कर!!

साथ राष्ट्र-सेवा के तुझको,
सामाजिक जीवन में—
लाना है शुचिता, सुन्दरता,
साहस हिन्दूपन में!!

सामाजिक उत्थान बिना,
कब राष्ट्रोद्धार हुआ है?
सामाजिक उन्नति से ही,
उन्नत संसार हुआ है!!

आशामय उज्ज्वल 'भविष्य'—
का तू सन्देश सुना दे।
आलोकित कर, वर्तमान,
का तम-नैराश्य नशा दे!!

गौरव-गरिमा पूर्ण जहाँ का,
युग अतीत अनुपम था।
सदा उदित था भाग्य-भास्कर,
नहीं निराशा-तम था!!

आशामय सुन्दर भविष्य पर—
उसके क्या संशय है?
नहीं रहेगा दलित, हिन्द को,
फिर भी विश्व विजय है॥

खोलेगा जिस दिन "भविष्य" पर,
भारत जीना-मरना!
कठिन न होगा, तुझे—
दासता-तम से उस दिन तरना॥

भारत के उज्ज्वल "भविष्य" है,
तेरा शुभ स्वागत है!
"जीवन की आशा", तुझ पर—
हो तो जीवित भारत है!!

*　*　*

The only Point where Newspapers, Leaders and Individuals agree in Toto

Hindi edition :
Annual Rs. 6/8
Six monthly
Rs. 3/8

The 'CHAND'

Urdu edition :
Annual Rs. 8/-
Six monthly
Rs. 5/-

A magazine which has raised consciousness in India

The Leader :

The February (1929) number of the CHAND fully maintains its reputation for fearless criticism of social injustice and bold advocacy of reform. Its columns are always full of interesting articles poems and stories. Hindi may well be proud of possessing a high class magazine like CHAND.

***

The Amrit Bazar Patrika :

Had there been such magazine, in Bengali, Urdu, Marathi, Telegu, etc., a great service would surely have been rendered.

***

The Bombay Chronicle :

It has justly won a reputation all over India. Lovers of social regeneration in India, especially those who are well-off, can benefit themselves and also do a good turn to this magazine by being subscribers and donors.

***

The Mysore Chronicle :

Few vernacular papers and magazines can boast of such a well-conducted magazine as the CHAND.

***

The Sunday Times :

It is no exaggeration, we believe, to say that the CHAND occupies a foremost place among the journals published in this country.

***

The Indian Daily Telegraph :

It is ably edited and deserves much encouragement.

***

The Tribune :

The magazine is neatly printed on good white paper and in get-up and elegance is all that the most fashionable lady may desire.

***

The Rajasthan :

The CHAND undoubtedly stands high among the existing Hindi monthlies and we heartily congratulate the conductors for their unabated zeal.

***

The Searchlight :

It can unhesitatingly be said that it can take its rank with any high class magazine.

***

The Indian Social Reformer :

We have often noticed in these columns the excellent work done by the Hindi Journal—the CHAND. The CHAND has justified its existence as one of the best Hindi magazines.

The Forward :

The neatness of the paper and its get-up leaves nothing to be desired. It has raised a general consciousness in the Hindi-knowing world.

***

The Patriot :

We commend this journal to the Hindi-reading public with the hope that they will extend their patronage to this useful *journal, which, we are sorry to learn, has been kept up at a considerable pecuniary loss to the promoters of the enterprise.*

***

Individual Opinions

Justice Sir Abdul Qadir, Member Public Service Commission :

I have learnt with great pleasure that you propose to bring out an Urdu edition of your excellent magazine. The CHAND, which has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving the literature of the other. The only difficulty is that of the script, and in bringing out and Urdu edition, you are surmounting that difficulty, and placing the result of your labours within the reach of the Urdu-reading public. I regard Urdu as the common heritage of Hindus and Muslims, and congratulate you on your resolve to serve Urdu as well as Hindi, and wish you success in your laudable enterprise.

***

F. W. Wilson, Esq., Ex-Chief Editor of the "Pioneer"

I am delighted to hear that you are about to bring out an Urdu CHAND. I am told that your main objects are to kindle among the Urdu-reading public a desire for social reform and to spread among them a knowledge of enlightened social criticism. I can conceive of no more useful and beneficial a publication, if these principles are faithfully and unswervingly followed. Again and again the criticism is made against Indian life to-day and the objection raised against further political progress that a large majority of the public are either, because of illiteracy or indifference, unaware of the need for social reform. The greatest vehicle in the education of Public opinion is an enlightened, vigorous, independent and free press. That you realise the need for bringing to bear the influence of modern publicity against the many dead and rotten branches of social custom that are choking the young and vigorous life of a healthy Indian nationality, is obvious by the mere fact that you have undertaken this new venture. I cordially wish you all success.

Pt. Moti Lal Nehru, Ex-President, All India Congress :

I welcome the appearance of the Urdu CHAND. It supplies a real want. I hope it will fulfil the expectations *raised by the excellence of its Hindi parent.* I wish it every success

***

Major D. R. Ranjit Singh, O. B. E., (Kaisar-i-Hind) I. M. S., (Late):

I am conscious of the great good the Hindi CHAND has already done and I am confident its Urdu edition will be able to do the same.

***

Munshi Iswar Saran Saheb, Member Legislative Assembly :

(By Air Mail from London)

I wish this magazine every success. The work of social reform is blessed and thrice blessed are those, who honestly do it. I hope this magazine will advocate the right policy in social matters and if it does, it will have to fight the obscurantists on the one hand and the blind imitators of the west on the other. I trust it will strive for the realisation of the fact that a girl has as much right to education and freedom as has her brother. I sincerely wish it to work for the preservation of the true type of Indian woman-hood. I wish it a long career of usefulness.

***

Prof. M. H. Syed, M. A., Lecturer in Urdu, Allahabad University :

I am glad to learn that an Urdu edition of the CHAND is being issued. I wish this new venture every success. I understand that this monthly is devoted to the cause of social reform in India. In our present state of society there is no cause as laudable as this and I do hope that the CHAND in its Urdu garb will bring light to a large number of people who are still steeped in ignorance and are averse to new ways of life

***

Dr. Sir Tej Bahadur Sapru, M. A., LL. D., Ex-Law Member of the Government of India :

I wish it every success.

***

Mr. M. M. Verma, M. A., Director of Education, Bikaner State writes :

. . . . I need hardly say that I have been following the career of your Journal with keen interest, and I have extremely refreshing outlook of the work which it is sure to accomplish in the most important of phases of Social Reform in India . . . .

Registered No. A—2085

Printed and Published by Mr. R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.